December II 2013

Every Fortnight

मूल्य ♦ दस रुपए

बच्चों

- संत निकोलस से सेंटा क्लॉज तक
- सिखा गये सेंटा
- सचिन की जिंदगी की कुछ बातें
- मेहनत तो मेहनत है
- नकली बहादुरी
- समोसा : उम्र हजार साल, अब तक जवान!

मिलकर मनाएंगे क्रिसमस!

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन

वर्ष- 28 अंक- 11
15-31 दिसम्बर, 2013 पृष्ठ- 68

सफाई

वेटर, एक चाय लाओ...
MENU
यह करी अभी तक साफ नहीं हुई, जो कल मेरे चम्मच से गिरी थी।
आप सही कह रहे हैं सर...
तुम टेबलक्लॉथ रोज साफ नहीं करते क्या?
नहीं सर, यहां बड़ी भीड़ रहती है इसलिए....
यह कप भी गंदा है, लगता है कुछ भी साफ नहीं होता यहां...?
सर, हमारे यहां लांड्री डे शनिवार का तय है...
ग्लास, प्लेट वगैरह सभी शनिवार को धुलते हैं...।
J.B.C

वर्ष- 28 अंक- 11
मार्गशीर्ष शुक्ल-पौष कृष्ण
विक्रम संवत् 2070

दिसम्बर (द्वितीय) 2013, जयपुर

विविध

बालहंस न्यूज़- 26
समोसा- 27
सैर-सपाटा- 28-29
संत निकोलस से सेंटा क्लॉज तक- 30-31
क्यों कहा जाता है 'क्रिसमस'- 33
सचिन की जिंदगी की कुछ जानी-अनजानी बातें- 36-37
बोलें अंग्रेजी- 39
गुदगुदी- 40-41
सामान्य ज्ञान- 42-43
तथ्य निराले- 44
नॉलेज बैंक- 45
बालमंच- 46
सीख-सुहानी- 48
कमाल है/बूझो तो... - 49
अंतर बताओ- 50
आर्ट एंड क्राफ्ट- 51
बिंदु से बिंदु- 52
किड्स क्लब- 54-55
बदसूरत जीव-जंतुओं की छुपी हुई खूबसूरती- 56-57
ढूंढो तो...- 61

कहानियां

सिखा गये सेंटा- 5
मिलकर मनाएंगे क्रिसमस!- 6-7
मां की सहायता- 8-9
सेंटा क्लॉज की टोपी- 10-11
चमत्कारी हैट- 12-13

प्रतियोगिताएं

प्रतियोगिता परिणाम- 58
ज्ञान प्रतियोगिता- 59
रंग दे प्रतियोगिता- 60

चित्रकथा

नकली बहादुरी- 14-17
मेहनत तो मेहनत है- 22-25
ई-मैन- 62-65

संपादक
आनन्द प्रकाश जोशी

उप संपादक
मनीष कुमार चौधरी

संपादकीय सहयोग
किशन शर्मा

चित्रांकन
प्रतिमा सिंह

पृष्ठ सज्जा: शेरसिंह

संपादकीय सम्पर्क

बालहंस (पाक्षिक)
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान) पिन-302 004
दूरभाष: 0141-3005857
e-mail: balhans@epatrika.com

ग्राहक शुल्क

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं।
वार्षिक- 240/-रुपए,
अर्द्धवार्षिक- 120/-रुपए

सब्सक्रिप्शन एवं वितरण संबंधी जानकारी के लिए
0141-3005825 पर संपर्क करें।

संपादकीय

दोस्तो,

क्रिसमस आने वाला है। क्रिसमस पर तुम्हें और किसी का इंतजार हो न हो, सेंटा क्लॉज का जरूर रहता है। भई सेंटा आते हैं तो ढेर सारे उपहार जो लाते हैं। लेकिन बच्चो, हम हर क्रिसमस सेंटा के उपहारों के भरोसे क्यों रहें? क्यों न अपने में एक ऐसी आदत विकसित करें कि अपने लिये पसंदीदा चीज हम जुटा सकें। यह काम बचत की प्रवृत्ति विकसित करने से हो सकता है। हम अपनी पॉकेटमनी या कभी उपहारों में मिले धन को बचत के रूप में जमा कर सकते हैं। यह एक अच्छी आदत है जो जीवनभर हमें आकस्मिक संकटों से बचाती रहती है। बचत के महत्त्व से जुड़ी एक कथा आपको बताते हैं।

एक किसान था। इस बार वह फसल कम होने की वजह से चिंतित था। घर में राशन ग्यारह महीने चल सके उतना ही था। बाकी एक महीने का राशन का कहां से इंतजाम होगा, यह चिंता उसे बार-बार सता रही थी। किसान की बहू का ध्यान जब इस ओर गया तो उसने पूछा, 'पिताजी आजकल आप किसी बात को लेकर चिंतित नजर आ रहे हैं।' तब किसान ने अपनी चिंता का कारण बहू को बताया। किसान की बात सुनकर बहू ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह किसी बात की चिंता न करें। उस एक महीने के लिए भी अनाज का इंतजाम हो जाएगा। जब पूरा वर्ष उनका आराम से निकल गया तब किसान ने पूछा कि आखिर ऐसा कैसे हुआ? बहू ने कहा, 'पिताजी जब से आपने मुझे राशन के बारे में बताया तभी से मैं जब भी रसोई के लिए अनाज निकालती, उसी में स एक-दो मुट्ठी हर रोज वापस कोठी में डाल देती। बस उसी की वजह से बारहवें महीने का इंतजाम हो गया।' तो इस सीख को आज से ही अपनी दिनचर्या में बसा लें। संकट के समय यह बचत ही सेंटा का गिफ्ट होगी।

तुम्हारा बालहंस

सिखा गये सेंटा

कहानी

क्रिसमस की सुबह पीटर कुछ उदास था। पापा ने इसका कारण पूछा तो वह कहने लगा, 'पापा...मेरा दोस्त जॉन कह रहा था कि आज सुबह उसे सेंटा □लॉज उपहार देने आया था...लेकिन मुझसे तो फादर सेंटा मिलने नहीं आये...।'

पीटर के पापा बोले, 'सेंटा □लॉज उन्हीं बच्चों को मिलने आता है, जो पेरेंट्स का कहना मानते हैं...और तुम तो अपने पेरेंट्स का कहना मानना जानते ही नहीं। तु□हें पढ़ने के लिए कहो तो टालमटोल करते हो। स्कूल से आते ही अपना बैट और बॉल लेकर सारा दिन क्रिकेट खेलते हो...तभी तु□हारे मा□र्स इस बार बहुत कम आये हैं...जानते हो जॉन अपने पेरेंट्स का कहा भी मानता है और पढ़ाई में भी तुमसे कहीं होशियार है...।'

पापा की बात सुनकर पीटर को जॉन से थोड़ी चिढ़ हुई और वह मुंह फुलाकर अपने कमरे में चला गया। क्रिसमस के त्योहार पर पीटर की मां उसके लिए बढ़िया पकवान बना कर लायी तो उसने एक भी न चखा।

रात को जब पीटर अपने कमरे में सो रहा था, किसी ने उसे हिलाकर जगाया। पीटर ने देखा तो हैरानी मिश्रित आवाज में बुदबुदाया, 'सेंटा...□लॉज....।' उसके सामने सेंटा □लॉज खड़ा था। सेंटा मुस्कुराया और प्यार से पीटर की ठोड़ी पकड़ कर बोला, 'कैसे हो पीटर...? तुमने अपने पापा से सवाल किया था न कि मैं तुमसे मिलने □यों नहीं आता...?'

'यस...मगर...आप को यह कैसे पता चला...?' पीटर ने पूछा। 'मुझे सब पता है। मैं तो यह भी जानता हूं कि तुम पढ़ाई में मन नहीं लगाते और सारा दिन खेल-कूद में बिता देते हो...□या यह सही है...?' सेंटा □लॉज ने पीटर के करीब बैठते हुए कहा। पीटर ने सिर झुका लिया और कुछ पल रुककर बोला, '□या करूं मेरा पढ़ाई में मन नहीं लगता...।'

'लगेगा, यदि तुम रोजाना नियम से पढ़ने बैठो...पहले पहले तु□हें थोड़ा मुश्किल लगेगा फिर आदत पड़ जाएगी...देखो बेटा तु□हारे पेरेंट्स तु□हारे भले के लिए ही तु□हें पढ़ने के लिए कहते हैं। वह तु□हारे भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए कितना खर्च करते हैं...तुमसे उ□मीदें हैं उन्हें...उनका कहना मानना तु□हारा फर्ज है। जो बच्चे अपने बड़ों का कहना नहीं मानते उनसे गॉड भी नाराज हो जाता है। □या तुम मेरा कहना मानोगे...?'

पीटर उलझन में पड़ गया। सेंटा □लॉज ने फिर पूछा, 'देखो मैं तुमसे खासतौर पर मिलने आया हूं...□या तुम मुझसे इतना भी वादा नहीं करोगे...मुझे खाली हाथ लौटा दोगे...?'

'नहीं...मैं वादा करता हूं जो आप कह रहे हैं वही होगा...मैं कल से पढ़ाई में मन लगाऊंगा...पेरेंट्स का कहना भी मानूंगा...।' पीटर ने सेंटा □लॉज से वादा किया। खुश होकर सेंटा □लॉज ने उसे ढेर से उपहार दिये और फिर अगले वर्ष मिलने का वादा देकर वहां से चला गया।

सुबह पीटर जागा तो काफी देर तक सेंटा □लॉज के बारे में सोचता रहा। फिर उसने कुछ फैसला किया और अपने पापा से बोला, 'पापा आप मुझे रोजाना मन लगाकर पढ़ने के लिए कहते थे न, आज से मैं स्कूल से घर आकर भी पढ़ूंगा और आपका कहना भी मानूंगा। ...आई प्रामिस यू...।' पीटर के पापा ने उसे गले से लगा लिया। कल रात सेंटा □लॉज का भेष बनाकर वह पीटर के कमरे में आये थे, ताकि पीटर को उसकी इच्छानुकूल खुशी भी दे सकें और सही दिशा भी।

–हरिन्दर सिंह गोगना

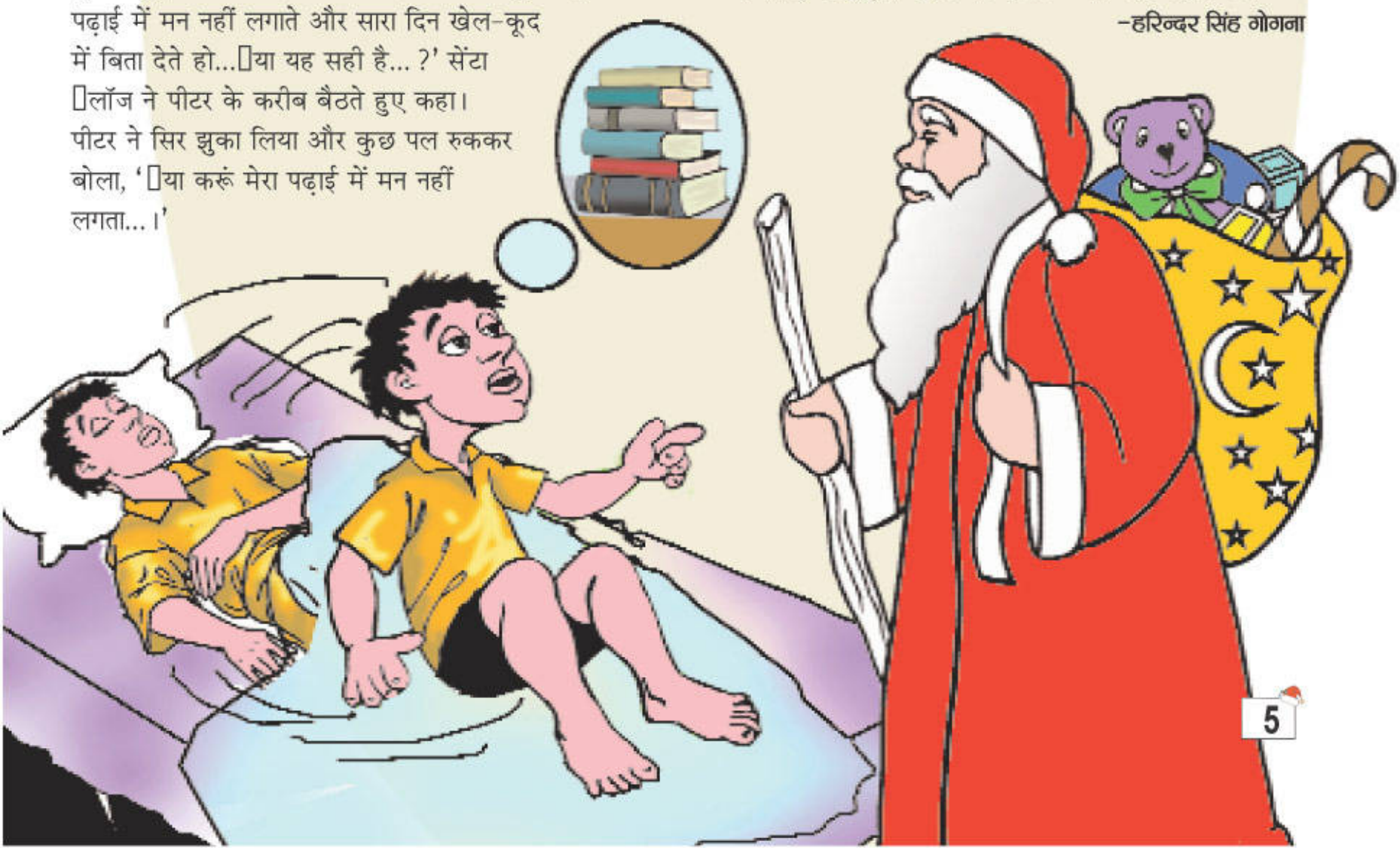

मिलकर मनाएंगे क्रिसमस!

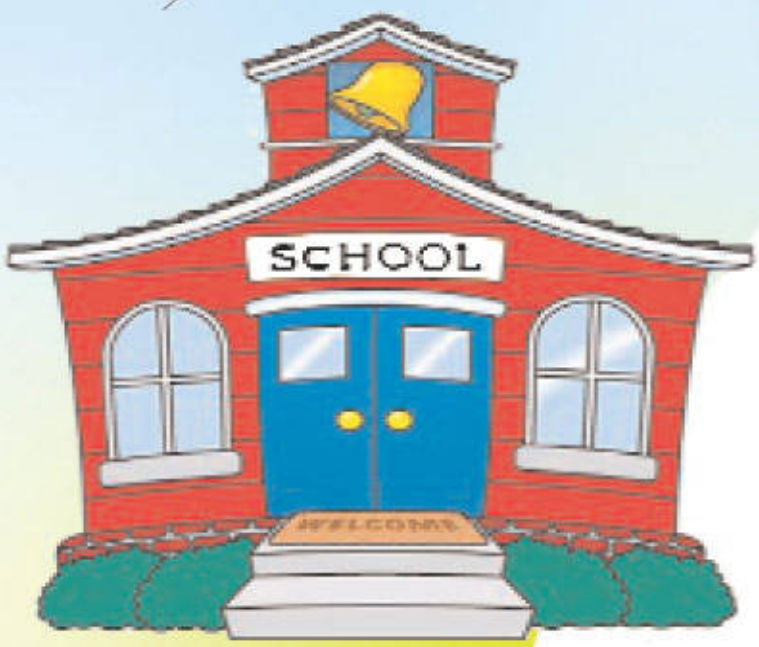

स्कूल के सब बच्चे छुट्टी के बाद हंसी-खुशी घर जाने की तैयारी कर रहे थे। एक तो बच्चों में वैसे ही आठ पीरियड की पढ़ाई और थकान के बाद घर जाने का उत्साह होता है, ऊपर से ख्र दिस□बर होने की वजह से अवकाश की घोषणा भी हो चुकी थी, जिससे उनका उत्साह दोगुना हो गया था। सब आपस में हंसी-ठिठोली करते, एक-दूसरे पर दोस्ताना ताने मारते हुए स्कूल के अहाते से निकल रहे थे।

सुकांतो, नितिन, रवि, कादिर, अनय, मेघा, श्रद्धा, परमजीत, सुजाता और गो□स सब साथ-साथ चल रहे थे। अनय ने महसूस किया कि आज गो□स कुछ भी नहीं बोल रहा। अनय ने गो□स की पीठ पर धौल जमा कर कहा, 'अरे! भाई तू इतना चुप्पा कैसे बना हुआ है? तेरा तो कल त्योहार है।'

गो□स ने कहा, 'हां, त्योहार तो है, लेकिन अकेले कोई त्योहार मनाता है? खुशी तो बांटने की चीज होती है। हम तो इस शहर में अकेले हैं। मोहल्ले में या स्कूल में भी कोई क्रिश्चियन दोस्त नहीं...।'

कहानी

दरअसल गो□स के पिताजी एक बड़ी कंपनी में वि□ीय सलाहकार थे। पहले वे कंपनी के केरल स्थित मु□यालय में थे, वहां ईसाई समुदाय के लोगों की बहुतायत है। गो□स के चाचा-चाची, मामा-मामी, बुआ-फूफा एवं अन्य सब रिश्तेदार केरल में ही रहते थे। वहां तो उसके खूब सारे ईसाई दोस्त भी थे □योंकि गो□स का जन्म केरल में ही हुआ था। लेकिन यहां उसका कोई ईसाई मित्र नहीं था। अब उनका ट्रांसफर इस नए शहर में हो गया था।

गो□स की उदासी का कारण पता चलते ही सब बच्चे अचानक चुप हो गए। एक पल के लिए अपने दोस्त की तकलीफ से वे भी उदास हो गए। वातावरण बोझिल हो गया। तभी मेघा ने गो□स का कान पकड़कर खींचा और बोली, 'ओए पगले! तुझे किसने कहा कि तू यहां अकेला है? फिर हम सब □या भूत हैं? हम तेरे दोस्त नहीं हैं □या?' गो□स कुछ नहीं बोला।

नितिन ने उसके कंधे पर हाथ धरकर कहा, 'गो□स! तुम सचमुच हमें ठीक से पहचान नहीं पाए। हम लोग सब धर्मों का आदर करते हैं। हम सब भारतीय हैं और हर भारतीय हमारा भाई है। जैसे हम सुकांतो के साथ दुर्गापूजा, कादिर के साथ ईद, परमजीत के साथ वैशाखी और ये हमारे साथ होली-दीवाली का मजा लेते हैं, वैसे ही हम सब तु□हारे साथ क्रिसमस पर मस्ती करेंगे। हम तो तु□हें, कल तु□हारे घर आकर सरप्राइज देने वाले थे, लेकिन तु□हारी उदासी हम से देखी न गई। इसलिए मुझे तु□हें यह बात अभी बतानी पड़ी।'

परमजीत बोली, 'हां, गो□स हम सबने तु□हारे लिए कुछ न कुछ उपहार लिया है। कादिर कुकीज का डि□बा लाया है, श्रद्धा नमकीन लाई है, मैं केक ऑर्डर कर चुकी हूं, अनय ने सजावटी क्रिसमस ट्री बुक किया है, सुजाता, नितिन और श्रद्धा ने मिलाकर सांता □लॉज वाली टोपियां और रंग-बिरंगी झालर खरीदी हैं।'

गो□स आश्चर्य से उनकी बातें सुन रहा था। तभी श्रद्धा बोली, 'हां! अपने म□मी-पापा से जाकर हमारी ओर से क्रिसमस का राम-राम कहना और साथ ही हम पेटुओं के लिए कुछ चाय-नाश्ते के इंतजाम के लिए भी। हम आ रहे हैं कल धूम-धड़ाक करने।'

अपने इन नए दोस्तों की बात सुनकर गो□स खुशी के मारे सातवें आसमान पर जा पहुंचा। उसकी आंखों से खुशी के आंसू झर-झर बहने लगे। सब दोस्तों ने उसे गले लगा लिया। अब गो□स उत्साह से झूमता हुआ अपने घर की ओर तेजी से बढ़ रहा था। अपने म□मी-पापा को अपने दोस्तों की तरफ से

अपने ही जाल में

मां की सहायता

शाम का समय था। बबलू और उसकी छोटी बहन बबली अपना-अपना होमवर्क करने में तल्लीन थे। बबलू पढ़ने में कमजोर था, वहीं बबली बड़ी होशियार थी। टीवी पर 'कौन बनेगा करोड़पति' आने वाला था। बबली अपना होमवर्क जल्दी-जल्दी करने के च□कर में थी। उसने सोचा, जल्दी से होमवर्क कर लूं, फिर इत्मीनान से अपना चिर-प्रतीक्षित कार्यक्रम देखूंगी।

उसने आठ बजते-बजते होमवर्क पूरा कर लिया। उसने किताब-कापियां बैग में ठूंसीं और टीवी ऑन करके उसके सामने बैठ गई।

साढ़े आठ बजे 'कौन बनेगा करोड़पति' शुरू हो गया। स्क्रीन पर अमिताभ बच्चन को देख बबली तालियां पीटने लगी। तभी मां ने बबली को आवाज दी, 'बेटा, किचन में आओ और मेरे काम में थोड़ी मदद कर दो।'

बबली ने वहीं बैठे हुए कहा, 'ममा, मैं अभी नहीं आ सकती, आप ही निपटा लो न काम।'

इस पर मां ने भी वहीं से ऐलान कर दिया, 'ठीक है, मदद नहीं करोगी तो तेरी मनपसन्द खीर कैन्सिल।'

बबली पांव पटकते हुए किचन में गई और म□मी से कहा, 'भला यह □या बात हुई ? मैंने जल्दी-जल्दी होमवर्क करके समय बचाया तो □या मुझसे काम कराओगी? और खीर के नाम पर □लैकमेलिंग □यों?'

म□मी ने हौले से कहा, 'बेटा, मैंने थोड़ी मदद मांगी है। बस, सि□जयां काट दो।'

बबली 'ना' नहीं कर सकी। वह सि□जयां काटने लगी। इस काम में आधे घंटे का समय निकल गया।

कहानी

जब वह टीवी के सामने लौटी तब तक उसके शहर का कन्टेस्टेन्ट जा चुका था। बबली झल्ला उठी। वह बड़बड़ करने लगी, 'भैया तो कुछ करता ही नहीं। कछुए की तरह होमवर्क करने में सारा समय बिता देगा। ममा उससे कुछ कहती ही नहीं। मैं ही बेवकूफ हूं। बेकार जल्दी-जल्दी होमवर्क करती हूं। कल से मैं भी भैया की तरह करूंगी।'

अगले दिन बबली ने सचमुच ऐसा ही किया। वह तो म□मी पर खीजी हुई थी। वह जानबूझकर होमवर्क धीरे-धीरे करती रही। आठ बजते-बजते म□मी ने किचन से आवाज दी, 'बबली बेटा, होमवर्क हो गया हो तो जरा किचन में आना। थोड़ा काम है।'

बबली ने वहीं से कहा, 'ममा, मुझे देर होगी। आप भैया को बुला लें।'

मां चुप रही। थोड़ी देर बाद वे कमरे में आईं। उन्होंने बबली को गौर से देखा। वे बबली की बदमाशी समझ गई। लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा और वापस किचन में चली गईं। उस दिन डैडी ने अपने दोस्त को खाने पर बुलाया था। इस कारण मां का काम बढ़ा हुआ था। उन्होंने किसी तरह काम पूरा किया।

नौ बजे सभी ने डिनर लिया। खाना परोसते समय मां थकी-थकी सी लग रही थीं। लेकिन बबली ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। उसकी फेवरिट आलू भाजी बनी थी। वह पनीर के पराठे के साथ खाने में मगन थी। उसे इस बात की खुशी थी कि वह काम करने से बच गई थी। वह भैया की तरफ देख रही थी और मन-ही-मन कह रही थी, 'देखो इस खाऊ को। होमवर्क में कछुआ जैसा और खाने में खरगोश से भी आगे।'

दस बजे सभी अपने-अपने कमरे में सोने चले गए। बबली को नींद नहीं आ रही थी। उसने आई-पॉड ऑन किया और ईयर-फोन कान में लगाने लगी। तभी उसने मां के कराहने की आवाज सुनी। वह तुरन्त मां के कमरे में गई। उसने देखा मां बिस्तर पर लेटी हैं। उनके सिर पर पानी की पट्टी रखी है। डैडी वहीं कुर्सी खींचकर बैठे हैं और म□मी का सिर दबा रहे हैं।

बबली ने पूछा, 'डैडी, ममा को □या हुआ ?'

डैडी ने कहा, 'कुछ नहीं बेटा। अकेले काम करते-करते ममा कुछ ज्यादा थक गई हैं। थकान से बुखार आ गया। तुम चिन्ता मत करो। सुबह होते-होते बुखार और थकान उतर जाएगी। तुम सोने जाओ।'

बबली अपने कमरे में वापस आ गई।

उसका भैया, बबलू अभी जगा हुआ था। उसने पूछा, 'दीदी, मैथ्स का होमवर्क कर लिया ?'

बबली ने कहा, 'नहीं। कल सुबह ममा से हेल्प लेकर कर लूंगी।'

बबलू ने कहा, 'ममा हेल्प कैसे करेंगी? वे तो बीमार हो गई हैं।'

बबली ने कहा, 'अरे हां। यह तो मैंने सोचा ही नहीं। लेकिन फिक्र की बात नहीं है। डैडी ने कहा है कि वे सुबह तक ठीक हो जाएंगी।'

बबलू ने कहा, 'ठीक कैसे होंगी? उनको तेज बुखार है। देखा नहीं, उनके माथे पर पानी की पट्टी रखी थी।'

बबली ने कहा, 'फिर तो गड़बड़ है। अब मैं □या करूं?'

बबलू ने पूछा, 'दीदी, एक बात बताना। ममा हमारे काम में मदद करती है तो □या हमें ममा के काम में मदद नहीं करनी चाहिए ?'

इस पर बबली नाराज होने लगी। उसने पूछा, 'तू मदद □यों नहीं करता?'

बबलू ने जवाब दिया, 'मैंने शाम को बाजार का काम किया था। मैं स□जियां और मिठाई ले आया था।'

इस जवाब से बबली अपराधी जैसी हो गई। उसे लगा, उसने गलती कर दी है। उसे मां की मदद के लिए जाना चाहिए था। अब वह मां के पास कौन-सा मुंह लेकर जाए।

बबलू ने बबली को गुमसुम देखा तो कहा, 'बबली, अभी भी मौका है। मां के पास जाओ।'

इतना सुनते ही बबली मां के पास गई और कान पकड़कर कहा, 'ममा, सॉरी।'

म□मी और डैडी इतने से ही समझ गए कि बबली ने अपनी भूल समझ ली है। मां ने कहा, 'बेटा, तु□हारे 'सॉरी' ने मुझे तसल्ली दी है। चिन्ता छोड़ो, मैं कल तक इतना जरूर ठीक हो जाऊंगी कि तु□हारी मदद कर सकूं।'

बबली ने कहा, 'थैंक यू ममा। मैं भी आपकी मदद करूंगी।' और बबली मां से लिपट गई।

-ज्ञानदेव मुकेश

सेंटा क्लॉज की टोपी

क्रिसमस का त्योहार आने वाला था। इसलिए मोहल्ले के सभी बच्चे बेहद उत्साहित थे। □योंकि इस दिन उनके मोहल्ले के रॉबिन अंकल उन्हें सेंटा □लॉज के रूप में उपहार देते थे। यही कारण था कि क्रिसमस के दिन मोहल्ले के सभी बच्चे प्यार से रॉबिन अंकल को सेंटा अंकल पुकारते थे।छुट्टी के दिन बच्चों की टोली रॉबिन अंकल के घर जा पहुंची।

'नमस्ते रॉबिन अंकल...,' बच्चों के नेता संदीप ने कहा।'

'नमस्ते बच्चो, रॉबिन अंकल उदास स्वर में बोले।'

'□या बात है रॉबिन अंकल, आप कुछ परेशान लग रहे हैं?' पिटू ने पूछा।

'बच्चो, तुम सबको तो पता ही है कि कुछ दिनों बाद क्रिसमस है।'

'हां, और उस दिन आप हमें उपहार देते हैं।' प्रदीप ने जल्दी से कहा तो संदीप ने उसे चुप रहने का इशारा किया।

'□या बात है रॉबिन अंकल?'

'बच्चो मेरी टोपी खो गई है।'

'तो इसमें इतना परेशान होने की कौन सी बात है, आप कोई दूसरी टोपी पहन लीजिए' प्रदीप कमरे में रखी हुई कई टोपियों को देखते हुए बोला।

'वो कोई साधारण टोपी नहीं बल्कि मेरी सेंटा □लॉज वाली टोपी थी।' रॉबिन अंकल ने पहले की ही तरह उदास स्वर में कहा।

'यह तो बहुत ही बुरा हुआ, लेकिन कोई बात नहीं रॉबिन अंकल, आप दूसरी टोपी खरीद लीजिए।' संदीप बोला। 'बच्चो, तुम लोग समझ नहीं रहे हो कि वो टोपी मेरे लिए कितनी मह□वपूर्ण है। वो टोपी मेरे पिताजी की थी, जो उन्होंने मुझे सेंटा □लॉज सूट के साथ दी थी। इसलिए उस टोपी का मिलना आवश्यक है। यदि वो टोपी नहीं मिली तो मैं सेंटा □लॉज भी नहीं बनूंगा।' रॉबिन अंकल ने कहा तो उनकी बात सुनकर सब बच्चे हैरानी से एक- दूसरे का चेहरा देखने लगे जैसे पूछ रहे हों कि अब □या किया जाए।

'रॉबिन अंकल □या हम टोपी तलाश करने में आपकी मदद करें?' आखिर संदीप ने पूछा।

'हां बच्चो, अगर तुम मेरी टोपी ढूंढ़ सको तो इससे अच्छी बात और □या हो सकती है।'

'अच्छा रॉबिन अंकल, आप हमें ये बताइये अंतिम बार आपने सेंटा वाली टोपी को कब दे□ा था?' पिंटू ने प्रश्न किया।

'मुझे ठीक से याद नहीं है, अभी दो दिन पहले ही मैं सेंटा □लॉज वाले कपड़े पहनकर और टोपी लगाकर उपहार वाले थैले में तुम सबके लिए उपहार रख रहा था। उसके बाद पता नहीं मेरी टोपी कहां गई?' रॉबिन अंकल ने उदास स्वर में कहा।

'आप चिंता मत कीजिए अंकल, हम सब मिलकर आपकी टोपी तलाश लेंगे।' बच्चों ने कहा और सब मिलकर मोहल्ले के सेंटा □लॉज यानी रॉबिन अंकल की टॉपी तलाश करने लगे। बच्चों ने रॉबिन अंकल के घर का पूरा सामन इधर-उधर

'अंकल आपकी टोपी हमें कहीं भी नहीं मिली।' संदीप पसीना पोंछते हुए बोला।

'हां लगता है, आपकी टोपी कोई चुराकर ले गया है।' पिंटू ने भी हांफते हुए कहा।

'मेरी टोपी तो मिली नहीं उल्टा तुम सबने मिलकर मेरे घर की सारी चीजें और उलट-पलट दी जिससे मेरी दस चीजें और खो जाएंगी।' पहले से परेशान रॉबिन अंकल चिढ़कर बोले।

अंकल जब आप अपने सामान को वापस सजाकर रखेंगे तो हो सकता है कि तब आपको आपकी टोपी मिल जाए। प्रदीप ने कहा तो रॉबिन अंकल ने उसे गुस्से से घूरकर देखा। रॉबिन अंकल को गुस्से में देखकर बच्चों ने वहां से भागने में ही अपनी भलाई समझी।

'अब □या होगा संदीप, अंकल की टोपी तो मिली ही नहीं।'

'हां और उन्होंने कहा है कि यदि उनकी टोपी नहीं मिली तो वे सेंटा □लॉज भी नहीं बनेंगे। और यदि वे सेंटा □लॉज नहीं बनेंगे तो हमें उपहार भी नहीं मिलेगा।' पिंटू और संदीप की बात सुनकर प्रदीप जल्दी से बोला।

'हमें रॉबिन अंकल की टोपी ढूंढनी ही होगी।'

'वो तो ठीक है, लेकिन हम उसे तलाश करें भी तो कहां?' यदि रॉबिन अंकल की टोपी उनके घर में नहीं है तो और कहां हो सकती है?' पिंटू की बात सुनकर संदीप ने सोचते हुए कहा।

'यही तो सोचना है,' प्रदीप बोला और सब बच्चे सोच में डूब गये। तभी उन्हें मोहल्ले का सबसे शरारती लड़का आकाश आता दिखाई दिया। 'कहीं इसी ने तो शरारत करके रॉबिन अंकल की टोपी को नहीं छिपा दिया।' संदीप आकाश को संदेह से देखते बोला।

'हो सकता है कि किसी दिन रॉबिन अंकल ने अपनी टोपी को बाहर र□ा हो और आकाश शरारत करके उनकी टोपी को ले गया हो। चलो आकाश से टोपी के विषय में पूछें,' पिंटू ने कहा और सब आकाश के पास जा पहुंचे।

'आकाश कहीं तुमने तो रॉबिन अंकल की टोपी को नहीं छिपाया?'

'रॉबिन अंकल की टोपी? मैं कुछ समझा नहीं।' संदीप की बात सुनकर आकाश ने चौंककर पूछा तो संदीप ने उसे सारी बात बता दी।

'मैं रॉबिन अंकल की टोपी □यों छिपाऊंगा, उन्होंने तो मुझसे वादा किया था कि यदि मैं इस वर्ष अधिक शरारत नहीं करूंगा तो वो मुझे रिमोट से चलने वाली कार उपहार में देंगे।' आकाश से भी टोपी के बारे में कोई जानकारी न मिलने से सभी बच्चे दुखी हो गये और अपने-अपने घर चले गये।

धीरे-धीरे दिन बीते और क्रिसमस का दिन भी आ गया। लेकिन इस बार बच्चों में क्रिसमस को लेकर हर बार जैसा

उत्साह और खुशी नहीं थी। बच्चों के चेहरे पर उदासी देखकर रॉबिन अंकल ने आखिर बच्चों में उपहार बांटने का फैसला किया और वो सेंटा □लॉज वाले कपड़े पहनकर अपने घर से बाहर निकल आए।

'वो दे□ो रॉबिन अंकल।' प्रदीप खुशी से चिल्लाया। रॉबिन अंकल मत बोलो बुद्धू, बोलो, सेंटा अंकल।' पिंटू उत्साह से बोला और सारे बच्चे सांता □लॉज बने रॉबिन अंकल के पास जा पहुंचे।

'मैरी क्रिसमस बच्चो।'

'मैरी क्रिसमस सेंटा अंकल।' बच्चों ने भी उत्साह से कहा तो सेंटा □लॉज बने रॉबिन अंकल ने बच्चों को उपहार देने के लिए अपने थैले में हाथ डाला और जब हाथ बाहर निकाला तो सब हैरान रह गये।

'अरे यह तो आपकी सेंटा □लॉज वाली टोपी है, जिसे आप तलाश कर रहे थे,' संदीप हैरान होकर बोला। 'मुझे लगता है कि तुम सबके लिए उपहार पैक करके अपने थैले में रखते व□त मेरी टोपी भी थैले में चली गई। मैंने और तुम सबने इस टोपी को हर जगह तलाश किया, लेकिन इस थैले में नहीं दे□ा,' रॉबिन अंकल प्रसन्नतापूर्वक बोले।

'यह पहली बार हुआ है कि सेंटा □लॉज ने क्रिसमस पर खुद अपने आपको ही उपहार दिया है।' पिंटू ने हंसते हुए कहा तो सेंटा □लॉज रूपी रॉबिन अंकल और बाकी बच्चे भी हंस पड़े। 'अब मैं बन गया पूरा

कहानी

-विवेक चक्रवर्ती

चमत्कारी हैट

राजा डेरविन डिड बड़ा सनकी था। साथ ही अत्याचारी भी। उसका शानदार महल पहाड़ी पर बना था। शहर में अमीरों की शानदार हवेलियां थीं, तो गरीबों की टूटी-फूटी झोपड़ियां भी थीं। गरीबों की झोपड़ियां डेरविन डिड को फूटी आंख नहीं सुहाती थीं।

वहीं एक झोपड़ी थी □यूबिंस परिवार की। वहां बार्थ □यूबिंस अपने माता-पिता के साथ रहता था। एक दिन पिता ने □यूबिंस को फलों की टोकरी देकर बाजार भेजा। □यूबिंस ने सिर पर पिता का पुराना हैट पहन लिया। हैट सुंदर दिखाई दे, इसलिए उसने हैट पर एक चमकीला पंख लगा रखा था।

वह बाजार में पहुंचा तो बिगुल की आवाज गूंजने लगी, 'हटो, रास्ता खाली करो। महाराज की सवारी आ रही है। सब अपने हैट और टोपियां उतार लें और राजा के स□मान में झुक जाएं।' लेकिन □यूबिंस ने हैट नहीं उतारा। एक सैनिक ने भाले की नोंक से □यूबिंस का हैट उतार लिया। लेकिन ये □या, उसके सिर पर वैसा ही दूसरा हैट नजर आने लगा। □यूबिंस का एक हैट तो सैनिक के हाथ में था, फिर उसके सिर पर यह दूसरा हैट कहां से आ गया?

चकित सैनिक □यूबिंस को धकेलते हुए ले चले। बीच-बीच में वे उसके सिर से हैट उतारकर भी फेंक देते थे। पर आश्चर्य! हैट को हटाते ही वहां फिर से वैसा ही हैट नजर आने लगता था। पूरे शहर में यह खबर फैल गई। खुद □यूबिंस बहुत घबरा गया था। राजा ने यह तमाशा देखा तो चिल्लाकर बोला, 'मैं तु□हें आखिरी मौका देता हूं। हैट उतारो नहीं तो...!' □यूबिंस ने हाथ जोड़कर कहा, 'महाराज, मैंने तो घोषणा होते ही सिर से हैट उतार दिया था। इसके बाद सैनिक भी न जाने कितनी बार ऐसा कर चुके हैं।'

राजा ने कहा, 'मैं कुछ नहीं जानता। मुझे तु□हारे सिर पर हैट नजर नहीं आना चाहिए।' दो सैनिकों ने □यूबिंस के हाथ पकड़ लिए और एक उसके सिर से हैट उतार-उतारकर जमीन पर फेंकने लगा।'

आसपास हैटों का ढेर लग गया। अब तो राजा समेत सभी लोग भयभीत हो गए। तभी एक मंत्री ने सुझाव दिया, 'महाराज, आप इसे मृत्युदंड सुना दें। हम इसे जल्लाद के पास भेज देंगे। वह इसका सिर उड़ा देगा। हैट की समस्या अपने आप मिट जाएगी।' सैनिक □यूबिंस को जल्लाद के पास ले गए। जल्लाद ने कहा, 'लड़के, अपना हैट सिर से उतार लो।' यह काम तुम खुद □यों नहीं करते।' □यूबिंस ने पूछा।

अगले ही पल जल्लाद आगे बढ़ा और उसने □यूबिंस का हैट सिर से उतार लिया। तभी वहां वैसा ही दूसरा हैट दिखाई देने लगा। यह देख जल्लाद ने इसे भूत-प्रेत का च□कर समझा और डरकर भाग गया।

सेनापति राजा के कान में फुसफुसाया, 'महाराज, इसे मीनार पर ले जाकर ध□का दे दें।' सैनिक □यूबिंस को मीनार पर ले चले। तभी विचित्र बात हुई। हैट का रंग बदलने लगा। हर नया हैट पहले वाले से ज्यादा चमकीला और सुंदर दिखाई देने लगा। उसके साथ चलने वाले सैनिक भी हैरान थे।

जब □यूबिंस मीनार की चोटी पर पहुंचा, तो उसका हैट अस्त होते सूर्य में चमक उठा। लगा, जैसे हैट पर हीरे-मोती जड़े हों। राजा के लगाए उसके चमचमाते हैट के सामने उसका अपना मुकुट तो कुछ भी नहीं था। राजा ने अपने जीवन में इतना कीमती और सुंदर हैट कभी नहीं देखा था। एकाएक राजा ने □यूबिंस से कहा, '□या तुम यह हैट मुझे दोगे। इसके बदले कुछ भी ले लो।'

'हां-हां! □यों नहीं महाराज, कहते हुए □यूबिंस ने अपना हैट उतारकर राजा के हाथ में थमा दिया। राजा ने हैट को पहन लिया। इससे पहले उसने अपना मुकुट उतारकर एक तरफ रख दिया था। फिर एक विचित्र बात हुई। अब □यूबिंस के सिर पर कोई हैट नजर नहीं आ रहा था। तेज हवा में उसके बाल लहरा रहे थे।

तभी एक जोर का झोंका आया और हैट राजा के सिर से उड़कर मीनार की खिड़की से दूर चला गया। राजा मीनार की खिड़की से बाहर की तरफ लपका। जोरदार हवा चलने लगी और तेज हवा में अत्याचारी राजा कहां उड़ गया, किसी

रूपांतरण: **शिखर**

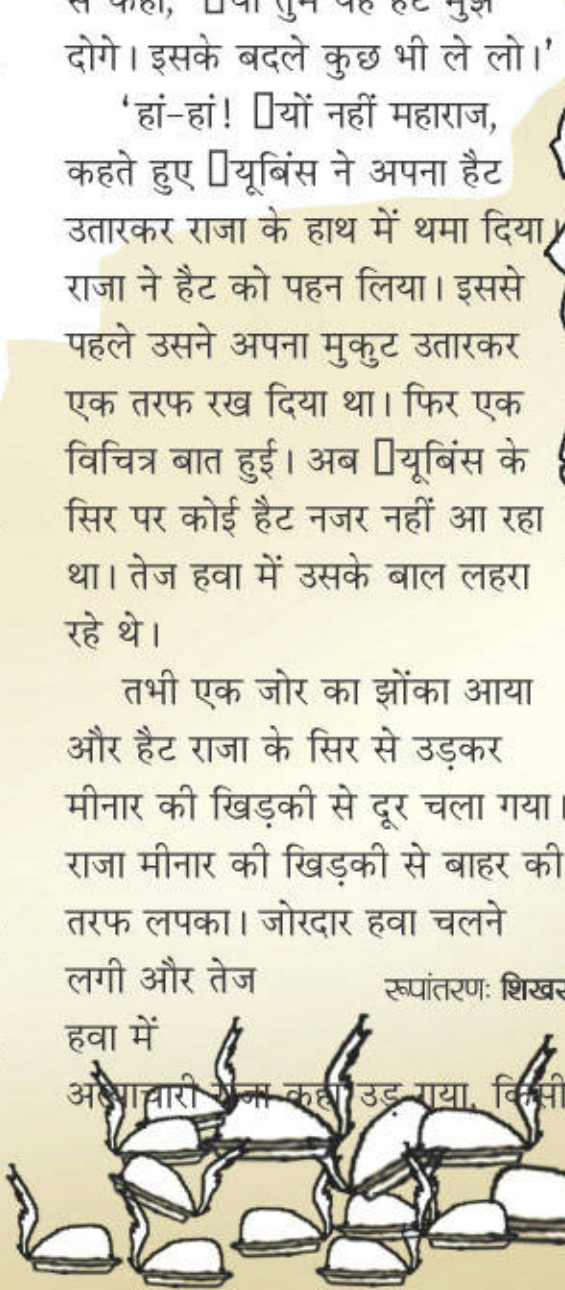

कहानी

धूप

सूरज के संग आती धूप,
सूरज के संग जाती धूप।

सुबह-सुबह जग जाती धूप,
शाम ढले सो जाती धूप।

फूलों के संग गाती धूप,
बागों को महकाती धूप।

ठंडी में मुस्काती धूप,
गर्मी में गुस्साती धूप।

वर्षा में छुप जाती धूप,
बादल से शर्माती धूप।

सबको गले लगाती धूप,
सब पर प्यार लुटाती धूप।

सबको मानो एक समान,
सबक हमें सिखलाती धूप।

–डॉ. तारा निगम

नकली बहादुरी

–उन्नी

राजा कुम्बेश्वर बहुत ही आलसी थे।
मंत्रीजी! आप बताइये कि हमारी बहादुरी के बारे में प्रजा क्या कहती है?
महाराज, अभी तक तो किसी ने कुछ भी नहीं कहा।
क्या मैंने डाकू विक्रम को नहीं पकड़ा था?
क्या मैंने हमारे राज्य पर आक्रमण करने आई विदेशी सेना को नहीं भगाया?
लेकिन वास्तव में तो हमारे राज्य की पुलिस ने डाकू को गिरफ्तार किया और सेना ने युद्ध जीता था।
इसमें लोग आपकी बहादुरी क्यों बताएंगे?
हुंह...ठीक है! अब मैं अपनी बहादुरी सिद्ध करके ही बताऊंगा।

मैं उनको एक मौका दे रहा हूं।
अगले दिन...
महाराज की जय हो! जंगल के उस पार एक खतरनाक हाथी आया हुआ है!
वहां तुरंत सेनापति को भेजो।
लेकिन ऐसा करने से लोग आपको बहादुर कैसे मानेंगे?
क्या मुझे जाना चाहिए?
ये लो, धनुष-बाण!
यह बहुत पुराना है, इस पर धूल जमी है।
महाराज, इसे वर्षों से काम में नहीं लिया गया।
लेकिन मैं तो अकेला हूं।
हम आपके पीछे हैं।

जंगल के रास्ते में...
हाथी कहां है?
अचानक...
अरे यह घोड़ा तो किसी काम का नहीं है....बिदक रहा है.....अरे घोड़े मुझे यहां से तो निकाल...
ऐसा लगता है, घोड़ा क्रोधित हो गया है। मैं तो मारा गया....
आ... बचाओ! बचाओ!
मंत्री और सिपाही राजा के पीछे ही थे।
देखो, वो रहे महाराज! वो बेहोश पड़े हैं, उन पर पानी छिड़कें।
....और जल्दी ही उन पर पानी छिड़का गया।
ओह...हाथी...! हाथी...!

महाराज! आपने व्यावहारिक जिंदगी की तकनीकें नहीं सीखीं। आप महल में मात्र खाने-सोने के लिए रह रहे हैं। वह नकली हाथी था।
यह बड़ी दयनीय स्थिति है महाराज, आप एक नकली हाथी के सामने भी अपने साहस और शक्ति को नहीं दिखा सके।
हुंह...आज से मैं हमेशा हर काम में आगे रहूंगा।
(समाप्त)
SANTHOSH

नंबर wheel

A.

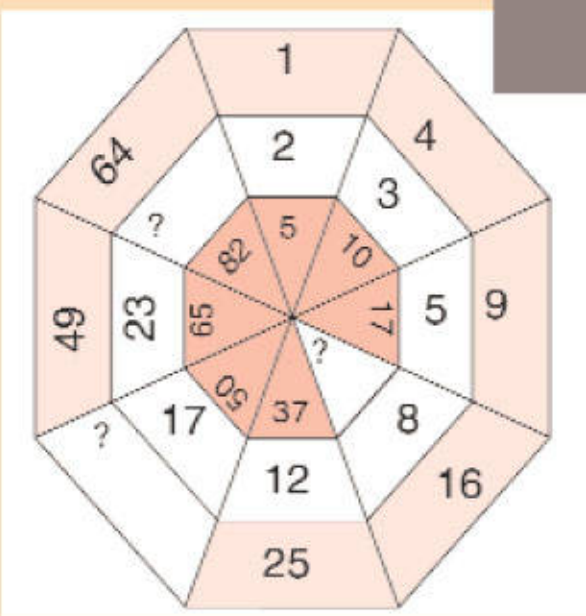

B.

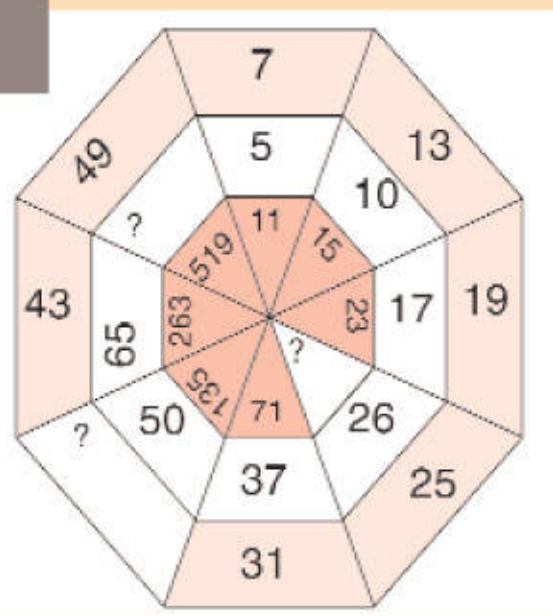

कैसे खेलें

नंबर व्हील को हल करने के लिए अपनी तर्क शक्ति का प्रयोग करें। यहां एक संख्या श्रृंखला दी गई है जो एक ही सिद्धांत के आधार पर क्रमबद्ध बढ़ती है। आपको उस श्रृंखला की लापता संख्या लिखनी है।

180-degree

A.

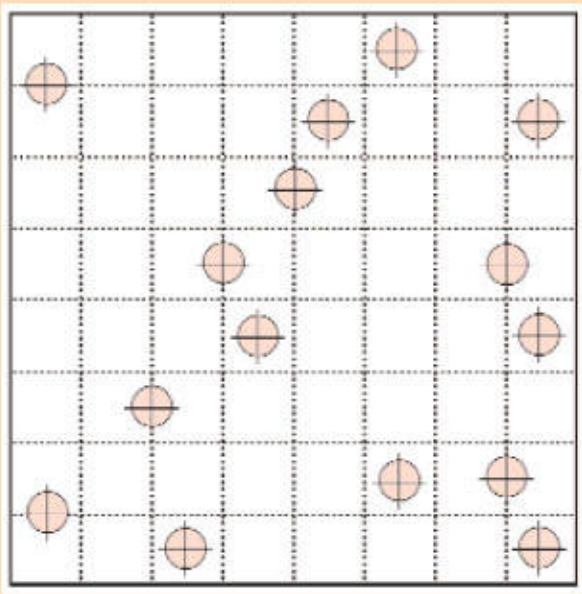

B.

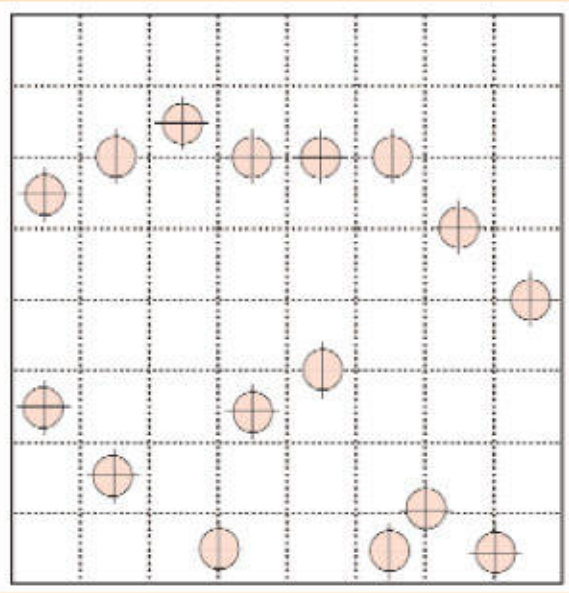

कैसे खेलें

पहेली को हल करने के लिए आप को ऐसी विभिन्न आकृतियां बनानी हैं जो गोलों के केंद्रबिंदु ऊपर से नीचे व दाएं से बाएं देखने पर एक जैसी ही नजर आएं। ध्यान यह रखना है कि गोले का एक ही बार प्रयोग हो व आकृतियां प्रत्येक वर्ग में भर जाएं।

नंबर pyramid

A.

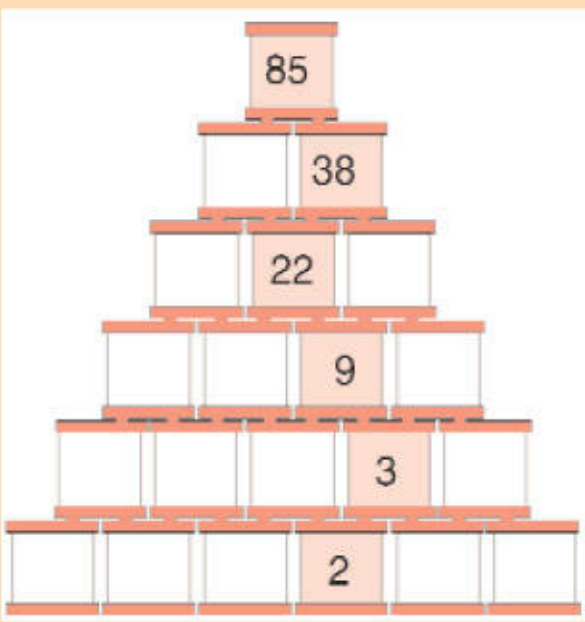

B.

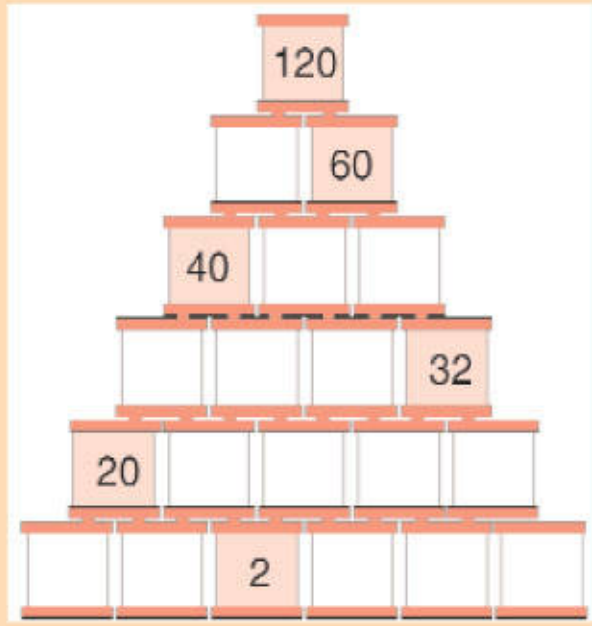

कैसे खेलें

नंबर पिरामिड बनाने के लिए प्रत्येक दो वर्गों की संख्या का योग उन दोनों वर्गों के ठीक ऊपर के वर्ग की संख्या से मेल खाना चाहिए।

illusion

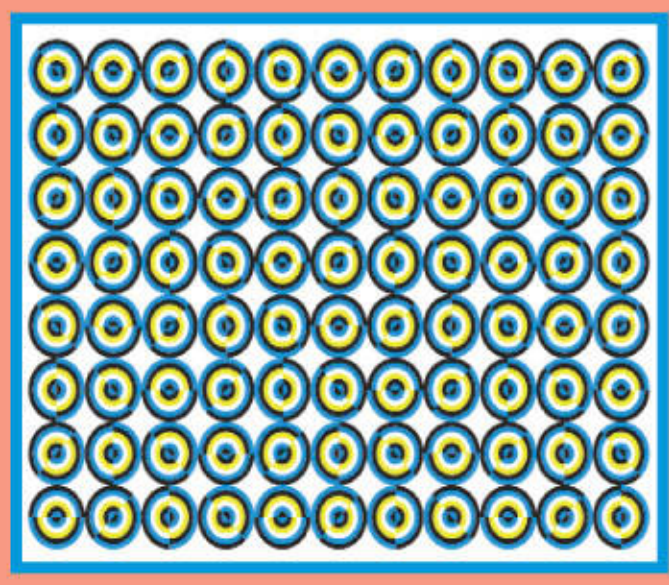

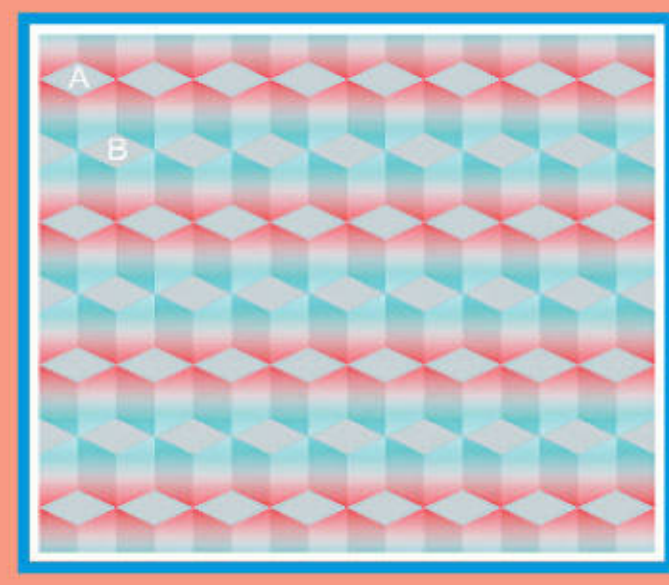

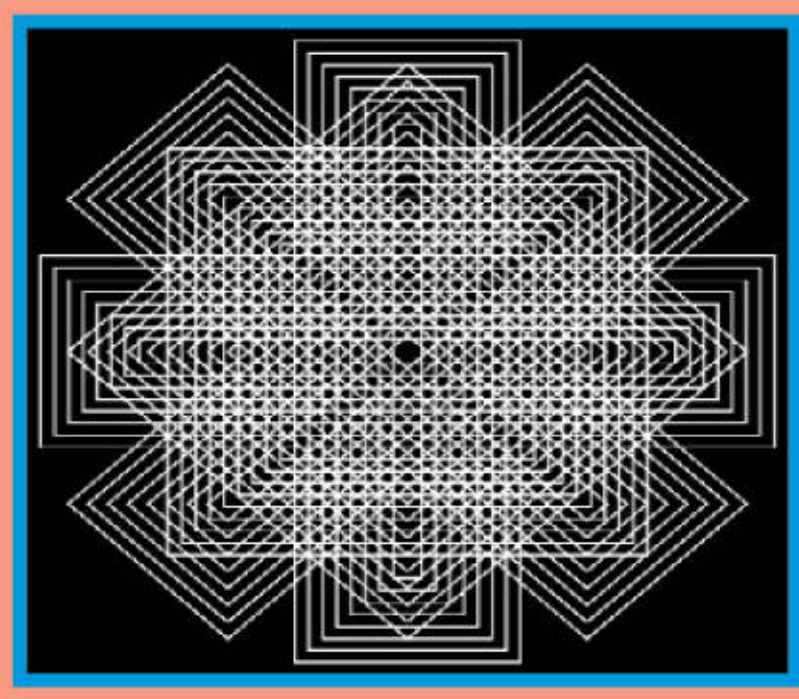

उत्तर

नंबर wheel

A.

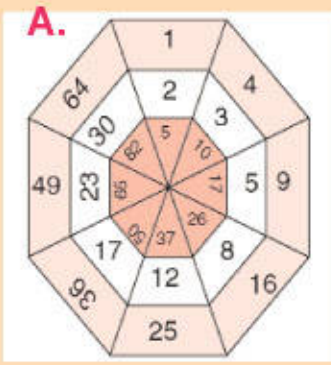

B.

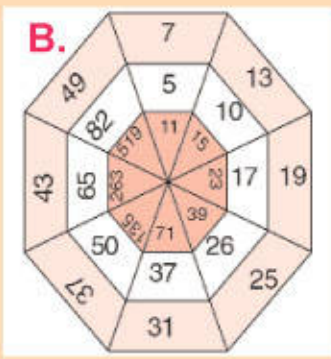

180-degree

A.

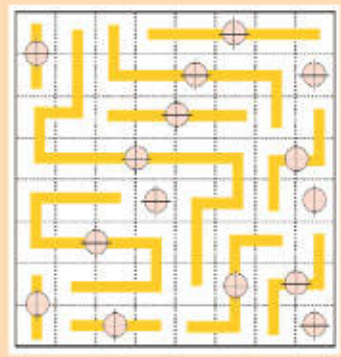

B.

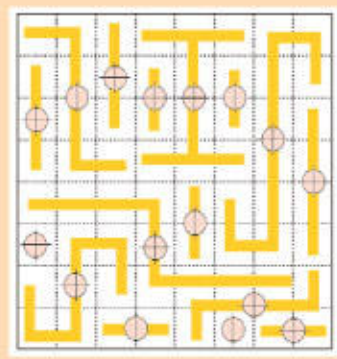

नंबर pyramid

A.

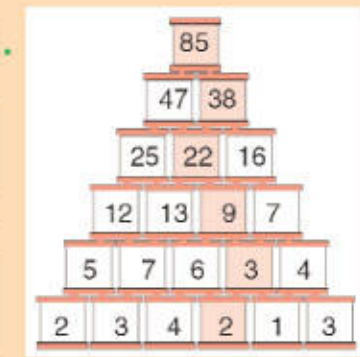

B.

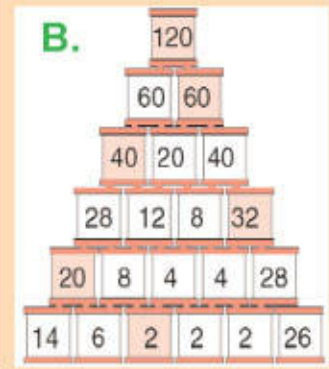

किसान का भतीजा

चौमासे के दिन थे। एक भीगी हुई सुबह किसान ने अपने □तीजे से कहा, 'आज गायों से मिलने पहाड़ पर चलना है। मैं एक हु□का पीऊं तब तक तुम कलेवा करके तैयार हो जाओ।'

'ठीक है, ठीक है। होता हूं तैयार। तुम कितने होशियार बनो, चाल में तु□हें मैं ही पीछे छोड़ूंगा।' भतीजे ने कहा।

'ज्यादा शेखी मत बघार, दो कोस की दूरी और दो पहाड़ों की चढ़ाई पड़ेगी बेटा। कहीं ऐसा न हो रास्ते में ही तेरी हवा निकल जाए।' किसान ने अंगोछा कंधे पर धरते हुए और लाठी हाथ में लेते हुए कहा। 'मेरे पीछे-पीछे चले आओ,' कहता हुआ बारह बरस का भतीजा आगे-आगे कुलांचे भरने लगा।

रास्ते में चारों तरफ खेत थे। खेतों में मूंगफली और बाजरे की फसलों की हरियाली। खेतों की मेड़ों की बबूल की टहनियों की बाड़ों में बारिश की बेलें, जिनमें रंग-बिरंगे फूल और रंग-बिरंगे फल लटक रहे थे। ये बेलें बरसाती ककोड़े, तुरई, लौकी, चकरी, सेंध...आदि की थी। बारिश की वनस्पतियों और खेतों की गीली मिट्टी और डबरों-पोखरों में भरे बारिश के कच्चे पानी की गंध वातावरण में फैली थी। वे खेतों के बीच की पतली पगडण्डियों पर चलते जा रहे थे।

रास्ते में छोटी-छोटी ढाणियां और छोटे गांव थे। लोग किसान को आवाज देकर बुला लेते, 'आ रे भाई खिलारी आ, थोड़ा बैठ बात तो कर जा।' भतीजे को यह बहुत बुरा लगता। □योंकि काका बात करने बैठ जाता तो देर-देर तक दूसरे किसानों से बातें करता रहता। वह उतनी देर तक ऊबता रहता। बहुत देर बाद जब काका चलने के लिए खड़े होकर पांव जूते में डालता, तब कहीं भतीजा राहत की सांस पाता।

अब वे पहाड़ पर चढ़ रहे थे। अगल-बगल में झरने और बरसाती नाले आवाज करते हुए बह रहे थे। इंसान और उनकी बस्तियां पीछे छूट चुके थे। यहां जंगली पक्षियों की और हवाओं की आवाजें थीं। दोपहर तक वे पहाड़ पर पहुंचे। पहाड़ का विशाल दृश्य देखकर किसान के भतीजे को रोमांच हो रहा था। उसने ऐसा दृश्य पहली बार देखा था। इससे पहले हमेशा पहाड़ को दूर से और ऊंचाई में देखा था। कभी कल्पना नहीं की थी कि ऊपर आने पर पहाड़ एक विशाल मैदान की तरह मिलेगा।

'यह तीन कोस चौड़ा और

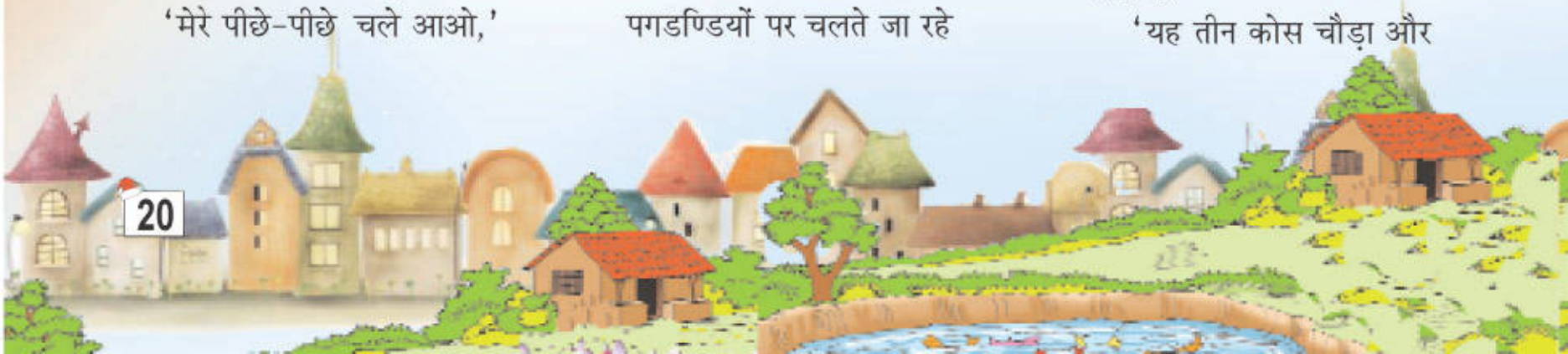

'यहां से गांव के घर और झोंपड़ियां तीतर-बटेरों के झुंड की तरह लग रही हैं,' भतीजे ने कहा।

'तुझे लोगों के घर तीतर-बटेरों के लग रहे हैं। बेवकूफ कहीं का,' किसान ने कहा।

'तो फिर कैसे लग रहे हैं?'

'गाय-गोरूओं के जैसे लग रहे हैं। अब जरा पलट कर देख।'

'अभी देखता हूं।'

जहां तक दिखायी दिया, वहां तक गायें ही गायें मैदानों में चर रही थीं। हजारों गायें थीं। असल में इलाकेभर के गांवों के किसान बारिश के महीनों में अपनी गायों को चरने के लिए यहां छोड़ जाते थे। किसान की चौबीसों गायें भी यहीं कहीं थीं। वे उन्हीं की खोज कर रहे थे। कोई गाय कहां मिली, कोई कहां। चारों ओर घूम-घूम कर वे अपनी सारी गायों और उनके बछड़ों से मिले।

कोई गाय कहीं दूर चरती दिख जाती तो किसान आवाज लगाता, 'आ! आ! ली! ली! उन्हें देखते ही गाय दौड़ी आती और पास आकर खड़ी हो जाती। वे उसके कान, पीठ और मुंह पर हाथ रखते। वह तब तक खड़ी रहती, जब तक वे खड़े रहते। वे आगे चलते तो वह भी साथ-साथ चलती। शाम को किसान और उसका भतीजा और उनकी सभी गायें एक जगह इकट्ठे हो गये थे। वहां कुछ और किसान भी मिले। वे भी अपनी गायों से मिलने आए थे।

अब वे वापस लौटने के लिए रवाना हुए। शाम हो आयी थी। अब वे पहाड़ उतर कर खेतों के किनारे घुटनों तक ऊंची घासों में चल रहे थे। अंधेरा गहरा रहा था। किसान लाठी से आगे की घासों को हिलाते-डुलाते मुंह से शी-शी! □डौ □डौ... की आवाज करते आगे-आगे चल रहा था। ऐसा इसलिए करना पड़ रहा था कि कहीं कोई सांप-कीड़ा वगैरह हो तो आहट सुनकर भाग जाए। भतीजा गाय के बछड़े की तरह किसान के पीछे-पीछे चल रहा था।

कहानी

'तो गायों को तो वहां बड़ा मजा है, लेकिन इससे हमें □या मिलता है? इतनी दूर उनकी देखभाल करने जाना पड़ता है?' भतीजे ने कहा।

'बारिश के इन चार महीनों की पहाड़ी चराई से बरस भर उनका शरीर चलता है। वरना मरुप्रदेश में इतना चारा कहां कि बारह महीनों तक मवेशियों को भरपेट खिलाया जा सके मूरख?' किसान ने समझाया।

'इसमें मूरख की □या बात है?' भतीजे ने कहा।

'किसान का भतीजा होकर इतनी सी बात नहीं समझेगा तो कोई तुझे मूरख ही समझेगा न मूरख।' किसान ने कहा।

'लेकिन अब तो मैं समझ गया हूं,' भतीजे ने कहा।

'तो अब कौन मूरख तुझे मूरख कह रहा है मूरख।' किसान ने कहा।

अंधकार गहरा गया था। अब वे दूर से दिखायी देना बंद हो गये थे। खेतों की झोंपड़ियों में बैठे किसानों को लग रहा था, जैसे रास्ते में दो आवाजें जा रही हैं। जब-तब किसी की आवाज उन तक पहुंचती, 'अरे कौन है रे भाई राह में जाने वाले। रात में कहां जाओगे। यहीं रुक जाओ। खाना-वाना खा लो। यहीं सो जाना। सुबह चले जाने जाना।'

किसान उन आवाजों को जवाब देता हुआ चल रहा था, 'अरे, बस अब जाने दो भाई अब तो घर आ ही गया है। साथ में छोरा भी है, परेशान हो रहा है।'

'ठीक है भाई जल्दी पहुंचो घर।' आवाज उनको सलाह देती।

'तू कभी भूखा नहीं मरेगा। रेत में से भी रोटी निकाल कर खा लेगा,' किसान ने भतीजे से कहा।

'कैसे?' भतीजे को बात कुछ समझ में नहीं आई।

'तू बिना किसी शिकायत के मुश्किल का सामना कर सकता है। मुझे तेरे सिर में भेजा महसूस होता है रे मूरख।' किसान ने कहा।

इतने में उनका घर आ गया। अंधेरे में आंगन में खाट डालते हुए काकी बड़बड़ कर रही थी।

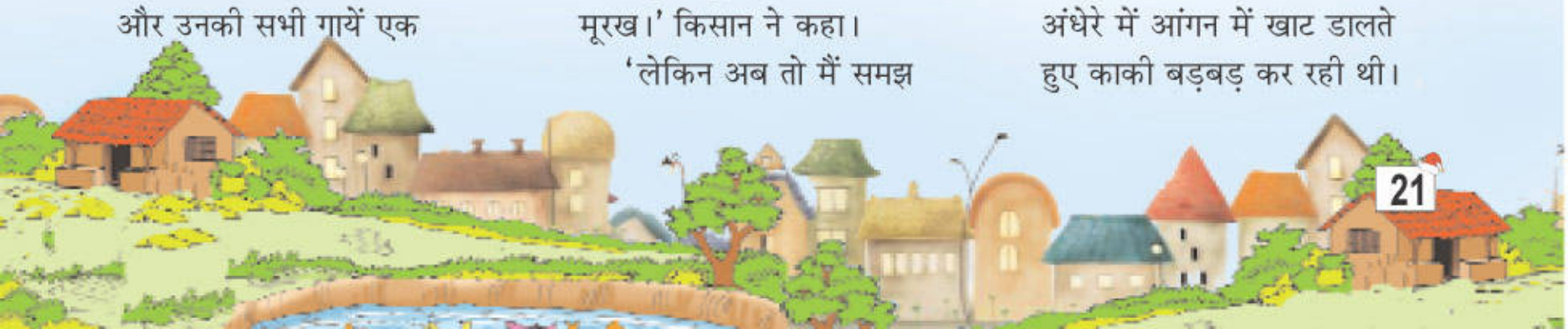

मेहनत तो मेहनत है

बुद्धूराम बहुत ही आलसी था।
हुंह... थोड़ा-बहुत काम किया करो। अब मेरी कहानी खत्म होने वाली है।
अच्छा, तुमने अब कहानियां लिखनी शुरू कर दीं?
अब मैं इस बक्से पर सो रहा हूं। मुझे जगाना मत।
दुष्ट...! कुछ काम कर...मूर्ख...!
आऊ...डकार...! लेकिन मैं कोई काम नहीं कर सकता।
लगता है तुझे सबक सिखाना ही पड़ेगा। तू ऐसे नहीं मानेगा।
बुद्धूराम को अगले दो दिनों तक खाना नहीं दिया गया।
ओहो...अब मैं और ज्यादा भूख सहन नहीं कर सकता।
और मैं तुम्हें कुछ भी खाने को नहीं देने वाली....
बुद्धूराम अपने साथियों और सामान को छोड़कर घर से चल दिया।
अब मैं कहीं जाता हूं। किसी को मूर्ख बनाकर अपनी जीविका कमाऊंगा।

बुद्धूराम एक धनवान व्यक्ति के बंगले पर पहुंचा।
तुम कौन हो भाई...तुम्हें क्या चाहिए?
हूं...लगता है यह बहुत ही आलसी है। मुझे इसे सबक सिखाना चाहिए।
मैं पास के गांव का हूं। मेरा नाम बुद्धूराम है। मैं बहुत भूखा हूं। मेहरबानी करके मुझे कुछ खाने के लिए दो।
ठीक है, तुम्हें भोजन दिया जाएगा। लेकिन पहले पीने का पानी ले आओ।
मैं अभी जाता हूं। और तुरंत लेकर आता हूं।
हे भगवान! इतना गहरा!! इससे पानी निकालने में दो घंटे लग जाएंगे।
बुद्धूराम ने पानी खींचना शुरू किया।
पानी की बाल्टी में कई छेद हो रहे थे।
बाल्टी में एक बूंद पानी भी नहीं आया! ये सब इन दुष्ट छेदों के कारण हुआ है!

बुद्धूराम धनवान व्यक्ति के पास पहुंचा।
इसके पैंदे में काफी छेद हो रहे हैं।
तो क्या? एक लकड़ी का पट्टा काट लेता और इसके पैंदे में लगा देता।
वहां तुम्हें लकड़ी का पट्टा, छैनी-हथौड़ा और अन्य औजार मिल जाएंगे।
आह...! हे भगवान...! मेरी अंगुली....बाप रे बाप....
बुद्धूराम बाल्टी के छेद बंद कर बहुत ही मुश्किल से पानी खींचकर लाया।
आह...मुझे बहुत तेज भूख लग रही है।
मालिक! मैंने पानी भर दिया। मुझे बहुत भूख लगी है।
ठीक है! लेकिन पहले बाजार जाकर चावल ले आओ। इसके बाद हम खाना पकाएंगे।
पैदल मत जाओ। मेरी साइकिल ले जाओ।
ओहो!

हा...हा... मैंने साइकिल को पंचर कर दिया। उसका इसे पता भी नहीं चला।
बुद्धूराम बाजार से चावल खरीदकर ले आया।
साइकल का टायर पंचर था। मैं कुछ कर नहीं सका। लेकिन साइकिल को धीरे-धीरे ले आया।
हा...हा... वह आ रहा है!
Jingle Bell Creations
मालिक अब तो मैं भूख से मर ही जाऊंगा। मुझे खाने की आवश्यकता नहीं है। मुझे जाने दो।
हा...हा...तुम कहीं नहीं जाओगे। मैं तुम्हें खाना दूंगा। अब तुम काम करना सीख गये हो। अब तुम मेरे सेवक बनकर रह सकते हो।
भगवान का शुक्र है। मैं इसके लिए सहमत हूं।
(समाप्त)

ड्राइविंग सीट पर डॉग

न्यूजीलैंड के पशु विशेषज्ञ इन दिनों कु□ों को ड्राइविंग का प्रशिक्षण देने में जुटे हैं। उनका मानना है कि कु□ा आठ ह□तों में ड्राइविंग की मूलभूत जानकारी करने लगते हैं। शुरुआत में कु□ों को लकड़ी की गाड़ी में बैठना सिखाया गया। इसके बाद कु□ों को कार की स्टियरिंग को आगे के पैरों से संभालना सिखाया गया। उनके हिसाब से कार के ए□सलरेटर और ब्रेक में अतिरि□त पैडल जोड़े गए ताकि उनके पैर वहां तक आसानी से पहुंच सकें। विशेषज्ञों ने कु□ों को केवल इसलिए कार चलाने का प्रशिक्षण दिया ताकि लोगों को समझ में आए

श्वानों ने किया टूथब्रश

हांगकांग में तीन सौ से अधिक कु□ों को एक ही समय में ब्रश करवा कर एक रिकॉर्ड बनाने का प्रयास किया गया। इस आयोजन में फ्क्ख कु□ों के मालिकों ने हिस्सा लिया। उन्होंने तीन मिनट के समय में एक खास टूथब्रश और जैल के इस्तेमाल से अपने-अपने कु□ों के दांत साफ किये। यह आयोजन कु□ों के लिए एक कीटाणु रहित माहौल बनाने के लिए किया गया। लोग अपने कु□ों के बाल और उनके खान-पान का तो ध्यान रखते हैं, लेकिन उनकी दांतों की सफाई पर ध्यान नहीं देते। कु□ों के मालिकों-

पच्चीस लाख की भैंस!

यूं तो मुर्रा नस्ल की भैंस के कायल पूरी दुनिया में हैं। पर आंध्र प्रदेश के एक सरपंच ने इस प्रसिद्ध नस्ल की भैंस को मर्सिडीज कार से भी महंगी कीमत पर खरीदकर एक नया रिकॉर्ड बना दिया। रोहतक हरियाणा के किसान ने उन्हें ख्ब लाख रुपये में यह भैंस बेची। प्रदेश में अब तक किसी भी भैंस की इतनी कीमत नहीं लगी थी। इसकी खासियत है कि यह एक दिन में फ से फ्ख लीटर तक दूध देती है। कई प्रतियोगिताओं में भाग ले चुकी यह भैंस तीन लाख रुपए के इनाम जीत चुकी है। सिंघवा गांव के भ्भ वर्षीय किसान कपूर सिंह का कहना है कि उन्होंने इस भैंस को दो साल पहले ढाई लाख रुपये में खरीदी थी। तब से लेकर यह लगातार दुग्ध प्रतियोगिताओं और प्रदर्शनों में इनाम जीतती आ रही है। इसीलिए इसका नाम लक्ष्मी रखा गया। उसकी देखभाल के लिए समय-समय पर पशु चिकित्सकों व विशेषज्ञों से सलाह लेता रहा।

हालांकि कुछ पशु व्यापारी आंध्र प्रदेश के हनुमान जं□शन गांव के सरपंच राजीव को उनके घर लेकर पहुंचे। वह भैंस को बेचना नहीं चाहते थे, इसलिए उन्होंने इसकी कीमत ख्ब लाख मांगी ताकि वे उसे न खरीदें और लौट जाएं। पर राजीव को लक्ष्मी इतनी

उम्र हजार साल, अब तक जवान!

समोसा भला किसे नहीं प्रिय होगा। स्ने□स की बात हो तो समोसे के जिक्र के बिना बात अधूरी ही लगती है। यही कारण है कि जिस तरह भारतीयों में विदेशों से आए पिज्जा और बर्गर का क्रेज है, उसी प्रकार भारतीय समोसा भी विदेशों में फास्ट-फूड के रूप में काफी प्रसिद्ध है। यहां तक कि फिल्मों और राजनीति में भी समोसे को लेकर तमाम जुमले हैं।

फिल्मों और राजनीति से परे तमाम साहित्यिक-सांस्कृतिक गोष्ठियां, सरकारी आयोजन एवं कोई भी कार्यक्रम समोसे के बिना अधूरा है। ऐसे में इस स्ट□ड डीप फ्राई समोसे का स्वाद छोटे-बड़े सभी लोगों की जुबां पर है, तो हैरान होने की जरूरत नहीं।

समोसे के बारे में सबसे रोचक तथ्य यह है कि इसकी उम्र एक हजार साल हो चुकी है। पर यह अब भी उतना ही जवान है, जितना इतने साल पहले था। माना जाता है कि सर्वप्रथम दसवीं शता□दी में मध्य एशिया में समोसा एक व्यंजन के रूप में सामने आया था।

क्प-क्ब्वीं शता□दी में व्यापारियों के माध्यम से समोसा भारत पहुंचा। महान कवि अमीर खुसरो (वर्ष क्खप्प-क्फख्) ने एक जगह जिक्र किया है कि दिल्ली सल्तनत में उस दौरान मीट वाला घी में डीप फ्राई समोसा शाही परिवार के सदस्यों व अमीरों का प्रिय व्यंजन था।

क्ब्वीं शता□दी में भारत यात्रा पर आये इ□नबतूता ने मोह□मद बिन तुगलक के दरबार का वृ□ांत देते हुए लिखा कि दरबार में भोजन के दौरान मसालेदार मीट, मूंगफली

और बादाम भरकर तैयार किया गया लजीज समोसा परोसा गया, जिसे लोगों ने बड़े चाव से खाया। यही नहीं, क्म्वीं शता□दी के मुगलकालीन दस्तावेज आईने अकबरी में भी समोसे का जिक्र बकायदा मिलता है।

समोसे का यह सफर बड़ा निराला रहा है। समोसे की उम्र भले ही बढ़ती गई, पर पिछले एक हजार साल में उसकी तिकोनी आकृति में जरा भी परिवर्तन नहीं हुआ। आज समोसा भले ही शाकाहारी-मांसाहारी दोनों रूप में उपल□ध है, पर आलू के समोसों का कोई मुकाबला नहीं है, और यही सबसे ज्यादा पसंद भी किया जाता है। इसके बाद पनीर एवं मेवे वाले समोसे पसंद किये जाते हैं। अब तो मीठे समोसे भी बाजार में उपल□ध हैं।

वैसे तो समोसे का असली मजा उसे डीप फ्राई करने में है, पर पाश्चात्य देशों में जहां लोग कम तला-भुना पसंद करते हैं, वहां लोग इसे बेक करके खाना पसंद करते हैं। भारत विभिन्नताओं का देश है, सो हर प्रांत में समोसे के साथ वहां की खूबियां भी जुड़ती जाती हैं।

उ□ार प्रदेश व बिहार में आलू के समोसे खूब चलते हैं, तो गोवा में मांसाहारी समोसे ज्यादा लोकप्रिय हैं। पंजाबी समोसा खूब चटपटा होता है, तो चाइनीज □यूजीन पसंद करने वालों के लिए नूडल्स समोसे भी उपल□ध हैं।

बच्चों और बूढ़ों दोनों में समोसे के प्रति दीवानगी को भुनाने के लिए तमाम बहुराष्ट्रीय क□पनियां इसे फ्रोजन फूड के रूप में भी बाजार में प्रस्तुत कर

दिसम्बर-II, 2013

बालहंस

15-31 दिसम्बर, 2013

वैटिकन सिटी

वैटिकन सिटी यूरोप महाद्वीप में स्थित एक देश है। पृथ्वी पर सबसे छोटा, स्वतंत्र राज्य है। जिसका क्षेत्रफल केवल 108.7 एकड़ है। यह इटली के शहर रोम के अन्दर स्थित है। इसकी राजभाषा है लातिनी। ईसाई धर्म के प्रमुख सम्प्रदाय रोमन कैथोलिक चर्च का यही केन्द्र है, और इस सम्प्रदाय के सर्वोच्च धर्मगुरु पोप का निवास है।

यह नगर एक प्रकार से रोम का एक छोटा-सा भाग है। इसमें सेंट पीटर गिरजाघर, वैटिकन प्रासाद समूह, वैटिकन बाग तथा कई अन्य गिरजाघर सम्मिलित हैं। आकर्षक गिरजाघरों, मकबरों तथा कलात्मक प्रासादों के अतिरिक्त वैटिकन के संग्रहालय तथा पुस्तकालय अमूल्य हैं।

पोप के सरकारी निवास का नाम भी वैटिकन है। यह रोम नगर में, टाइबर नदी के किनारे, वैटिकन पहाड़ी पर स्थित है तथा ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक कारणों से प्रसिद्ध है। यहां के प्रासादों का निर्माण तथा इनकी सजावट विश्वस्तरीय कलाकारों द्वारा की गई है।

संत निकोलस से सेंटा क्लॉज तक

क्रिसमस का त्योहार हर साल 25 दिसम्बर को पूरी दुनिया में मनाया जाता है। यह त्योहार प्रेम व मानवता का संदेश तो देता ही है, साथ ही यह भी बताता है कि खुशियां बांटना ही ईश्वर की सच्ची सेवा है। सेंटा क्लॉज का बच्चों को गिफ्ट्स बांटना इसी बात का प्रतीक है।

जब-जब सेंटा क्लॉज की बात चलती है, तो मन में एक ऐसे व्यक्ति की छवि उभरती है, जो दानशील है, दयालु है और सबके चेहरे पर खुशियां बिखेरने के लिए, खासतौर पर नॉर्थ पोल से चलकर आता है। सेंटा केवल एक धर्म विशेष के नहीं बल्कि पूरी मानवता के जीवन्त प्रतीक हैं। सेंटा क्लॉज लाल व सफेद ड्रेस पहने हुए, एक वृद्ध मोटा पौराणिक चरित्र है, जो रेनडियर पर सवार होता है। सेंटा क्लॉज का नाम सभी बच्चे विशेष रूप से जानते हैं। हो..हो..हो.. कहते हुए लाल-सफेद कपड़ों में बड़ी-सी श्वेत दाढ़ी और बालों वाले, कंधे पर गिफ्ट्स से भरा बड़ा-सा बैग लटकाए, हाथों में क्रिसमस बेल लिए सेंटा क्लॉज बच्चों से बहुत प्यार करते हैं। बच्चों के प्यारे सेंटा, जिन्हें संत निकोलस, क्रिस क्रींगल, क्रिसमस पिता (फादर) भी कहा जाता है, जो केवल क्रिसमस वाले दिन ही आते हैं। इस दिन सेंटा क्लॉज बच्चों को चॉकलेट्स, गिफ्ट्स देकर बच्चों की मुस्कुराहट का कारण बन जाते हैं।

सेंटा क्लॉज से जुड़ी मान्यता

ऐसी मान्यता है कि साल भर सेंटा क्लॉज बच्चों के लिए खिलौने, कुकीज, केक, पाई, बिस्कुट, केंडी.... तैयार करवाते हैं। इसके बाद सेंटा गिफ्ट्स को एक बड़ी-सी झोली में भरकर क्रिसमस के पहले की रात यानी 24 दिसम्बर को अपने उड़ने वाले आठ रेनडियर वाले स्लेज पर बैठकर किसी बर्फीले जगह से आते हैं और चिमनियों के रास्ते घरों में प्रवेश करके सभी अच्छे बच्चों के लिए उनके सिरहाने उपहार छोड़ जाते हैं।

सेंटा के रेंडियरों के नाम हैं, 'रुडोल्फ, डेशर, डांसर, प्रेन्सर, विक्सन, डेंडर, ब्लिटजन, क्युपिड और कोमेट।' सेंटा क्लॉज खास तौर से क्रिसमस के त्योहार में बच्चों को खिलौने और तोहफे बांटने ही तो उत्तरी ध्रुव पर आते हैं, बाकी का समय वे लेप लैन्ड, फिनलैन्ड में रहते हैं।

बरसों पहले की बात है जब सेंटा क्लॉज और उनके साथी और मददगार एल्फों की टोली ने जादू की झिलमिलाती धूल, रेंडियरों पर डाली थी, उसी के कारण रेंडियरों को उड़ना आ गया।

सिर्फ क्रिसमस की रात के लिये ही इस मैजिक डस्ट का उपयोग होता है और सेंटा क्लॉज अपना सफर शुरू करें, उसके बस कुछ क्षणों पहले मैजिक डस्ट छिड़क कर, शाम को यात्रा का आरम्भ किया जाता है। बस फुर्र से रेंडियरों को उड़ना आ जाता है और वे क्रिसमस लाइट की स्पीड से उड़ते हैं, बहुत तेज। आखिर बच्चे जो उनका इन्तजार कर रहे होते हैं। हर बच्चा दूध का गिलास और 3-4 बिस्कुट सेंटा के लिए घर के एक कमरे में रख देता है। जब बच्चे गहरी नींद में सो जाते हैं और परियां उन्हें परियों के देश में ले चलती हैं, उसी समय सेंटा की रेनडियर से उड़ने वाली स्लेज हर बच्चे के घर पहुंच कर तोहफा रख फिर अगले बच्चे के घर निकल लेती है।

संत निकोलस

सेंटा क्लॉज शब्द की उत्पति डचसिंटर से हुई थी। सेंटा क्लॉज की प्रथा संत निकोलस ने चौथी या पांचवीं सदी में शुरू की। सेंटा का आधुनिक रूप 19वीं सदी से अस्तित्व में आया, उसके पहले ये ऐसे नहीं थे। आज से डेढ़ हजार साल पहले जन्मे संत निकोलस को असली सेंटा और सेंटा का जनक माना जाता है। हालांकि संत निकोलस और जीसस के जन्म का सीधा सम्बन्ध नहीं रहा है, फिर भी आज के समय में सेंटा क्लॉज क्रिसमस का अहम हिस्सा हैं। उनके बिना क्रिसमस अधूरा-सा लगता है।

संत निकोलस का जन्म तीसरी सदी (300 ए.डी.) में जीसस की मौत के 280 साल बाद तुर्किस्तान के मायरा नामक शहर में हुआ। वे एक रईस परिवार से थे। उन्होंने बचपन में ही अपने माता-पिता को खो दिया। बचपन से उनकी प्रभु यीशु में बहुत आस्था थी। मोनैस्ट्री में पले-बढ़े निकोलस 17 वर्ष की आयु में पादरी बन गए। निकोलस बहुत ही दयालु और परोपकारी थे। जरूरतमंदों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते थे। उनका उद्देश्य था कि क्रिसमस और नववर्ष के दिन गरीब-अमीर सभी प्रसन्न रहें। उन्हें बच्चों और नाविकों से बेहद प्यार था।

उन्हें गरीब और बेसहारा बच्चों को गिफ्ट्स देना बहुत अच्छा लगता था। वे अक्सर जरूरतमंदों और बच्चों को गिफ्ट्स देते थे। संत निकोलस को बच्चों से खास लगाव था, वे उन्हें बहुत प्रेम करते थे इसी वजह से बच्चों को हमेशा उपहार दिया करते थे।

संत निकोलस अपने उपहार आधी रात को ही देते थे, क्योंकि उन्हें उपहार देते हुए नजर आना पसंद नहीं था। वे अपनी पहचान लोगों के सामने नहीं लाना चाहते थे। इसी कारण बच्चों को जल्दी सुला दिया जाता। आज भी माना जाता है कि अगर बच्चे जल्दी नहीं सोते तो उनके सेंटा अंकल उन्हें उपहार देने नहीं आते हैं।

निकोलस धनी नहीं था, इसलिए उसके इस त्याग को देख कर लोग उसे 'सेंट निकोलस' नाम से संबोधित करने लगे। उसकी मृत्यु के बाद उस तरह की वेशभूषा में लोगों को जरूरी सामग्री बांटना कई लोगों की आदत बन गई। ये सब संत निकोलस कहलाये जाते थे। कालांतर में सेंट निकोलस नाम बदलकर 'सेंटा क्लॉज' हो गया।

कुल मिला कर कहा जाये तो 'सेंटा क्लॉज' उसी बात को प्रदर्शित करता है जो ईसा का संदेश था कि हर किसी को अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना चाहिये।

संत निकोलस की उदारता की कहानी

उनकी दानशीलता के बारे में कई तरह की कहानियां हैं। कहते हैं, तरह-तरह की चीजों को बैग में भर-भर कर वे खिड़कियों से बाहर फेंक देते थे, जिसका लाभ उठाते थे गरीब व असहाय लोग। संत निकोलस की दरियादिली की एक बहुत ही मशहूर कहानी है कि उन्होंने एक गरीब की मदद की। जिसके पास अपनी तीन बेटियों की शादी के लिए पैसे नहीं थे और मजबूरन वह उन्हें मजदूरी कराने के लिए भेज रहा था। तब निकोलस ने चुपके से उसकी तीनों बेटियों की सूख रही जुराबों में सोने के सिक्कों की थैलियां रख दीं और उन्हें लाचारी की जिंदगी से मुक्ति दिलाई। इन सिक्कों से ही उन लड़कियों की शादी अच्छे से हो गई।

बस तभी से क्रिसमस की रात दुनियाभर के बच्चे इस उम्मीद के साथ अपने मोजे बाहर लटकाते हैं कि सुबह उनमें उनके लिए गिफ्ट्स होंगे। दुनियाभर में इससे मिलती-जुलती परम्पराएं हैं। इसी प्रकार फ्रांस में चिमनी पर जूते लटकाने की प्रथा है।

हॉलैंड में बच्चे सेंटा के रेंडियर्स के लिए अपने जूते में गाजर भर कर रखते हैं। हंगरी में बच्चे खिड़की के नजदीक अपने जूते रखने से पहले खूब चमकाते हैं, ताकि सेंटा खुश होकर उन्हे उपहार दे। उपहार पाने की यह परम्परा सारी दुनिया में प्रचलित है। इसी प्रचलन से उन्हे बच्चों का सन्त कहा जाने लगा।

शेष पृष्ठ 32 पर...

पृष्ठ 31 का शेष...

सेंटा क्लॉज का नाम

सेंटा का आज जो प्रचलित नाम है वह निकोलस के डच नाम सिंटर क्लास से आया है, जो बाद में सेंटा क्लॉज बन गया। जीसस और मदर मैरी के बाद संत निकोलस को ही इतना सम्मान मिला। सन् 1200 से फ्रांस में 6 दिसम्बर को निकोलस दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। क्योंकि इस दिन संत निकोलस की मृत्यु हुई थी। अमेरिका में वर्ष 1773 में पहली बार सेंटा 'सेंट ए क्लॉज' के रूप में मीडिया से रूबरू हुए। सत्रहवीं सदी में इसका अमेरिकी वर्जन सामने आया- सेंटा क्लाउस। क्लीमेंट मूर की नाइट बिफोर क्रिसमस में वर्ष 1822 ईस्वी में छपे सेंटा के कार्टून ने दुनियाभर के लोगों का ध्यान खींच लिया। जब थॉमस नैस्ट नामक पॉलिटिकल कार्टूनिस्ट ने हार्पर्स वीकली के लिए एक इलस्ट्रेशन तैयार किया, जिसमें सफेद दाढ़ी वाले सेंटा क्लाउस को लोकप्रिय शक्ल मिली। धीरे-धीरे सेंटा की शक्ल का उपयोग विभिन्न ब्रांड्स के प्रचार के लिए किया जाने लगा।

आधुनिक युग के सेंटा

आज के आधुनिक युग के सेंटा का अस्तित्व वर्ष 1930 में आया। हैडन संडब्लोम नामक एक कलाकार कोकाकोला के एड में सेंटा के रूप में 35 वर्षों (1931 से लेकर 1964 तक) तक दिखाई दिया। सेंटा का यह नया अवतार लोगों को बहुत पसंद आया और आखिरकार इसे सेंटा का नया रूप स्वीकारा गया, जो आज तक लोगों के बीच काफी मशहूर है। इस प्रकार धीरे-धीरे क्रिसमस और सेंटा का साथ गहराता चला गया और सेंटा पूरे विश्व में मशहूर होने के साथ-साथ बच्चों के चहेते बन गए।

क्रिसमस आधुनिक परिवेश में 19वीं सदी की देन है। क्रिसमस पर आतिशबाजी 19वीं सदी के अन्त में टोम स्मिथ द्वारा शुरू की गई थी। सन् 1844 में प्रथम क्रिसमस कार्ड बनाया गया था, जिसका प्रचलन सन् 1868 तक सर्वत्र हो गया। वर्ष 1821 में इंग्लैण्ड की महारानी ने क्रिसमस ट्री में देव प्रतिमा रखने की परम्परा को जन्म दिया था।

सेंटा का पता

आज भी ऐसा कहा जाता है कि सेंटा अपनी पत्नी और बहुत सारे बौनों के साथ उत्तरी ध्रुव में रहते हैं। वहां पर एक खिलौने की फैक्ट्री है जहां सारे खिलौने बनाए जाते हैं। सेंटा के ये बौने सालभर इस फैक्ट्री में क्रिसमस के खिलौने बनाने के लिए काम करते हैं। आज विश्वभर में सेंटा के कई पते हैं जहां बच्चे अपने खत भेजते हैं। लेकिन उनके फिनलैंड वाले पते पर सबसे ज्यादा खत भेजे जाते हैं। कई स्थानों पर सेंटा के पोस्टल वॉलेन्टियर रहते हैं, जो सेंटा के नाम आए इन खतों का जवाब देते हैं। देश-विदेश के कई बच्चे सेंटा को खत की जगह ई-मेल भेजते हैं। जिनका जवाब उन्हें मिलता है और क्रिसमस के दिन उनकी विश पूरी की जाती है।

क्यों कहा जाता है 'क्रिसमस'

क्रिसमस भगवान ईसा मसीह (जिन्हें यीशु के नाम से भी पुकारा जाता है) के जन्मदिवस के रुप में मनाया जाता है। 'क्रिसमस' शब्द 'क्राइस्ट्स और मास' दो शब्दों के मेल से बना है, जो मध्यकाल के अंग्रेजी शब्द 'क्रिस्टेमसे' और पुराने अंग्रेजी शब्द 'क्रिस्टेसमैसे' से नकल किया गया है। ईस्वी सन 1038 से इसे 'क्रिसमस' कहा जाने लगा। इसमें 'क्रिस' का अर्थ ईसा मसीह और 'मस' का अर्थ ईसाइयों का प्रार्थनामय समूह या 'मास' है।

जीसस का जन्म : ऐसी मान्यता है कि पहला क्रिसमस रोम में 336 ईस्वी में मनाया गया था। ईसाई पौराणिक कथा के अनुसार, प्रभु ने मैरी नामक एक कुंवारी लड़की के पास गैब्रियल नामक देवदूत भेजा था। गैब्रियल ने मैरी को बताया कि वह प्रभु के पुत्र को जन्म देगी तथा बच्चे का नाम जीसस रखा जायेगा। वह बड़ा होकर राजा बनेगा, तथा उसके राज्य की कोई सीमाएं नहीं होंगी। आधी रात को जीसस ने गौशाला में जन्म लिया। जिस रात को जीसस का जन्म हुआ, उस समय लागू नियमों के अनुसार अपने नाम पंजीकृत कराने के लिए मैरी और जोसफ बेथलेहेम जाने के लिए रास्ते में थे। उन्होंने एक अस्तबल में शरण ली, जहां मैरी ने आधी रात को यीशु को जन्म दिया तथा उसे एक नांद में लिटा दिया। इस प्रकार प्रभु के पुत्र यीशु का जन्म हुआ।

क्रिसमस ट्री की कहानी : क्रिसमस पर घर-घर और प्रत्येक चर्च में सजने वाला क्रिसमस ट्री आज पूरे विश्व में मशहूर हो चला है। रंग-बिरंगी सजावटों, रोशनियों, गिफ्ट्स से सजा-धजा यह क्रिसमस ट्री अपना अद्भुत आकर्षण पेश करता है। माना जाता है कि क्रिसमस ट्री सजाने की परम्परा की शुरुआत हजारों साल पहले उत्तरी यूरोप से हुई थी। पहले के समय में क्रिसमस ट्री गमले में रखने की जगह घर की सीलिंग में लटकाये जाते थे। फर के अलावा लोग चैरी के वृक्ष को भी क्रिसमस ट्री के रूप में सजाते थे। या फिर लकड़ी के पिरामिड को एप्पल और अन्य सजावटों से इस प्रकार सजाते थे कि यह क्रिसमस ट्री की तरह लगे, क्योंकि क्रिसमस ट्री का आकार भी पिरामिड के जैसा ही होता है।

ऐसा माना जाता है कि संत बोनिफेस इंग्लैण्ड को छोड़ कर जर्मनी चले गये। जहां उनका उद्देश्य जर्मन लोगों को ईसा मसीह का संदेश सुनाना था। इस दौरान उन्होंने पाया कि कुछ लोग ईश्वर को संतुष्ट करने के लिये ओक वृक्ष के नीचे एक छोटे बालक की बलि दे रहे थे। गुस्से में आकर संत बोनिफेस ने वह ओक वृक्ष कटवा डाला और उसकी जगह फर का नया पौधा लगवाया, जिसे संत बोनिफेस ने प्रभु यीशु मसीह के जन्म का प्रतीक माना और उनके अनुयायिओं ने उस पौधे को मोमबत्तियों से सजाया। तभी से क्रिसमस पर क्रिसमस ट्री सजाने की परंपरा चली आ रही है।

कैरोल गीतों में क्रिसमस का उल्लास : दुनिया को शांति और अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाले प्रभु यीशु मसीह के जन्मदिन क्रिसमस से ठीक पहले उनके संदेशों को भजनों (कैरोल) के माध्यम से घर-घर तक पहुंचाने की प्रथा को विश्व के विभिन्न हिस्सों में 'गो कैरोलिंग दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन लोग रंग-बिरंगे कपड़े पहन कर एक-दूसरे के घर जाते हैं और भजनों के माध्यम से प्रभु के संदेश का प्रचार-प्रसार करते हैं। कैरोल एक तरह का भजन होता है, जिसके बोल क्रिसमस या शीत ऋतु पर आधारित होते हैं।

ये कैरोल क्रिसमस से पहले गाये जाते हैं। कहा जाता है कि कैरोल गाने की शुरुआत जीसस के जन्म के साथ हुई। प्रभु का जन्म जैसे ही एक गौशाला में हुआ, वैसे ही स्वर्ग से आये दूतों ने उनके सम्मान में कैरोल गाना शुरू कर दिया था। नगालैंड, मिजोरम, मणिपुर समेत समूचे पूर्वोत्तर भारत में लोग, विशेषकर युवा बेहद उत्साह के साथ टोलियों में निकलते हैं और रातभर घर-घर जाकर कैरोल गाते हैं। कैरोल गाने के बाद लोग चॉकलेट और मीठे बिस्कुट खाकर उत्सव मनाते हैं।

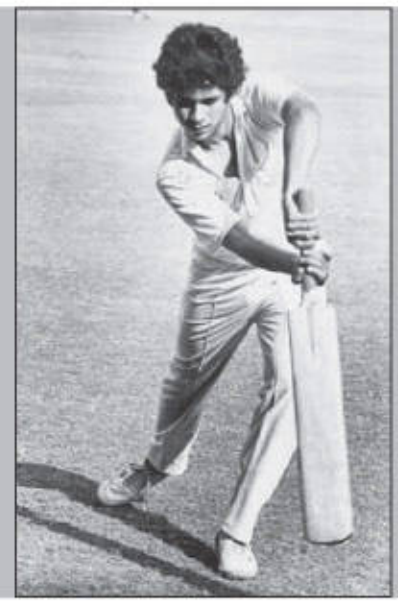

सचिन रमेश तेंदुलकर *का जन्म 24 अप्रेल 1973 को मुम्बई में हुआ। वर्ष 1989 में अन्तरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण के पश्चात वे बल्लेबाजी में कई कीर्तिमान स्थापित कर चुके हैं। उन्होंने टेस्ट व एक दिवसीय क्रिकेट, दोनों में सर्वाधिक शतक व रन अर्जित किये हैं। उन्होंने अपना पहला प्रथम श्रेणी क्रिकेट मैच मुंबई के लिये 24 वर्ष की उम्र में खेला। राजापुर के मराठी ब्राह्मण परिवार में जन्मे सचिन का नाम उनके पिता रमेश तेंदुलकर ने उनके चहेते संगीतकार सचिन देव बर्मन के नाम पर रखा था। उनके बड़े भाई अजीत तेंदुलकर ने उन्हें खेलने के लिये प्रोत्साहित किया था। सचिन के एक भाई नितिन तेंदुलकर और एक बहन सविता तेंदुलकर भी हैं।*

सचिन की जिंदगी की कुछ जानी-अनजानी बातें

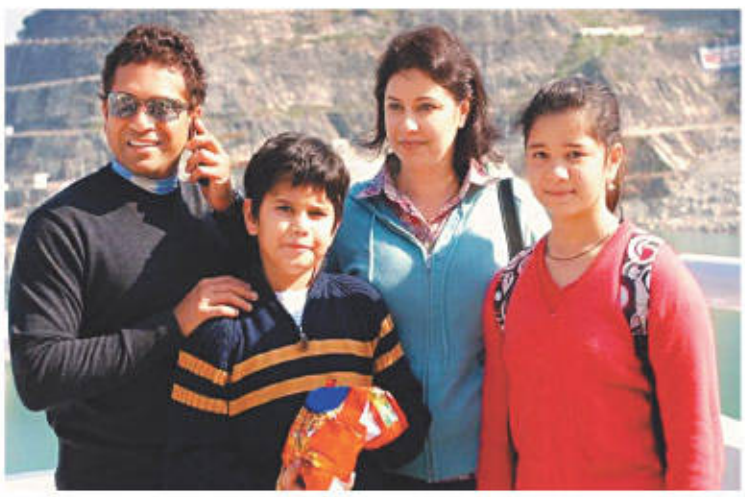

क्रिकेट के 'भगवान' कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर ने क्रिकेट के तीनों फॉर्मेट से संन्यास ले लिया है। क्रिकेट के इस सबसे बड़े सितारे के बारे में कई ऐसी बाते हैं, जो आप नहीं जानते। आइए आपको बताते हैं सचिन की जिंदगी का अनजाना, अनदेखा पहलू...

- सचिन का नाम पुराने जमाने के मशहूर संगीतकार सचिन देव बर्मन के नाम पर रखा गया है।
- सचिन तेंदुलकर के घर का नाम तेंदुलिया है।
- जब सचिन ने सबसे पहला टूर पाकिस्तान (वर्ष क-त्त-) का किया था तब उनके बड़े भाई अजीत तेंदुलकर उनके साथ गए थे।
- सचिन को पहली शेविंग क्रीम (पॉमोलिव) उनके फास्ट फ्रेंड और पूर्व क्रिकेटर सलिल अंकोला ने दी।
- पहला इंग्लिश विलो का क्रिकेट बैट दिलीप वेंगसरकर ने दिया।
- अपनी पहली कमाई से अपने पिता रमेश तेंदुलकर को आर्मचेयर भेंट की।
- थर्ड अंपायर द्वारा आउट दिए जाने वाले सचिन पहले बैट्समैन हैं।
- पत्नी अंजलि से वर्ष क--' में मिले थे।
- क्त्र साल की उम्र में अपनी पहली कार खरीदी, नीले रंग की मारुति-त्त, लेकिन इस कार से अपने दोस्तों को बांद्रा स्टेशन छोड़ने जाते व□त उन्हें डर था कि कहीं उनका चालान न हो जाए।
- किसी बढ़िया शॉट के लिए सचिन 'चु□मा शॉट' श□द का इस्तेमाल करते हैं।
- वर्ष क--' में इंग्लैण्ड दौरे पर मनोज प्रभाकर से तैराकी सीखी, सिर्फ आधे घंटे में।
- सचिन कभी-कभी मेहमानों के लिए खुद ही चाय बनाते हैं।
- सचिन को बैंगन का भर्ता बनाना आता है।
- उन्हें घड़ियां बेहद पसंद हैं। सचिन के पास भ से अधिक घड़ियों का □ले□शन है, जिनमें देशी और विदेशी दोनों शामिल हैं।
- उनके हेल्मेट और किट बैग पर तिरंगे का स्टिकर लगा है।
- टेस्ट मैच का पहला अनुभव इतना कठिन था कि सचिन को लगा कि वह कभी टेस्ट क्रिकेट नहीं खेल पाएंगे।
- फैसलाबाद टेस्ट में इमरान खान की जिस इनस्विंगर बॉल पर सचिन आउट हुए, उसके लिए सचिन ने कहा कि 'फुट भर आत आला' यानी एक फुट अंदर आई...।
- सचिन जब छोटे थे, तब उन्हें क्रिकेट के आंकड़ों में ज्यादा दिलचस्पी नहीं थी।
- उनकी पसंदीदा फिल्म है, 'जाने भी दो यारो।'
- सचिन को ए□शन फिल्में काफी पसंद हैं।
- रणजी, ईरानी और दलीप ट्रॉफी में अपने पहले मैचों में ही शतक जड़े थे सचिन ने।
- सचिन फॉर्मूला वन के शौकीन हैं और माइकल शुमाकर के फैन हैं।

वर्ष 1995 में सचिन का विवाह अंजलि से हुआ। सचिन के दो बच्चे सारा व अर्जुन हैं। सचिन ने शारदाश्रम विद्या मंदिर में अपनी शिक्षा ग्रहण की। वहीं पर उन्होंने कोच रमाकांत अचरेकर के सान्निध्य में अपने क्रिकेट जीवन की शुरुआत की।

23 दिसंबर 2013 को सचिन ने वन-डे क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की। लेकिन बड़ा दिन तब आया जब उन्होंने टेस्ट क्रिकेट से भी संन्यास की घोषणा कर दी। टेस्ट क्रिकेट का अंतिम मैच उन्होंने हाल ही मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में खेला।

सचिन कहते थे-

Enjoy the game and chase your dreams.

- एक ऐसा भी व□त था, जब सचिन एक ही बार में आठ वड़ा पाव खा जाते थे।
- सचिन पहले फास्ट बोलर बनना चाहते थे और इसके लिए एमआरएफ पेस एकैडमी भी गए, जहां डेनिस लिली ने उनसे बोलिंग की बजाय बैटिंग पर ध्यान देने के लिए कहा।
- सचिन कभी-कभी अपने स्कूल शारदा आश्रम की टीम के लिए बोलिंग की शुरुआत करते थे।
- सचिन के किट बैग में उनकी बेटी सारा और अर्जुन द्वारा बनाया एक कॉर्ड रहता है जिस पर लिखा है- ऑल द बेस्ट पापा।
- सचिन आज भी अपनी मां रजनी के पांव छुए बगैर घर से नहीं निकलते।
- सचिन को पतंग उड़ाने का शौक है।
- सचिन खाने के काफी शौकीन हैं। सलिल अंकोला के साथ वह ज्यादा खाने की शर्त लगाते थे और हमेशा जीत जाते थे।
- सचिन अपने क्रिकेट के सामान को लेकर काफी पजेसिव हैं। उनका बैट, पैड या कोई और चीज कोई छुए, उन्हें पसंद नहीं।
- सचिन को अपने बच्चों को रात में कहानियां सुनाना अच्छा लगता है। उनकी कहानियों में रोहन नाम का काल्पनिक पात्र है। यह नाम उन्होंने ही रखा है।
- सचिन गणेश भगवान के भ□त हैं और उन्होंने अपने घर में उनकी कई प्रतिमाएं रखी हैं।
- टीवी पर सचिन को डिस्कवरी चैनल देखना बेहद पसंद है।
- वर्ष क-त्त्र विश्वकप के दौरान वानखेड़े स्टेडियम में भारत और जि□बा□वे के बीच खेले गए मैच में सचिन 'बॉल-बॉय' थे। उस समय वे क्ब साल के थे।
- वर्ष क-त्त में ब्रेबॉर्न स्टेडियम में खेले गए एक प्रै□टस मैच में सचिन तेंदुलकर ने पाकिस्तानी टीम के लिए स□स्टीट्यूट के तौर पर फील्डिंग की थी।

- बचपन में यदि सचिन नेट्स में पूरा सत्र बिना आउट हुए खेल लेते, तो उनके कोच रमाकांत अचरेकर उन्हें एक सि□का देते थे। सचिन के पास ऐसे तेरह सि□के हैं।
- बचपन में सचिन तेंदुलकर क्रिकेट के अपने साजो-सामान के साथ सोया करते थे।
- क्रिकेट के मैदान में हमेशा शांत दिखने वाले सचिन स्कूल में अ□सर अपने साथियों को परेशान किया करते थे।
- वर्ष क--भ में सचिन तेंदुलकर नकली मूंछ-दाढ़ी और चश्मा लगाकर वर्ली के सत्यम सिनेमा में 'रोजा' फिल्म देखने के लिए भेष बदल कर गए थे। लेकिन सिनेमा हॉल में नकली सामान गिर गया और सभी ने उन्हें पहचान लिया।
- बचपन में बेहद शरारती रहे सचिन बांद्रा ईस्ट के 'साहित्य सहवास' के गलियारे से बहने वाली पानी की धारा में से छोटी मछलियां पकड़ा करते थे।
- सचिन तेंदुलकर सौरव गांगुली को 'बाबू मोशाय' कहते हैं और गांगुली उन्हें 'छोटा बाबू' कहकर पुकारते हैं।
- शरारतें करने के लिए मशहूर सचिन ने एक बार सौरव गांगुली के कमरे में पानी का पाइप फेंककर नल खोल दिया था।
- युवाकाल में सचिन अपने कोच के साथ अ□यास करते थे। उनके कोच स्ट□प्स पर एक रुपए का सि□का रख देते, और जो गेंदबाज सचिन को आउट करता, वह सि□का उसी को मिलता था। यदि सचिन बिना आउट हुए पूरे समय बल्लेबाजी करने में सफल हो जाते, तो ये सि□का उनका हो जाता। सचिन के अनुसार उस समय उनके द्वारा जीते गए क्प सि□के आज भी उन्हें सबसे ज्यादा प्रिय हैं।
- भारत सरकार की तरफ से सचिन तेंडुलकर को राजीव गांधी खेलरत्न और अर्जुन अवॉर्ड से स□मानित किया गया है। इसके अलावा उन्हें पद्मविभूषण भी मिल चुका है।

उन्हें 'भारत रत्न' देने की घोषणा

CHRISTMAS Quotes

Gifts of time and love are surely the basic ingredients of a truly merry Christmas.

The best things in life aren't things

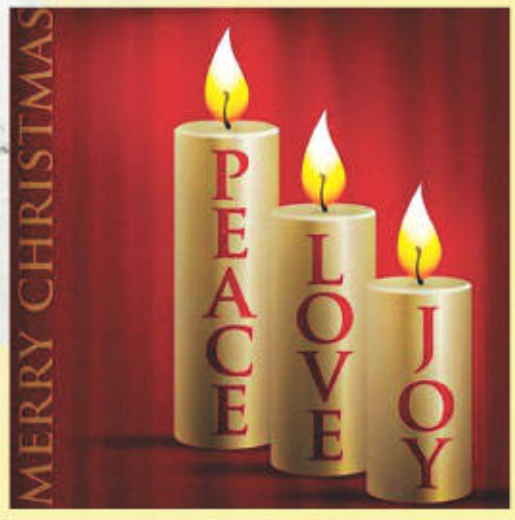

Christmas is in your heart, not under the tree.

Corner Quote Santa saw your facebook page. Now you re on the naughty list and you get nothing.

Lesson- 195

बोलो अंग्रेजी

बच्चो, तुहें रोजाना अपने घर-स्कूल में अंग्रेजी बोलना चाहिए। इससे अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही तुहारी अंग्रेजी बोलने में होने वाली हिचकिचाहट भी दूर होगी और कॉन्फिडेंस भी बढ़ेगा। यहां तुहें रोजाना घर-बाहर बातचीत में काम में आने वाले वाय दिए जा रहे हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और अयास करें।

क. मुझे बुखार सा प्रतीत हो रहा है।
I'm feeling fevrish.
आइ'म फीलिंग फीवरिश।

ख. उससे मेरा परिचय करा दो।
Introduce me to him.
इंट्रोड्यूस मी टु हिम।

फ. उसे दिल की बीमारी है।
He has heart trouble.
ही हैज हार्ट ट्रबल।

ब. कुनैन मलेरिया की निश्चित औषधि है।
Quinine is a sure remedy of malaria.
विनिन इज ए श्योर रैमेडी ऑफ मलेरिया।

भ. दवाई कड़वी होती है, परन्तु रोगी को ठीक करती है।
Medicine is bitter, it cures the patient.
मैडिसन इज बिटर, इट योरस द पेशैंट।

म. या तुहें थर्मामीटर देखना आता है?
Can you read thermometre?
कैन यू रीड थर्मामीटर?

य. शहर में चेचक और बुखार बहुत जोर पर है।
Small pox and fever are raging havoc in the city.
स्मॉल पॉस एंड फीवर आर रेजिंग हैवक इन द सिटी।

र. आपका भाई कब से बुखार से ग्रसित है?
How long has your brother been down with fever?
हाउ लॉंग हैज योअर ब्रदर बीन डाउन विद फीवर?

-. व्यायाम सभी रोगों की अचूक दवा है।
Exercise is a panacea for all physical ailments.
ऐसरसाइज इज ए पैनेसिआ फार ऑल फिजिकल एलमेंट्स।

क. आजकल बुखार जोर पर है, डॉटरों की चांदी है।
Now a days fever is raging violently and the doctors are minting money.
नाउ उ डेज फीवर इज रेजिंग वाइअलेंटिली एंड द डॉटर्स आर मिन्टिंग मनी।

Word-Power

Quick-जल्दी	Quiet-बिलकुल
Auspicious-शुभ	Gently-शिष्टता से
Awesome-विस्मयकारी	Ghost-भूत
Awful-भयानक	Quit-छोड़ना

Antonyms

Safe-सुरक्षित	Dangerous-खतरनाक
Same-समान	Different-अगल
Satisfaction-संतुष्ट	Regret-पश्चाताप
Scream-चिल्लाना	Whisper-धीरे-धीरे बोलना

Synonyms

Liberal- उदार, दानी, साफ, सीधा,आजाद
Liberalist, Progressive, Broad, Large-Minded, Tolerant, Free, Loose, Big, Bighearted, Bounteous, Bountiful, Freehanded, Handsome

अंग्रेजी- हिन्दी वायांश

(English-Hindi Phrases)

Beg to state-निवेदन है।
Before issue-जारी करने से पहले।
Backward reference- पूर्व सन्दर्भ।
Background of the case- मामले की पृष्ठभूमि।
Ban on creation of posts- पदों के सृजन पर रोक।

(अगले अंक में जारी)

राहुल (मम्मी से)- मम्मी अपनी जीभ से जरा इस रस्सी को काट देना। मम्मी ने कहा- पागल हो गया है क्या, जीभ से भी भला कोई रस्सी काटता है? राहुल ने कहा- लेकिन पापा तो कह रहे थे कि आपकी जीभ कैंची की तरह चलती है।

टुन्नू ट्रैफिक पुलिस के इंटरव्यू के लिए गया-
इंटरव्यूअर- एक आदमी गधे की सवारी करता हुआ रोड से जा रहा है और उसने हेलमेट नहीं पहना है तो क्या आप उसे दण्डित करेंगे?
संता- नहीं।
इंटरव्यूअर- क्यों?
संता- क्योंकि हेलमेट टू व्हीलर के लिए जरूरी है, फोर व्हीलर के लिए नहीं।

दांतों का डॉक्टर- तुम पहले क्या सुनना चाहोगे, अच्छी खबर या बुरी खबर?
मरीज- अच्छी खबर।
डॉक्टर- तुम्हारे दांत बिल्कुल ठीक है।
मरीज- तो फिर बुरी खबर क्या है?
डॉक्टर- तुम्हारे मसूड़े इतने खराब हो चुके हैं कि मुझे तुम्हारे सारे दांत निकालने पड़ेंगे।

अभिनेता की पत्नी ने कहा-फिल्मों में नौकर बनते हो और घर में तुम्हें झाड़ू लगाते शर्म आती है। अभिनेता पति बोला- पिछली फिल्म में मुझे नौकर बनने के 20 लाख रुपए मिले थे।

एक मरीज की आंखें कुछ ज्यादा ही कमजोर थीं। एक भी अक्षर पढ़वा पाने में नाकाम डॉक्टर ने हारकर मरीज से आंखों के ठीक सामने थाली अड़ाकर पूछा- क्या यह चीज तुम्हें दिखती है? मरीज ने कहा- जी, दिखती है। डाक्टर ने पूछा- क्या है? मरीज ने कहा- ठीक-ठीक नहीं बता सकता, चवन्नी है कि अठन्नी है।

संता अपने बेटे को खरीददारी सिखा रहा था। संता दुकानदार बना और उसका बेटा खरीददार।
बेटा-एक लीटर आलू देना।
संता- नहीं बेटा, आलू किलो में आता है।
बेटा- अच्छा तो एक किलो सोना दे दो।
संता- नहीं बेटा, सोना किलो में खरीदने की चीज नहीं है, वह तो तोले के हिसाब से बिकता है, वह भी ज्वेलर्स के यहां।
आखिर संता उकता गया और बोला कि मैं खरीददार बनता हूं। और तुम दुकानदार बनो।
संता- एक किलो गुड़ देना।
बेटा- किसमें दूं? बोतल लाए हैं?

संता बंता और उनका एक दोस्त पागलखाने में मरीज थे। एक दिन उनके डॉक्टर ने फिटनेस टेस्ट लेना था और तीनों को टेस्ट के लिए बुलाया गया। अगर वे इस टेस्ट को पास कर लेते तो उन्हें पागलखाने से सदा के लिए स्वस्थ घोषित करके भेज दिया जाना था। अगर स्वस्थ न होते तो अगले पांच साल तक वहीं उसी पागलखाने में रखना था। डॉक्टर टेस्ट के लिए उन्हें एक खाली स्विमिंग पूल के पास ले गया और उनके दोस्त को स्विमिंग पूल में कूदने को कहा, उसने पूल में छलांग मार दी और उसके दोनों बाजू टूट गए उसके बाद बंता ने छलांग दी और उसकी दोनों टांगें टूट गयीं। जब संता की बारी आयी तो उसने छलांग लगाने से मना कर दिया। डॉक्टर ने कहा, 'अरे, मुबारक हो संता, तुम जा सकते हो। अब तुम आजाद हो। पर एक बात तो बताओ तुमने स्विमिंग पूल में छलांग क्यों नहीं मारी?' संता ने जवाब दिया, 'डॉक्टर साहब मुझे तैरना ही नहीं आता!'

बबलू (राम से)- यार, तुम छोटी-छोटी बातों पर लाल-पीले हो जाते हो।
राम- क्या करूं, मेरा जन्म ही होली के दिन हुआ था।

संता की शादी हुई, पर अभी तक उसे कोई नौकरी नहीं मिल पायी थी। वो बेहद आलसी था। एक दिन उसकी बीवी ने बहुत गुस्से होते हुए कहा, 'मुझे तो बहुत शर्म आती है। जिस तरह की जिन्दगी हम जी रहे हैं। मेरे पापा ने हमारे घर का किराया दिया। मां ने घर में खाने-पीने का सामान भर दिया। मेरी बहन ने कपड़े दिए और चाचा-चाची ने कार खरीद कर दी। मुझे तो बहुत शर्म आती है।'
संता ने सोफे पर लोटपोट होते हुए कहा, 'डार्लिंग शर्म तो तुम्हें आनी ही चाहिए, क्योंकि जो तुम्हारे दो भाई हैं, बेकार में घूमते रहते हैं उन्होंने तो हमें फूटी कौड़ी भी नहीं दी।'

ये हैं विश्व के सुंदर चर्च

सेंट पॉल्स कैथेड्रल, लंदन

यह चर्च बेहद खूबसूरत है। पर्यटक इस चर्च को देखना नहीं भूलते। प्रिंसेज ऑफ वेल्स (अब स्वर्गीय) डायना और प्रिंस चार्ल्स की शादी इसी चर्च में हुई थी।

कैथेड्रल ऑफ आवर लेडी ऑफ चार्टर्स

फ्रेंच गोथिक वास्तुशिल्प का यह बेहद सुंदर नमूना है। इस कैथेड्रल की दो अलग-अलग मीनार हैं। एक तो क्ष मीटर प्लेन पिरामिड है, तो दूसरी क्क्फ मीटर ऊंची आकर्षक मीनार।

उल्म कैथेड्रल, जर्मनी

यह विश्व का सबसे ऊंचा चर्च है, जिसमें ऊपर जाने के लिए स्त्रत्त्म सीढ़िया हैं। क्ब्फ मीटर ऊंचाई पर जाने पर आप पूरे शहर का आकर्षक नजारा देख सकते हैं। साफ मौसम में तो एल्प्स भी दिखाई देता है। शायद यही वजह है कि यहां पर्यटकों की खूब भीड़ लगी रहती है।

ड्यूमो दी मिलानो, इटली

यह चर्च गोथिक स्टाइल का बना हुआ है।

इसे वर्ष क्फ्त्म में शुरू किया गया था। सन् क्भ्स्त्रख में सेंट कार्लो बोरोमेयो ने इस चर्च को नया रूप दिया। इसके मु□य मीनार का निर्माण वर्ष क्स्त्रम्– में हुआ, जो क– मीटर से ज्यादा ऊंची है। इसके टॉप पर मैडोना की गोल्डन लैमिनेट मूर्ति है। इसका निर्माण वर्ष क्त्क्फ में पूरा हुआ। यह दुनिया की बड़े कैथेड्रल में से है। इसमें करीब फ्ब मूर्तियां हैं।

कोलोन डोम, जर्मनी

यह कैथेड्रल उ□ार पश्चिमी जर्मनी का मु□य आकर्षण है। इस चर्च में भ्क सीढ़ियां हैं और ऊपर जाने पर नजारा अद्‌भुत है। इसकी भव्य दीवारों पर धार्मिक पेंटिंग, मूर्तियां और सुंदर न□काशी की गई है। यहां भगवान ईशु की बेहद खूबसूरत बाल प्रतिमा भी है।

द पैंथियोन, रोम

पुराने रोम में इस कथेड्रल को मंदिर के तौर पर

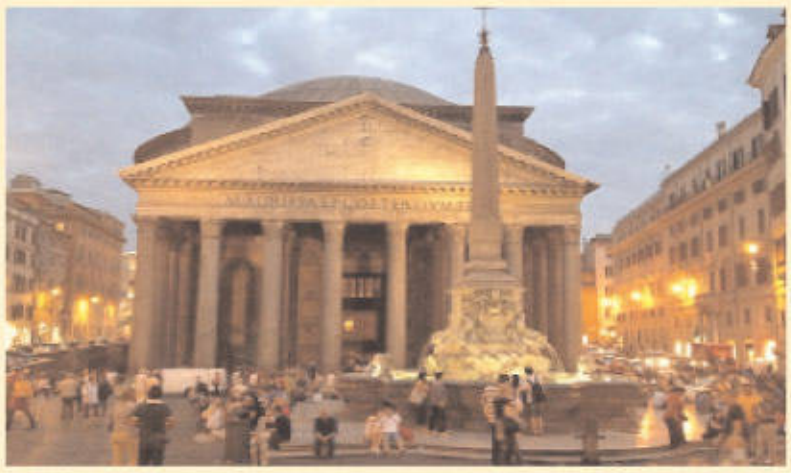

द बैसिलिका ऑफ आवर लेडी ऑफ पीस, आयवरी कोस्ट

इसे विश्व का सबसे बड़ा चर्च माना जाता है। इसका निर्माण सन् क-त्त्भ से क-त्त- के बीच किया गया। इसके निर्माण में करीब फ मिलियन डॉलर की लागत आई।

टाउन चर्च, फूमे, फ्रांस

यह इस क्षेत्र की सबसे ऊंची इमारत है। इस कैथेड्रल की विशेषता यह है कि यहां लगी घंटियां हर क्भ मिनट में बजती हैं। यही नहीं, प्रार्थना के समय में लंबी धुन भी बजती है, जो सुनने में काफी मधुर है।

सेंट स्टीफन बेसेलिका, हंगरी

इस कैथेड्रल की इमारत पीले रंग की है, जो बेहद आकर्षक और भव्य है। इस चर्च का ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत मह□व है और इसके साथ कई प्रसिद्ध कहानियां भी जुड़ी हुई हैं।

ऑल्ड चर्चेज, स्विट्जरलैंड

स्विट्जरलैंड के रीनफेल्डन शहर में कई पुराने चर्च हैं। आपको लग रहा होगा कि ये चर्च सौ साल पुराने होंगे तो आप गलत हैं। यहां के कुछ चर्च फ, ब और भ साल पुराने भी हैं। सबसे पुराना

दुनिया के देश फिलीपींस

स्पेनिश नाविक मैगेलन ने वर्ष क्भ्ख्ब में खोजे जाने के बाद फिलीपींस स्पेन के अधिकार में रहा। वर्ष क्त्-त्त में स्पेन-अमरीका युद्ध के बाद यह अमरीका के अधिकार में चला गया। द्वितीय विश्व युद्ध में जापान के अधिकार के बाद वर्ष क-ब्ब में इसे स्वतंत्रता मिल गई। वर्ष क-त्त्त्र में यहां नए संविधान का निर्माण हुआ।

आधिकारिक नाम- रिपा□लका ना फिलीपिनास।

राजधानी- मनीला। **मुद्रा-** पेसो। **मानक समय-** जी एम टी से त्त घंटे आगे। **भाषा-** फिलीपीनो, अंग्रेजी (दोनों आधिकारिक)।

कुल जनसं□या- -त्त,म्फ,¯। **क्षेत्रफल-** फ,¯,¯ वर्ग किलोमीटर। **स्थिति-** फिलीपींस प्रशांत महासागर में स्थित लगभग त्त्र,क्त्त्र द्वीपों का एक समूह

है। यह वियतनाम के पूर्व में स्थित है।

जलवायु- उष्णकटिबंधीय और विषुवतीय मानसूनी प्रकार की है। यह देश एक पर्वतीय द्वीप समूह है। यहां पर्वतीय वर्षा वन बहुतायत में है। **प्रमुख नदियां-** पंपानगा, मगाट, अगुसान, कगयान। **सर्वोच्च शिखर-** माउण्ट अपो-ख-ब्भ मीटर।

प्रमुख बड़े शहर- मनीला, □वीजन सिटी, कैलोकान सिटी, जै□बोआंगो, बेकोलैंड सिटी। **निर्यात-** विद्युत उपकरण, नारियल उत्पाद, कपड़ा, कॉफी, चीनी, लकड़ी। **आयात-** मशीनरी, फल, रसायन, दवाइयां, परिवहन उपकरण। **प्रमुख उद्योग-** रबड़ उत्पादन, तेल शोधन, फल संरक्षण, कागज, सिगरेट, सीमेंट, लकड़ी, निर्माण सामग्री, संयंत्र।

प्रमुख फसलें- चावल, नारियल, गन्ना, केला, अनानास, कॉफी, रबड़, तंबाकू, सण। **प्रमुख खनिज-** कोयला, सोना, चांदी, क्रोमाइट, निकल, लवण, तांबा, पेट्रोलियम, लकड़ी।

शासन प्रणाली- अध्यक्षात्मक गणतंत्रीय शासन पद्धति।

राष्ट्रीय ध्वज- लाल, सफेद व बैंगनी रंग पर आधारित।

स्वतंत्रता दिवस- क्ख जून, क्त्-त्त **प्रमुख धर्म-** ईसाई--म प्रतिशत।

प्रमुख हवाई अड्डा- निनोए एकिनो और सीबू स्थित मे□टेन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा। **प्रमुख बंदरगाह-** मनीला, सीबू।

इंटरनेट कोड- .ph

भारत दुनिया का सबसे पुरातन व सबसे बड़ा लोकतंत्र है।

भारतीय संस्कृति व सभ्यता विश्व की पुरातन में से एक है।

साधारण चुम्बकों को ताकतवर ढंग से हैमर करके या खुली आग में गर्म करके गैर-चुम्बकीय बनाया जा सकता है।

आयरन गॉल इंक, जो ओक एप्पल से प्राप्त होती है, कभी भी हल्की या फीकी नहीं पड़ती। इसी कारण राजनेता आज भी इसे जरूरी कागजों पर हस्ताक्षर करने के लिए इस्तेमाल करते हैं।

एटलस पर्वत श्रृंखला अफ्रीका के उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र में स्थित है। यह मोरक्को, अलजीरिया और ट्युनिशिया सहित रॉक आफ जिब्राल्टर तक फैली हुई है। इसकी लम्बाई 2400 किलोमीटर है।

उत्तरी गोलार्द्ध में पाए जाने वाले मर्मोट नामक जीव अपनी नींद के दौरान अपने शरीर का तापमान 39 डिग्री सैंटीग्रेड से घटा कर 7 डिग्री सैंटीग्रेड कर लेते हैं। इनकी हृदय गति 100 बार प्रति मिनट के विपरीत 2 और 3 बार प्रति मिनट रह जाती है।

सुमद्र या किसी नदी के आस-पास घूमने वाले व्हीपिंग क्रेन (राजहंस) एक ऐसा पक्षी है, जिसकी आवाज तीन मील तक सुनी जा सकती है।

हमारी संस्कृत भाषा सभी भाषाओं की जननी मानी जाती है। सभी यूरोपीय भाषाएं संस्कृत पर आधारित मानी जाती हैं।

अत्यधिक चमक के साथ विस्फोटित होने वाले सितारों को सुपरनोवा कहा जाता है। जब इसकी केन्द्रीय उर्जा या ईंधन समाप्त हो जाता है तो अस्थिरता के कारण इसमें विस्फोट होते हैं। नैन्युला विस्फोटित सितारों के धूलकण और गैस अवशेष से बने अतिविशाल धूल के कण होते हैं।

भारत ने शून्य की खोज की। अंकगणित का आविष्कार 100 ईसा पूर्व भारत मे हुआ था।

वर्तमान में पृथ्वी पर मौजूद तीन-चौथाई ऊर्जा में से पृथ्वी की पूरी आबादी द्वारा मात्र एक-चौथाई ऊर्जा की ही खपत की जाती है।

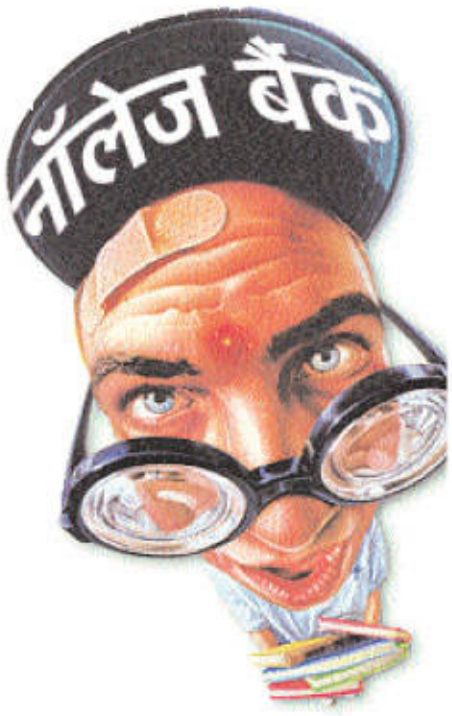

शब्द युग्म

अपत्य– संतान
अपथ्य– परहेज
आलोक– प्रकाश
अलोक– लोक रहित, सुनसान
अर्थी– इच्छा वाला
अस्थी– टिकठी, शव ले जाने के लिए बनी शैया
अलि– भंवरा,भौंरा
अली– सखी
परिधान– वस्त्र

अंतर है

Currant-किशमिश, मुन□का	
Current-वर्तमान, प्रवाह, धारा	
Dear-प्यारा, प्रिय	
Deer-हिरन	
Decease-मृत्यु	
Disease-रोग	
Decent-शालीन, सलीकेदार	
Descent-अवरोहण	

One Word

Animal living in water- **Aquatic.**

●

One who is fond of fighting- **Bellicose.**

●

Absence of rule or law and order- **Anarchy.**

●

Words which is opposite in meaning- **Antonyms.**

जो जल से उत्पन्न होता हो– **जलज**

●

जो सामने न हो– **परोक्ष/अप्रत्यक्ष**

●

नीचे की ओर लाना या खींचना– **अपकर्ष**

●

जो धन को व्यर्थ ही खर्च करता हो– **अपव्ययी**

एक के तीन

Gold- गोल्ड-	सोना-	सुवर्णम्
Potash-पोटाश-	सज्जी-	सर्जि:
Title-टाइटल-	शीर्षक-	शीर्षकम्
Fax-फै□स-	फै□स-	छविप्रेषित्रम्
Bulletin- बुलेटिन-	विज्ञप्ति-	वृ□ा पत्रिका

आवश्यकता में सभी कुछ उचित है।
Necessity knokws no law.
आसमान का थूंका मुंह पर पड़ता है।
Puff not against the wind.
आहार व्यवहार में लज्जा □या।
Fair exchange is no robbery.
इलाज से बचाव अच्छा।
Prevention is better than cure.
इस हाथ ले, उस हाथ दे।
Early sow, early mow.

To call a meeting-सभा जुटाना
To call in question-झगड़ना
To call to account-पूछना कि □या किया
To call to mind-याद

मुहावरे

घोड़ा घास से यारी करे, तो खाए □या– यदि निर्वाह के लिए भी कमाई करने में लिहाज बरता जाए तो जीवन कैसे चलेगा।

घर का भेदी लंका ढहाए– घर का रहस्य जानने वाला बड़ी हानि पहुंचा सकता है।

घर आया नाग न पूजिये, बा□बी पूजन जाय– स्वत: आए सुअवसर का लाभ न उठाकर फिर उसको प्राप्त करने के

उर्दू/ हिन्दी

किवर्त– नाव, नौका, किश्ती
किलीद– कुंजी, ताली, कुंचिका
किवाम– मूल, शीरा, चाशनी, क्रम
किलीच– तलवार, खड्ग, कृपाण, असि

अनेकार्थक शब्द

कस्तूरी– मृगनाभि, मृगमद, मदलता
कलिका– कली, मुकुल, कोरक, गुंजा
कर्ण– सूर्यपुत्र, सूतपुत्र, राधेय, अंगराज
कुबेर– यक्षराज, किन्नरदेव, धनाधिप, राजराज
कारीगर– शिल्पी, शिल्पकार, दस्तकार, मिस्त्री

रेखा कुमारी
सिवान (बिहार)

टिम्मी
भोपाल (म.प्र.)

रिया नागर
दौसा (राज.)

पेंटब्रश

बाल मंच

लिटिल स्टार

नेशनल अवॉर्ड विजेता बाल कलाकार श□स पटेल के अभिनय की विशेषता है कि वह दी गई भूमिका में गहराई से डूब जाता है। फिल्म 'थैं□स मां' में वह ऐसे बाल नायक के किरदार में था, जो झोंपड़पट्टी में रहकर भी सबकी भलाई करता है। छोटे से अबोध शिशु को वह बाल मजदूरी करके पूरी सुरक्षा के साथ अपने सीने से लगाये रखता है। इस शानदार रोल को निभाने के लिए उसे नेशनल अवॉर्ड फॉर बेस्ट चाइल्ड ए□टर हासिल हुआ। वह कहता है, 'सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिलना मेरे लिए गर्व की बात है। राष्ट्रपति के हाथों जब सभागार में पुरस्कार मिला तो आभास हुआ कि हम बच्चों में भी खासा दमखम है।'

श□स पटेल

श□स पटेल को अभिनय कला अपने नानाजी कमलजी से मिली है। वे फिल्मी दुनिया के जाने-माने कोरियोग्राफर थे। उसके मामा इरफान कमल भी फिल्मी हीरो रह चुके हैं। बतौर निर्देशक इरफान कमल ने 'थैं□स मां' फिल्म की योजना बनायी तो उसने भी स्क्रीन टेस्ट दिया। कई बाल कलाकारों में से इस भूमिका के लिए उसे चयनित किया गया। वह कहता है, 'ऑडिशन के बाद झोंपड़-बस्ती के कई बाल कलाकारों के साथ बकायदा वर्कशॉप रखी गयी। उस ए□टंग कार्यशाला में मैंने स्लम बॉय के व्यवहार को जाना-परखा। उनकी गतिविधियों को बारीकी से देखा। उसके बाद मैंने शूटिंग में भी जी-तोड़ मेहनत की। 'थैं□स मां' रिलीज होते ही मैं बॉलीवुड का चमकता लिटिल स्टार बन गया।'

गुजराती मूल के श□स पटेल को 'थैं□स मां' की मुंह बोलती कामयाबी ने गुजराती क□पनियों के प्रोड□ट्स का रोल मॉडल बनने का मौका मिला। गुजराती विज्ञापन फिल्मों में मॉडलिंग भी उसने शुरू कर रखी है। वह बताता है, 'अंतरराष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह में भी फिल्म 'थैं□स मां' वाह-वाही लूट चुकी है। विदेशी समीक्षकों ने अपने लेख में मेरे अभिनय पक्ष को खूब सराहा।'

श□स पटेल पढ़ाई में तो अच्छा है ही साथ ही साथ वह फुटबॉल-क्रिकेट खेल में भी आगे बढ़ रहा है। उसे कला के क्षेत्र में भाग्य आजमाने की अनुमति अपने परिवार से मिल चुकी है। वह फिल्म निर्देशन क्षेत्र में जाने का इच्छुक है। उसे बाल पत्रिकाएं पढ़ना अच्छा लगता है।

-राजू कादरी रियाज

वह है इंसान

किसी के काम आये,
पराया दर्द अपनाये,
उसे इंसान कहते हैं।
जो मुश्किल में न घबराये,
जो गिरकर संभल जाये,
उसे इंसान कहते हैं।
जो गलती को सुधार ले,
जो बांटकर खाये,
उसे इंसान कहते हैं।

सुरभि मंगल, ब्यावर (राज.)

लालच बुरी बला

बच्चो, लालच बुरी बला है
इससे दूरी में ही भला है।
दूर रहे पर कैसे इससे
यह सचमुच एक कला है।
पहले-पहल यह मन में ठाने
गैर का माल न अपना मानें।
हो चाहे सोने से बढ़कर
फिर भी उसको मिट्टी मानें।
बिना मेहनत कुछ भी मत लेना
चाहे कोई तुम्हें दे सोना।
इससे बड़ी न सीख है कोई
न ऊधो का लेना, न माधो को देना।

-वैभव निखिल, गुरुकुल, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

हिन्दी वर्ग पहेली

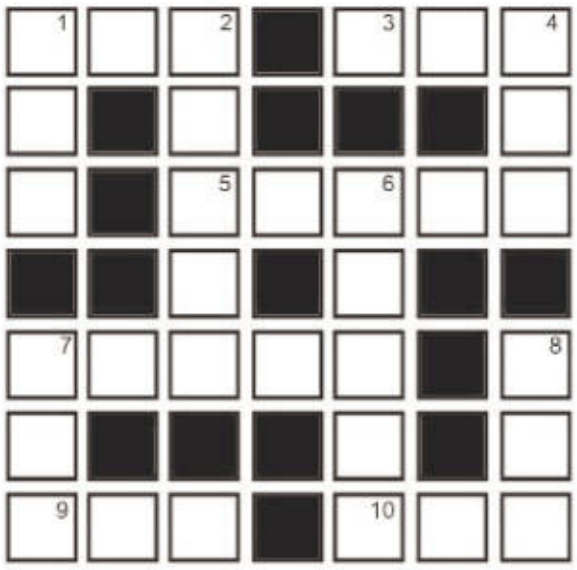

बाएं से दाएं

क. नाश, हानि, गायब हो जाना (फ)।
फ. धान कूटने का एक उपकरण है यह (फ)।
भ. नैतिक आचरण या चरित्र को यह भी कहते हैं, रंग-ढंग (ख फ)।
स्त्र. दूध का दूध और पानी का पानी..... और झूठ का झूठ (ख क ख)।
-. जोश, आवेश, तेजी (फ)।
क. जो बहुत ही कोमल हो, सुकुमार (फ)।

ऊपर से नीचे

क. वा□य समाप्त करने के बाद..... चिह्न का प्रयोग करते हैं (फ)।
ख 'एयर होस्टेस' को हिन्दी में कहेंगे.... (भ)।
ब. आमिर खान की एक फिल्म है (फ)।
म. पक्षियों का श□द करना, चहकना (भ)।
स्त्र. सावधान, चेतन-यु□त (फ)।
त. व्यर्थ, बेवजह, बिना मतलब का (फ)।

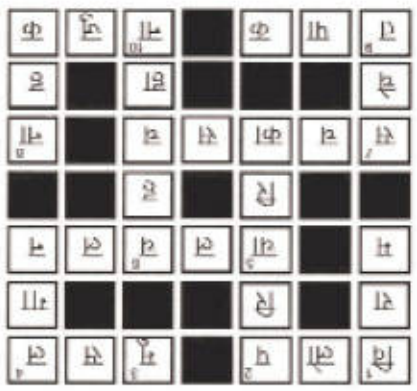

English Crossword

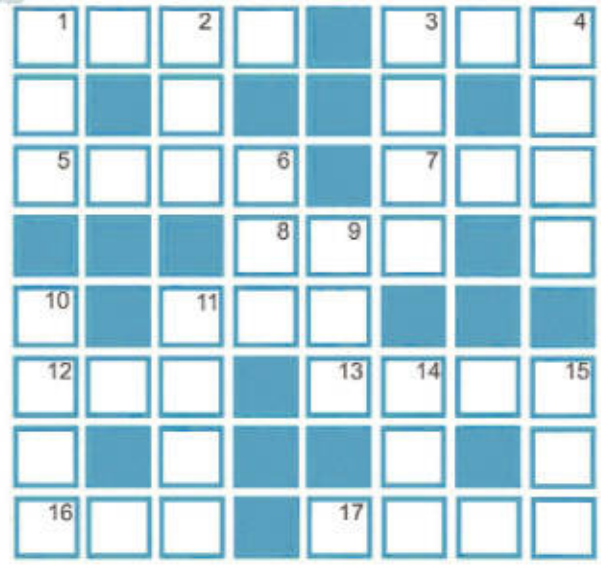

ACROSS

1. The pieces of hard whitish issue making up the skeleton in us (4).
3. To make free (3).
5. A large wooden or metal basin (4).
7. To take into the mouth as food (3).
8. Not well, Evil (3).
11. Abbreviation of 'United Nation Organization' (3).
12. The limb by which an animal walks (3).
13. Precious yello metal (4).
16. The apparrent arch or vault of heaven (3).
17. Worthless, Lazy (4).

DOWN

1. Agreement to risk money (3).
2. An offence against rules of proprity (3).
3. Roll of thread (4).
4. Era, Age, Epoch (4).
6. One's relative (3).
9. A part of the trunk of a tree (3).
10. Sign of addition (4).
11. offencive of sight (4).
14. Advanced in year or age (3).
15. To expire (3).

Answer

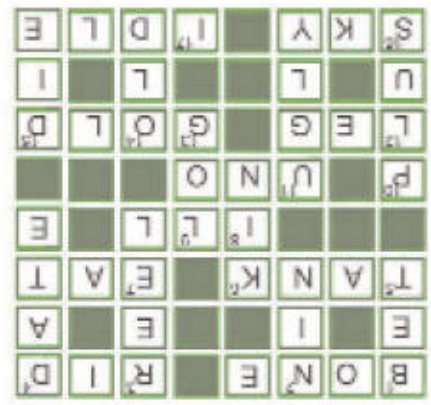

चित्र से चित्र

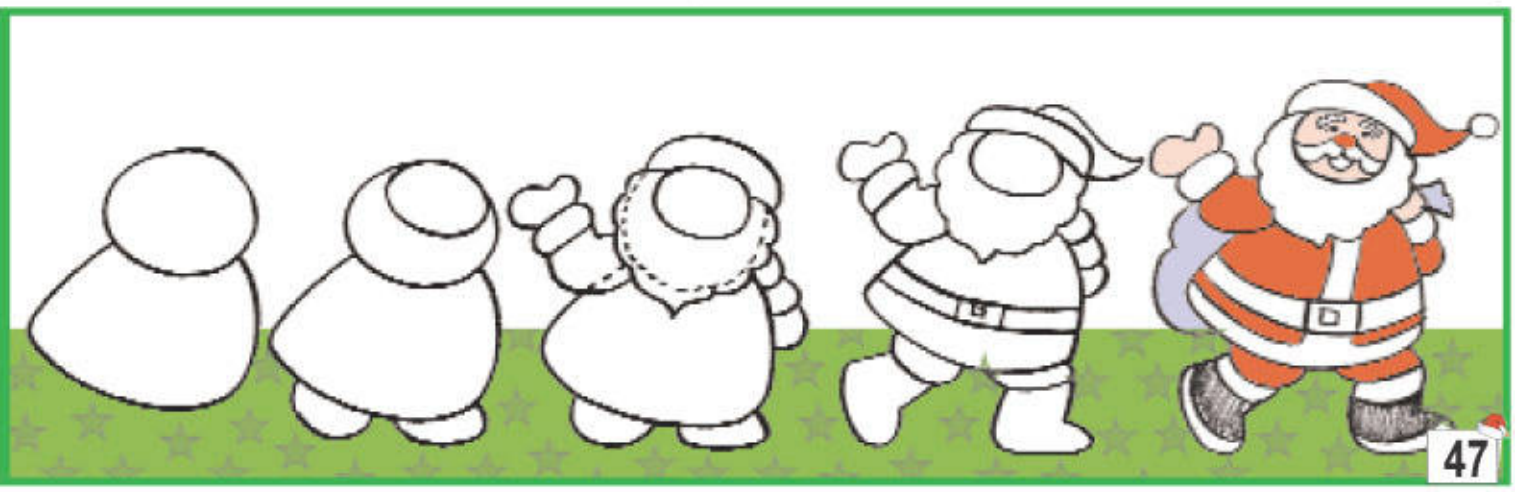

मन ही शत्रु और मित्र

महान दार्शनिक सुकरात से एक व्यक्ति ने पूछा, 'इस संसार में आपका सबसे करीबी मित्र कौन है?' सुकरात ने जवाब दिया, 'मेरा मन।' उसने फिर अगला प्रश्न किया और आपका शत्रु कौन है? सुकरात ने उत्तर दिया, 'मेरा शत्रु भी मेरा मन ही है।' इस पर वह व्यक्ति हैरत में पड़ गया। उसने सुकरात से निवेदन किया, 'यह बात मेरी समझ में नहीं आयी। आखिर मन ही मित्र भी है और मन ही शत्रु भी। ऐसा कैसे हो सकता है? कृपया इस बारे में विस्तार से बताएं।'

सुकरात ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा, 'देखो, मेरा मन इसलिए मेरा साथी है क्योंकि यह मुझे सच्चे मित्र की तरह सही मार्ग पर ले जाता है। और वही मेरा दुश्मन भी है, क्योंकि वही मुझे गलत रास्ते पर भी ले जाता है। मन ही में तो सारे खेल चलता रहता है। मन ही व्यक्ति को पाप कर्मों में लगा सकता है। वह बड़े से बड़ा अपराध करा सकता है। लेकिन वही उसे उच्च विचारों के क्षेत्र में लगा सकता है।

वह व्यक्ति ध्यान से सुकरात की बातें सुन रहा था। उसने पूछा, 'लेकिन जब शत्रु और मित्र दोनों हमारे साथ ही हों तो फिर हमारे ऊपर किसका ज्यादा असर होगा?' सुकरात ने कहा, 'हां, यही हमारी चुनौती है। यह हमें तय करना होगा कि हम मन के किस रूप को हावी होने देंगे। हमने ज्योंही उसके बुरे रूप को हावी होने दिया, वह शत्रु की तरह व्यवहार करता हुआ हमें गर्त में ले जाएगा। लेकिन सकारात्मक बातों पर ध्यान देने से वह मित्र की तरह हमें उपलब्धियों की ओर ले जाएगा।'

सीख सुहानी

मनुष्यता का रिश्ता

रूस में एक मेजर सड़क किनारे खड़ा मद्यपान कर रहा था। तभी एक व्यक्ति आया, जो वेशभूषा से देहाती लगता था। उसने मेजर से एक स्थान विशेष का पता पूछा। इससे मेजर के अहंकार को ठेस पहुंची। उसने सोचा कि आखिर एक साधारण आदमी की हिम्मत कैसे हुई उससे बात करने की।

मेजर ने कुछ कहा नहीं, बस उंगली से उस स्थान का पता बता दिया। लेकिन वह व्यक्ति वहां से हिला तक नहीं। इससे मेजर का क्रोध भड़क गया। उसने कहा, 'अब जाते क्यों नहीं?' वह व्यक्ति बोला, 'जाता हूं। पर एक जिज्ञासा शांत करनी है। क्या जान सकता हूं कि आप किस पद पर कार्यरत हैं?' मेजर शरारती हंसी हंसते हुए बोला, 'तुम खुद ही अंदाजा लगाओ।' उस देहाती ने कहा, 'जरूर आप कैप्टन होंगे।' मेजर ने इंकार में सिर हिलाया। इस पर देहाती ने कहा, 'तब आप लेफ्टिनेंट होंगे।' एक बार फिर मेजर ने उसी तरह सिर हिलाया। देहाती बोला, 'तब आप मेजर होंगे।' इस पर मेजर खुश होकर बोला, 'तुमने बिल्कुल सही पहचाना।' उस देहाती ने उसे सलाम ठोका तो मेजर को संतोष हुआ। अब उस देहाती ने उससे पूछा, 'और आप बता सकते है कि मैं कौन हूं?'

मेजर ने उसे हिकारत से देखते हुए कहा, 'तुम गांव के चौकीदार वगैरह होंगे।' इस बार देहाती ने मेजर की तरह ही सिर हिलाया। तब मेजर ने कहा, 'सिपाही हो क्या?' देहाती बोला, 'उससे ऊपर?' मेजर ने आश्चर्य से पूछा, 'कैप्टन?' देहाती ने कहा, 'उससे भी ऊपर।' इस तरह बात जनरल तक आ गई। देहाती ने कहा, 'मैं जनरल से भी ऊपर हूं। मैं यहां का राजा हूं।' अचानक मेजर का नशा टूटा। उसने सम्राट को पहचानकर उन्हें सलामी दी। सम्राट ने समझाया, 'मेजर का पद पाकर तुम भूल गए कि पहले तुम एक मनुष्य हो। मैं भी एक मनुष्य हूं। कोई किसी भी पद पर क्यों न हो, मनुष्यता का रिश्ता सबसे बड़ा है।' मेजर ने अपने व्यवहार के लिए क्षमा मांगी।

लो बन गया स्टैथेस्कोप

सामग्री- पांच फीट ल□बी प्लास्टिक की नली, दो कीप, एक यान्त्रिक घड़ी (डिजिटल नहीं)।

शुरू करो- इस तैयारी के लिए तु□हें सिर्फ इतना ही करना है कि ट्यूब के दोनों सिरों पर एक-एक कीप तु□हें फिट बैठानी है, बस। इसके बाद तो प्रयोग की शुरुआत उसी क्षण हो जाएगी। जब तुम घड़ी पर एक कीप रखकर उससे पूरी दूरी बनाते हुए दूसरी कीप को अपने कान पर रखोगे।

□या सुनाई दिया? घड़ी की टिक-टिक तु□हें पूरी तरह स्पष्ट सुनाई दे रही है न, जो वैसे यानी कीप को कान से हटाते ही बिल्कुल भी सुनाई नहीं देती।

अब अपने किसी मित्र से कहो कि वह घड़ी वाली तरफ की कीप को अपनी छाती से, उस स्थान पर चिपका कर रखे जहां दिल होता है। आसपास का वातावरण यदि शोरगुल से भरा न हो तो तु□हें उसके दिल की धड़कनें भी साफ तौर पर सुनाई देनी चाहिए।

कैसे होता है यह- साधारणतया ध्वनि की तरंगे अपने स्रोत से जब उत्पन्न होती हैं, तो ये वातावरण में चारों तरफ फैल जाती हैं। यही कारण है कि हल्की ध्वनियां या आवाजें अधिक दूरी तय नहीं कर पातीं और इसी वजह से हमें दूर से सुनाई नहीं देतीं। किसी भी तरह की हल्की आवाज को यदि एक ही दिशा में एक संकरे मार्ग से गुजारा जा सके तो इसे सुनना तुलनात्मक रूप से बहुत सहज हो जाता है।

कमाल है

दिल की धड़कन से उत्पन्न होने वाली ध्वनि को डा□टर के कानों तक पहुंचाने वाला स्टैथेस्कोप इसी सिद्धान्त पर आधारित होता है और यहां तु□हारे लिए उसी का एक साधारण-सा रूप प्रस्तुत किया गया है।

बूझो तो...

1 श्याम वर्ण और तीखे दांत,
लचक-लचक चले नारी।
जिससे मिले उसी को काटे,
तो भी लोग कहें उसे 'आ री'।

?

2 गर्मी में जिससे घबराते जाड़े में
हम उसको खाते।
उससे है हर चीज चमकती दुनिया
भी है खूब दमकती।

?

3 न किसी से झगडा न लड़ाई, फिर
भी होती सदा पिटाई...बताओ
कौन?

4 कपड़े उतरवाए पंखा चलवाए
कहती ठंडा पीने को।
अभी-अभी तो नहा के आया फिर
से कहती नहाने को।

?

5 नहीं मैं मिलती बाग में,
आधी फल हूं, आधी फूल।
काली हूं पर मीठी हूं,
खा के न पाया कोई भूल।

6 जो जाकर न वापस आये
जाता भी वह नजर न आये।
सारे जग में उसकी चर्चा वह तो
अति बलवान कहाये।

7 प्यार करूं तो घर चमका दूं
वार करूं तो ले लूं जान।
जंगल में मंगल कर दूं
कभी कर दूं मैं शहर वीरान।

□उ

1. आरी 2. धूप
3. ढोल 4. आंधी
5. हरीरा
6. जीवन
7. बिजली

अंतर बताओ

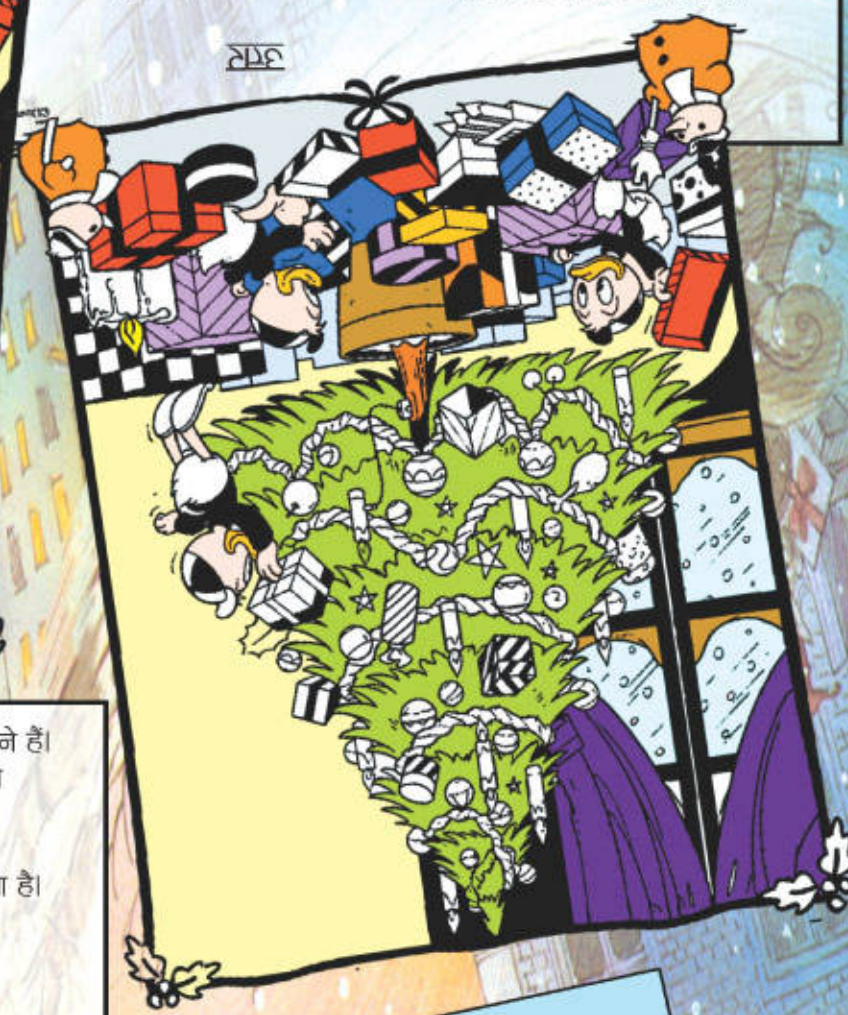

1. पर्दा प्रिंटेड है।
2. गिफ्ट लगाने वाली डक का एक हाथ दिखाई नहीं दे रहा।
3. मोमबत्ती कम हैं।
4. डक के हाथ वाले डिब्बे पर ढक्कन लगा है।
5. नीचे रखे डिब्बे पर रिबन नहीं बंधा।
6. गोल वाले डिब्बे में स्टेण्ड लगा है।
7. पीछे रखी मोमबत्ती की लौ बड़ी है।
8. डिब्बे में एक पेंसिल कम है।
9. नीचे कुछ फूल बिखरे हैं।
10. बाहर बरसात बंद हो गई।

उत्तर

1. सांता की टोपी का फुंदना छोटा है।
2. पेड़ में मोती ज्यादा हैं।
3. घंटी में कुंदा नहीं है।
4. एक गिफ्ट में रिबन नहीं बंधा है।
5. पेड़ की डंडी बड़ी है।
6. स्लेज में दो धागे बंधे हैं।
7. बच्चे की टोपी पर स्टार बने हैं।
8. बच्चों के पायजामे में बटन लगे हैं।
9. बच्चा डर रहा है।
10. क्रिसमस ट्री पर स्टार लगा है।

उत्तर

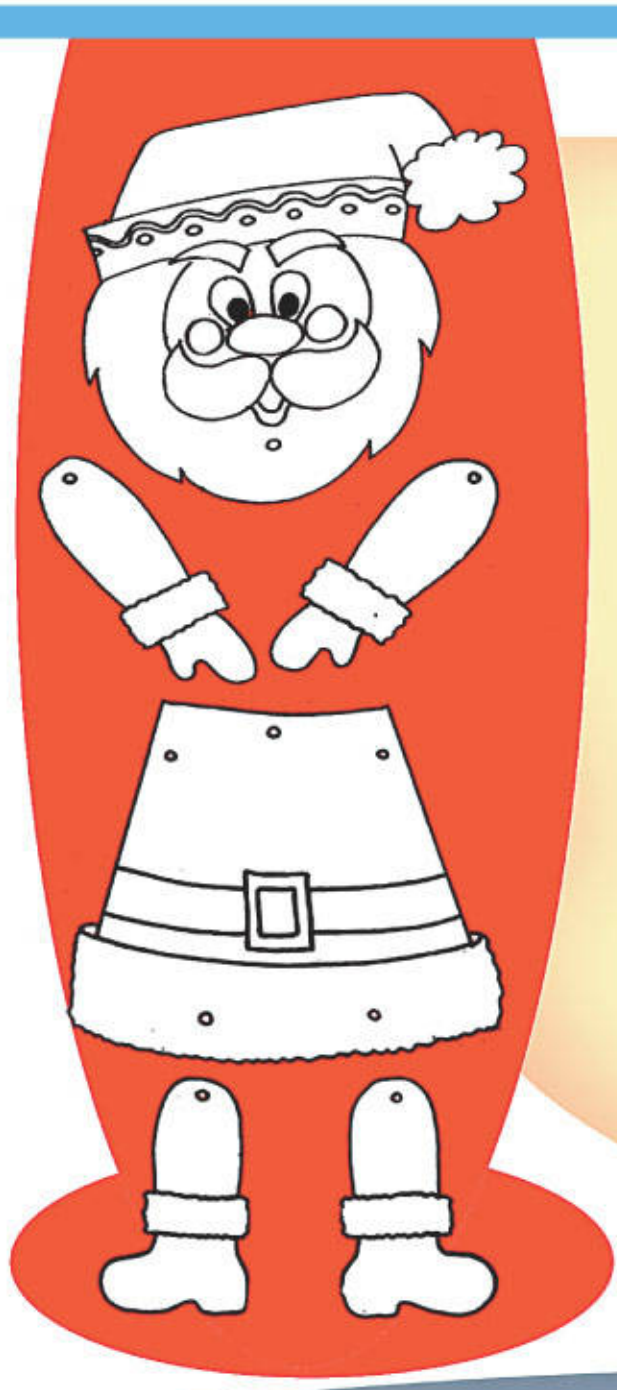

सेंटा

- **सामग्री :**
  ड्रॉइंगशीट, पोस्टर कलर, कैंची, मोटा धागा, काला मार्कर पैन।
- **विधि :**
  ड्रॉइंगशीट पर सांता की आकृति बनाकर कैंची से काट लें। मार्कर पैन से आउट लाइन बनाकर रंग भर दें। सांता के सभी भागों में दिखाए गए चित्रानुसार एक-एक छेद कर दें। धागे की सहायता से सारे भागों को एक-दूसरे से बांध दें। और इस तरह तैयार हो गये तुम्हारे सेंटा। आप इनके हाथ-पैरों और मुंह को हिला भी सकते हैं।

Art & Craft

क्रिसमस ट्री

- **सामग्री :** रजिस्टर का मोटा कवर, प्रिंटेड साटन रिबन्स, ऑलपिनें, एक स्टार, स्टेपलर या फेविकोल।
- **विधि–** रजिस्टर के कवर को कुप्पीनुमा आकार देकर चिपका दें या स्टेपल कर दें। साटन रिबन के एक साइज के टुकड़े कर लें। इन टुकड़ों को डबल करके पुट्ठे पर ऑलपिन से चारों तरफ लगाते जाएं। इसे नीचे से ऊपर की ओर लगाएं। बाद में ऊपर लेस लगाकर आखिरी लाइन को ढक दें। ऊपर कोने पर स्टार लगा दें। इसमें आप चाहें तो छोटे-छोटे गिफ्ट भी लगा सकते हैं।

बिन्दु से बिन्दु

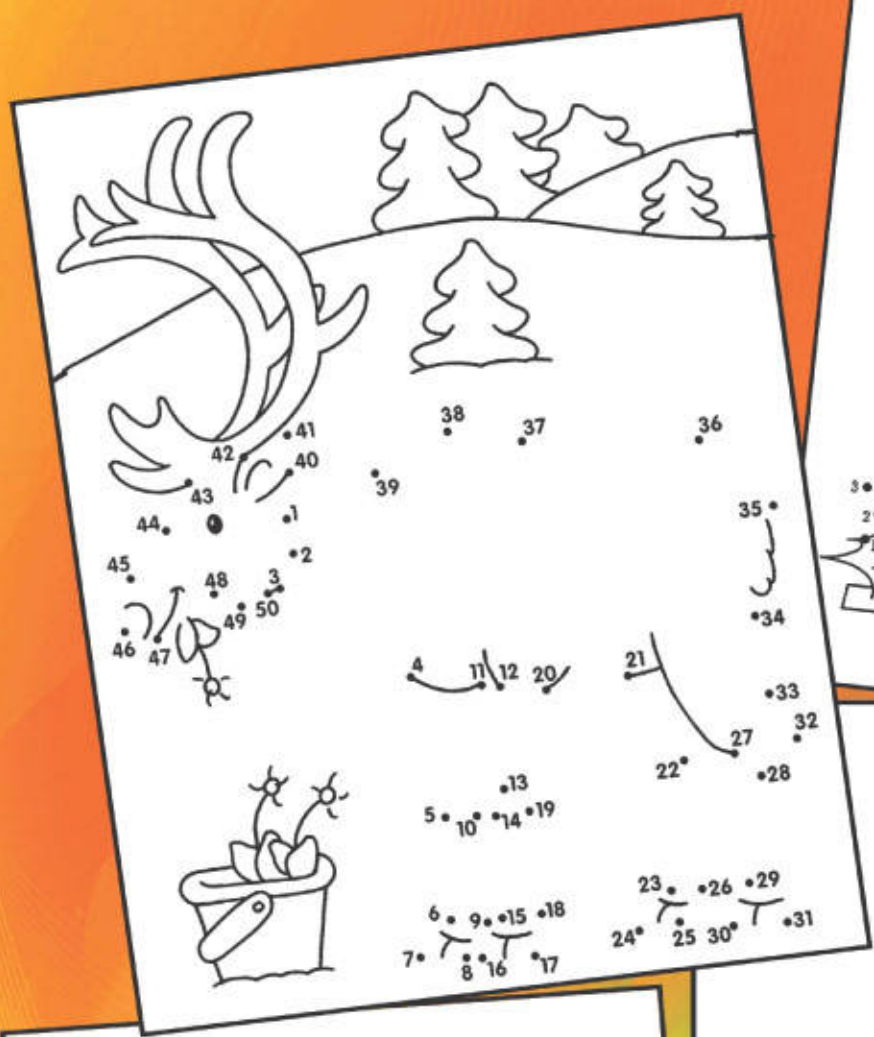

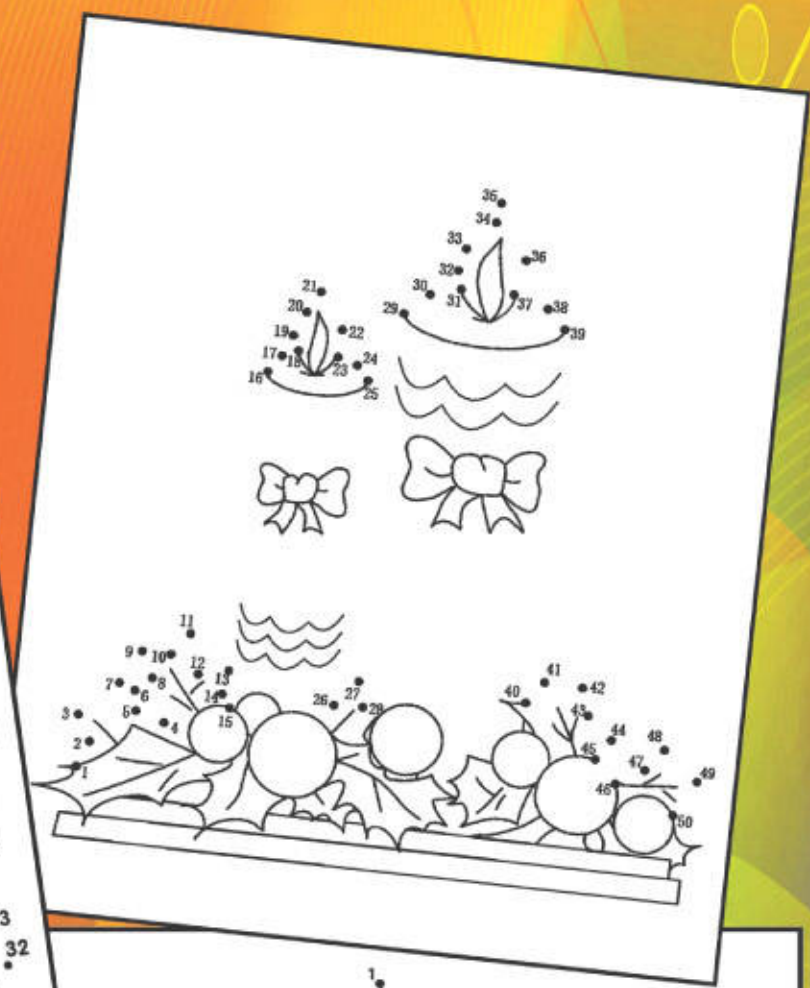

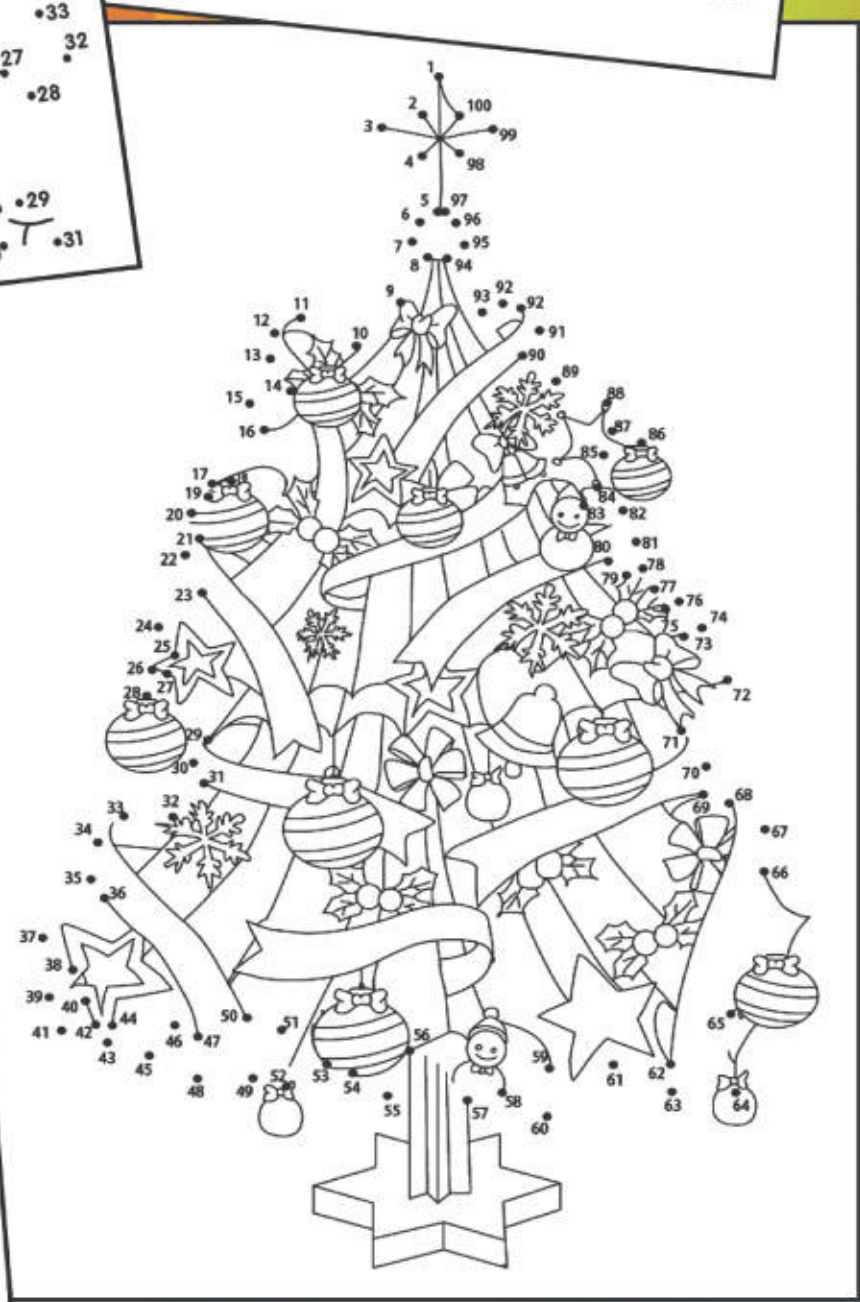

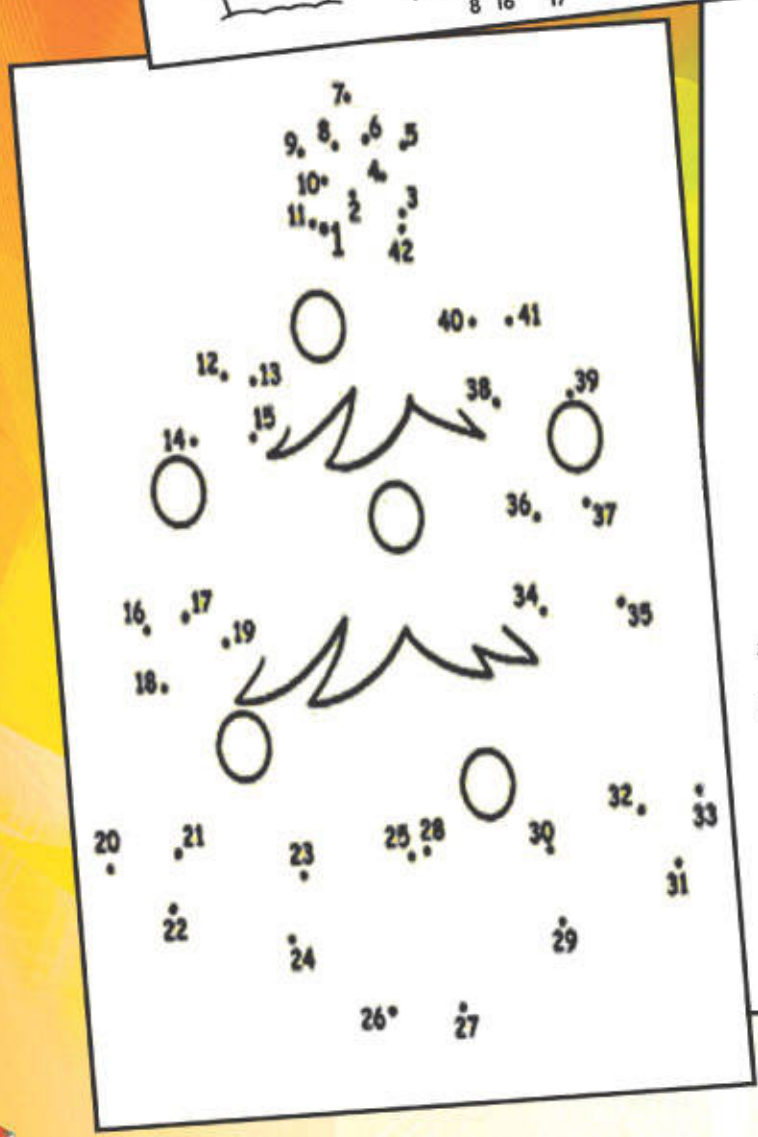

ठिकाना तो बताना

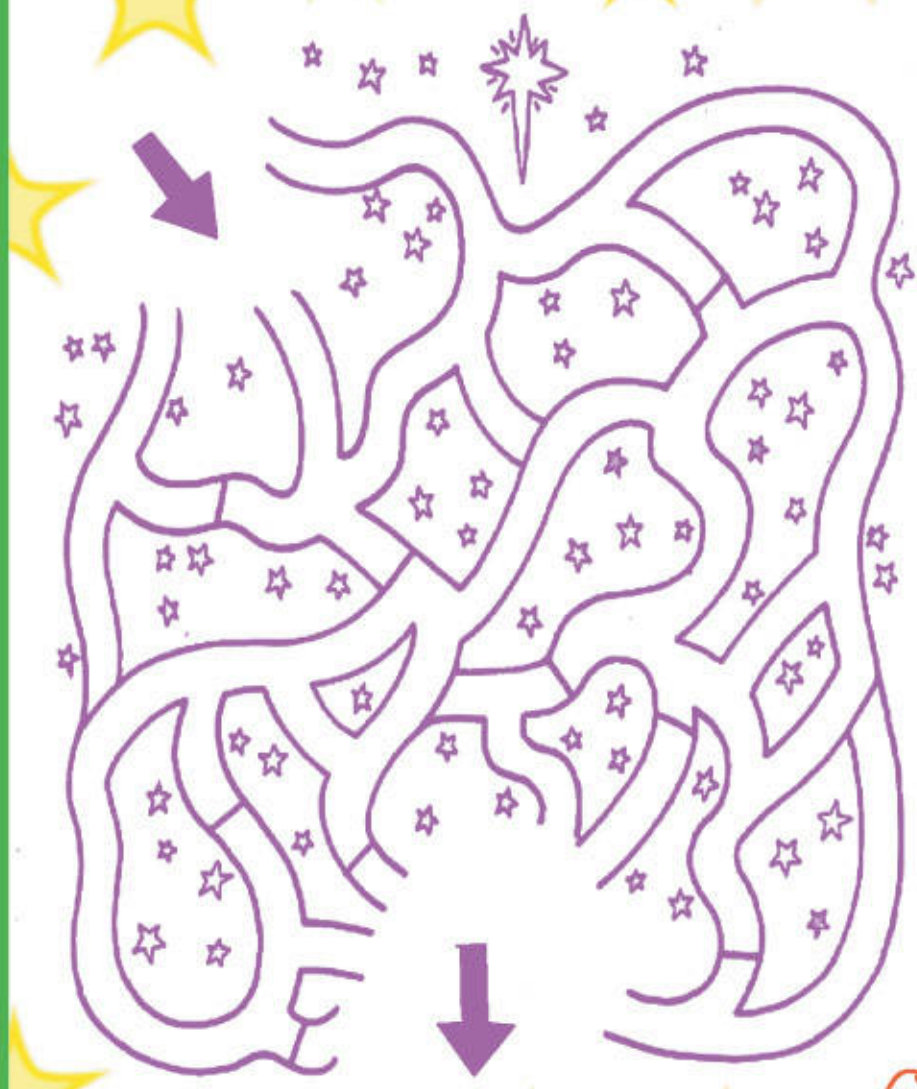

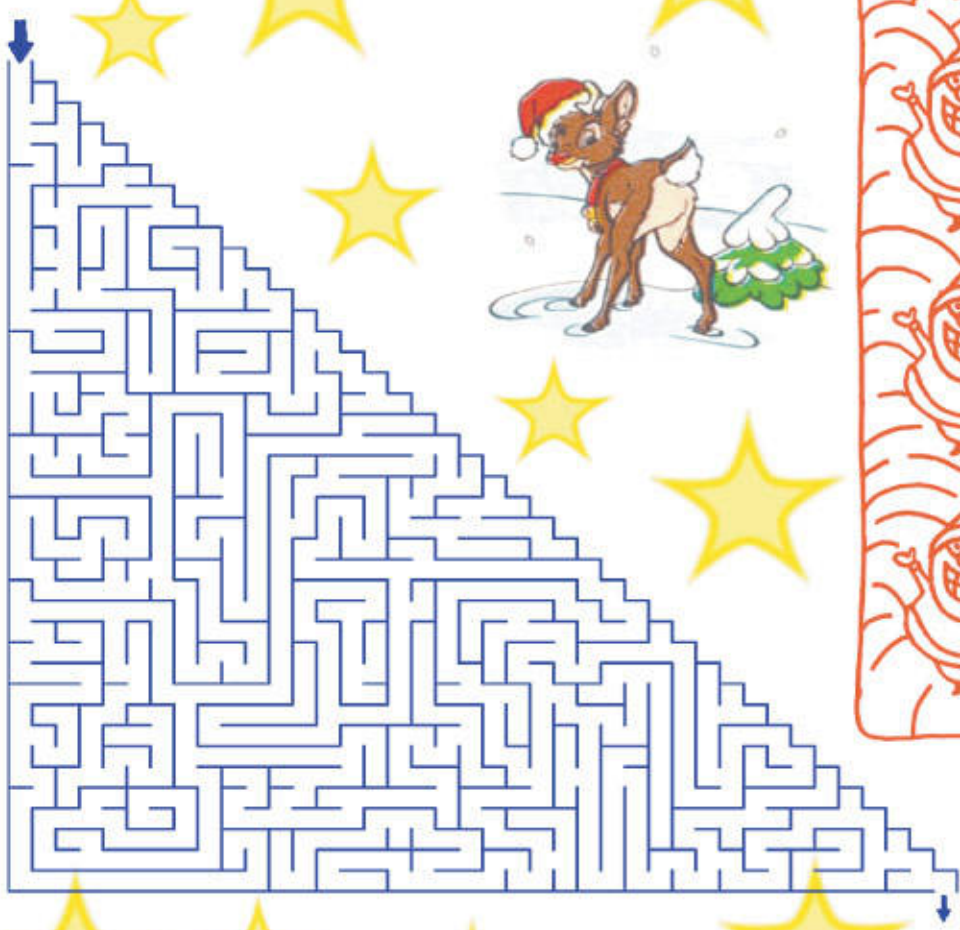

देवांश राठौड़
उम्र- ५ वर्ष
स्थान-जयपुर
रुचि-पढ़ना, खेलना।

अनुराधा तिवारी
उम्र- ८ वर्ष
स्थान-घुघली, महाराजगंज
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

मोहन राम
उम्र- ८ वर्ष
स्थान-नागौर (राज.)
रुचि-पढ़ना, हेल्पिंग।

विकास यादव
उम्र- ८ वर्ष
स्थान- अलीगढ़ (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, टी.वी.।

मुकेश कुमार सिंह
उम्र- ८ वर्ष
स्थान-सिवान (बिहार)
रुचि-पढ़ना, भलाई।

हंसराज मीणा
उम्र- ८ वर्ष
स्थान-दौसा (राज.)
रुचि-घूमना, हंसाना।

हनुमान राम जाखड़
उम्र- ८ वर्ष
स्थान-बाड़मेर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

आर्यन राज
उम्र- ५ वर्ष
स्थान-सिवान (बिहार)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

आकाश यादव
उम्र- ८८ वर्ष
स्थान-अलीगढ़ (उ.प्र.)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

राहुल राज
उम्र- ८ वर्ष
स्थान-जमालपुर गोगरी
रुचि-पढ़ना, खेलना।

अंजलि मिश्रा
उम्र- ८ वर्ष
स्थान-नरहरपुर (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, डांसिंग।

आंचल मिश्रा
उम्र- ८८ वर्ष
स्थान-नरहरपुर (उ.प्र.)
रुचि-पेंटिंग, क□प्यूटिंग।

डॉली पटेल
उम्र- ४ वर्ष
स्थान-मेजा, जौनपुर
(उ.प्र.)

राहुल बिष्ट
उम्र- ८८ वर्ष
स्थान-खोड़ा, गाजियाबाद
रुचि-पेंटिंग, टीवी।

मोनू कुमार
उम्र- ८ वर्ष
स्थान-सारे (बिहार)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

प्रवीण भारद्वाज
उम्र- ८ वर्ष
स्थान-फरीदाबाद (हरियाणा)
रुचि-पढ़ना, सिंगिंग।

खुशी पाटनी भ□ित
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-झुमरी तिलैया (झारखंड)
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

मो. एहसान आलम
उम्र- क्प वर्ष
स्थान-नरहन (बिहार)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

अफरोज आलम
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-जंगीपुर, गाजीपुर
रुचि-घूमना, पढ़ना।

मनीषा कुमारी
उम्र- त्त वर्ष
स्थान-बरौनी (बिहार)
रुचि-पढ़ना, टीवी।

ऋचा शर्मा
उम्र- त्त वर्ष
स्थान-अलवर (राज.)
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

शुभम् कुमार
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-बगहा (बिहार)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

कृष्णा गर्ग
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-फरीदाबाद (हरियाणा)
रुचि-क□प्यूटिंग,

जहांगीर राईनी
उम्र- क्प वर्ष
स्थान-जंगीपुर, गाजीपुर
रुचि-खेलना, पढ़ना।

आयुषी राज
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-सिवान (बिहार)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

अंशुल मिश्र
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-नरहरपुर (उ.प्र.)
रुचि-डांसिंग,

राहुल श्रीवास्तव
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-तरयासुजान (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

वि□की कुमार
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-मुज□फरपुर
(बिहार)

सिद्धार्थ शर्मा
उम्र- क वर्ष
स्थान-लुधियाना
रुचि-पढ़ाई, सिंगिंग।

जगदीश नायक
उम्र- क्प वर्ष
स्थान-नागौर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

विक्रम कुमार
उम्र- क्प वर्ष
स्थान-शाहपुर उण्डी, समस्तीपुर
रुचि-पढ़ना, सिखाना।

प्रेम सिंह सोलंकी
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-धोबहां
रुचि-खेलना, पढ़ना।

Kids Corner

किड्स क्लब में भाग लेने के लिए बच्चे अपना नाम, उम्र, पता, रुचि साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें। साथ ही फोटो के पीछे भी अपना नाम जरूर लिखें।

बदसूरत जीव-जंतुओं की छुपी हुई खूबसूरती

जानवरों की दुनिया में ऐसे कई जीव हैं जो अजीब दिखते हैं। लेकिन उनके कुरूप दिखने के पीछे भी कारण होता है। एनिमल प्लेनेट के वन्यजीव फिल्मकार और एडवेंचरर निगेल मार्वेन पारंपरिक खूबसूरती से मेल नहीं खाने वाले और दुनिया के सबसे अजीब दिखने वाले जंतुओं की तलाश में यात्रा करते हैं और यह पता लगाते हैं कि वे ऐसे क्यों दिखते हैं।

हर प्रजाति का अपना एक अनोखा जादू होता है, फिर भले ही देखने में वह कैसी भी हो। सौंदर्य के प्रति आसक्त दुनिया में पशु जगत में कुरूप होने के अपने लाभ हैं। कुछ पशुओं में विलक्षणताएं उन्हें विपरीत लिंग के प्रति अधिक आकर्षक बनाती हैं और कुछ मामलों में कुरूपता जीवन और मौत का अंतर पैदा कर सकती है।

वल्चर

गिद्ध सबसे विचित्र पक्षियों का समूह है। पंखों रहित सिर, ऊंची-नीची चोंच और त्वचा की अनाकर्षक परतों के साथ गिद्ध पक्षी जगत की सबसे कुरूप प्रजाति में से एक हैं। उनके गंजे सिर का एक मकसद है, □योंकि इससे भोजन करते समय उन पर खून नहीं जमता।

गिद्ध की ही तरह एशियाई सारस का सिर गंजा होता है और यह उन्हें भी भोजन करने में मदद करता है, □योंकि यह केवल मछली के लिए गोता ही नहीं लगाता, अपितु गले-सड़े व्यर्थ पदार्थों के ढेर में भी जाता है। उनकी कुरूपता हवा भरने वाले थैले, सामने की ओर एक थैला और एक बड़ी स्ट्रॉबरी का आकार पीठ पर होने से और बढ़ जाती है। वे थैले में हवा भरकर अपना प्रभाव दिखाते हैं।

वैम्पायर बैट

चमगादड़ अजीब दिखने वाला एक और जीव है। इसके चेहरे की झुर्रियां इकोलोकेशन प्रणाली के अनुसार ढलने के हिसाब से बनी हैं, जिसका इस्तेमाल वे एकदम अंधेरे में कीटों का शिकार करने के लिए करते हैं।

बजट्स फ्रॉग विश्व में सबसे अजीब दिखने वाले उभयचर हैं। इसकी ढीली-ढाली त्वचा देखकर लगता है कि वे सीधे अनाकर्षक जेली सांचे से उठाए गए हैं और अभी तक अच्छी तरह सेट नहीं हुए हैं। ढीली सिलवटें इस मेंढक को तालाब में उपल□ध कम मात्रा की ऑ□सीजन अवशोषित करने में मदद करती हैं।

स्टार नोज्ड मोल

सितारे जैसी नाक वाला छछूंदर: अमेरिका छछूंदर की दुर्लभतम प्रजाति सितारे जैसी नाक वाले छछूंदर का घर है। वे स्पर्श के प्रति अत्यन्त संवेदनशील होते हैं और भूमि के नीचे चलने वाले जीवों में से सर्वश्रेष्ठ है। इसकी नाक में ख्ख चक्रों वाले स्पर्शक होते हैं। इनकी नाक वास्तव में बहुत संवेदनशील होती है और इन छछूंदर को अन्य छछूंदरों की तुलना में क्ब गुणा अधिक तेजी से शिकार करने में सक्षम बनाती है। वे विश्व में सबसे तेजी से खाने वाले जीवों में से

ने□ड मोल रैट छोटे, झुर्रीदार, वास्तव में बाल रहित कृंतक होते हैं, जो अफ्रीका में रहते हैं। यह जीव साही का निकटतम स□बन्धी होता है। ने□ड मोल रैट्स आमतौर पर जमीन के नीचे मांद बनाते हैं। इन मोल रैट्स के बाल नहीं होते, जिससे कीचड़ या रेत उनमें नहीं फंसती। इससे वे बिल में आसानी से जा सकते हैं।

नार्दन बुल एलिफेंट सील की लंबी लचीली नाक होती है, जो दो फीट से अधिक लंबी हो सकती है। उनकी बड़े आकार की नाक उन्हें साथी की दौड़ में आगे करती है। प्रजनन के मौसम में वे अपनी नाक का प्रदर्शन करते हैं और इससे जोरदार आवाज निकालते है, जिसे मीलों दूर तक सुना जा सकता है।

वार्थोग्स अफ्रीका के सबसे कुरूप कृंतक प्राणी हैं। बालों से भरे हुए और चेहरे पर सूजन से ढके होते हैं। अपने गैर अनुपातित सिर के कारण वार्थोग अजीब दिखते है। नर वार्थोग में चार और मादा में दो गांठें होती हैं। ये गांठें असल में

नीचे दिये गए सवाल का सही जवाब दें, और एनिमल प्लेनेट से इनाम पाएं।

- **सितारे जैसी नाक वाले छछूंदर के शरीर के किस भाग में ख्ख स्पर्शक (टैंटेकल्स) होते हैं?**

(ए) नाक
(बी) सिर
(सी) मुंह
(डी) पैर

Name.....

Address.....

City.....Pin.....Phone.....

Date of birth...../...../ .....

Email id.....

एंट्री फॉर्म को पूरा भरें और इसे इस पते पर भेज दें-

Animal Planet- Balhans Contest
P.O. Box No. 10534, New Delhi- 110 067

अजीबोगरीब दिखने वाले जीवों के बारे में और जानकारी हासिल करने के लिए एनिमल प्लेनेट पर हर रात ८ बजे देखें: द वाइल्ड बेसट ।

पिछली बार पूछे गए सवाल 'गैलापैगोस में पाए जाने वाले कछुओं की अनूठी प्रजाति है' का जवाब है- लैदरबैक टर्टल्स

शर्तें : कृपया प्रवेश पत्र में अपने विवरण भरें, सही जवाबों पर निशान लगाएं और ऊपर दिये गए पते पर सामान्य डाक से भेजें। इस प्रतियोगिता के छपने के दस दिन के अंदर डिस्कवरी क□यूनिकेशन्स इंडिया (डीसीआईएन) द्वारा प्राप्त सही एंट्रियों में से विजेताओं का चुनाव किया जाएगा। यदि कई एंट्री सही निकलती हैं, तो डीसीआईएन किन्हीं पांच प्रतियोगियों को रैंडम आधार पर चुनेगा और उन्हें विजेता घोषित करेगा। विजेताओं और प्रतियोगिता के नियमों के सिलसिले में डीसीआईएन का फैसला अंतिम और बाध्य होगा। इस प्रतियोगिता से जुड़े सारे नियम जानने के लिए कृपया देखें।

www.discoverychannel.co.in/animalplanet-balhans contest

रंग दे प्रतियोगिता परिणाम

नवम्बर प्रथम, 2013

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

क. **नंदिता जोशी,** उदयपुर (राज.)
ख. **कनक शर्मा,** डीग, भरतपुर (राज.)
फ. **मनु कुमार,** लहराबाद, भोजपुर (बिहार)
ब. **अभय त्रिवेदी,** लखनऊ (उ.प्र.)
भ. **नूरैन शमीम,** उदयपुर (राज.)
म. **सक्षम रावत,** धार (म.प्र.)
स्त्र. **कुलदीप,** गुड़गांव (हरियाणा)
त्त. **ओम पाठक,** बुलंदशहर (उ.प्र.)
–. **कनिष्का,** गुड़गांव (हरियाणा)

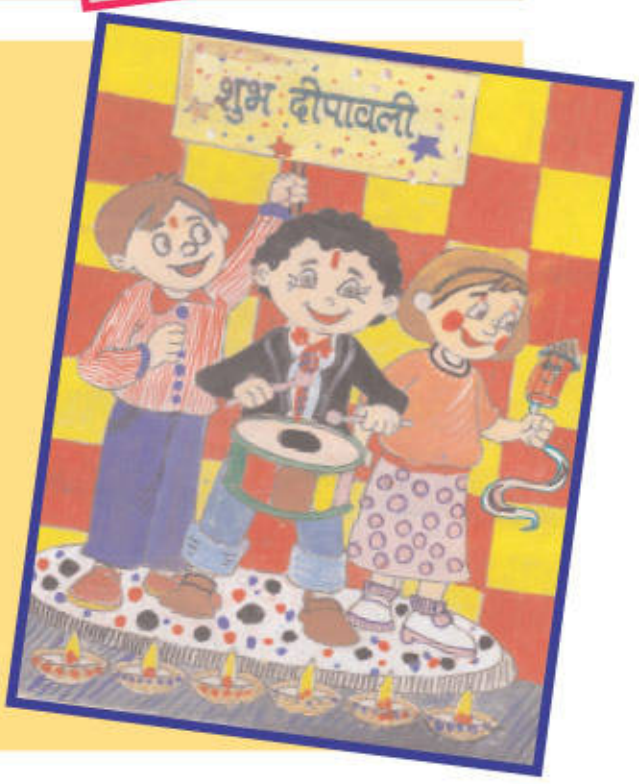

सराहनीय प्रयास

क. **दिव्या गौड़,** अलवर (राज.)
ख. **रोहित गुप्ता,** दिल्ली
फ. **हर्षित दुबे,** बलरामपुर (उ.प्र.)
ब. **भानवी,** श्रीगंगानगर (राज.)
भ. **सिद्धार्थ भारद्वाज,** दरभंगा (बिहार)
म. **आदित्य आकाश,** मधुबनी (बिहार)
स्त्र. **आयुषी राव,** धनबाद (झारखंड)
त्त. **कुणाल शर्मा,** सादुलपुर (राज.)
–. **रोमांचिका शर्मा,** जयपुर (राज.)
क. **ध्रुव गुप्ता,** दिल्ली
क्क. **साहिल खान,** भवानीमंडी (राज.)
क्ख. **मनमेश शर्मा,** कोटा (राज.)
क्फ. **ललित बागड़ी,** बबाई (राज.)
क्ब. **आयुष यादव,** इंदौर (म.प्र.)
क्भ. **ऋतिक,** मझौवा, आरा (बिहार)

ज्ञान प्रतियोगिता- 337 का परिणाम

क. **मूमल पुरोहित,** बीकानेर (राज.)
ख. **अभिजीत कुडी,** पलसाना (राज.)
फ. **कार्तिकेय पाण्डेय,** लखनऊ (उ.प्र.)
ब. **राहुल बजाज,** सूरतगढ़, श्रीगंगानगर (राज.)
भ. **अन्नू शर्मा,** जयपुर (राज.)
म. **साक्षी बंसल,** सवाईमाधोपुर (राज.)
स्त्र. **पार्थ,** नोयडा, गौतमबुद्धनगर (उ.प्र.)
त्त. **धर्मेन्द्र कुमार,** साहेबगंज, सारण (बिहार)
–. **मोहित कोकचा,** जयपुर (राज.)
क. **नशरुद्दीन,** सालावास, जोधपुर (राज.)

ज्ञान प्रतियोगिता- 337 का सही हल

सिडनी ओपेरा हाउस, लंदन ब्रिज
क. ऋष्यमूक
ख. रामायण
फ. उर्मिला
ब. रावण का
भ. अंजना

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

ज्ञान प्रतियोगिता

परखो ज्ञान पाओ इनाम

क. मुंशी प्रेमचंद का संबंध किससे है ?

(अ) अभिनय से

(ब) लेखन से

(स) विज्ञान से

ख. शे□सपीयर किस भाषा के लेखक थे ?

(अ) हिन्दी

(ब) अंग्रेजी

(स) संस्कृत

फ. टेलीफोन का आविष्कार किसने किया ?

(अ) एडीसन ने

(ब) वाटसन ने

(स) ग्राहम बेल ने

ब. लता मंगेशकर का मु□यत: स□बन्ध किससे है ?

(अ) गायन

(ब) वादन

(स) लेखन

भ. सूर्य की रोशनी से हमें कौनसा विटामिन मिलता है ?

(अ) विटामिन बी

(ब) विटामिन सी

(स) विटामिन डी

धर्म और अध्यात्म से जुड़ी ये संत-आत्माएं कौन हैं?

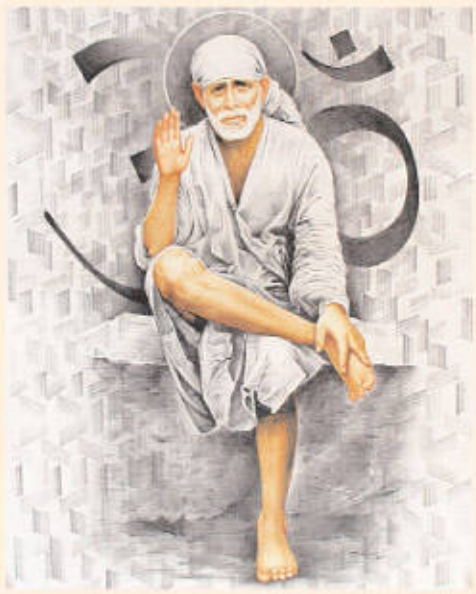

--- ---

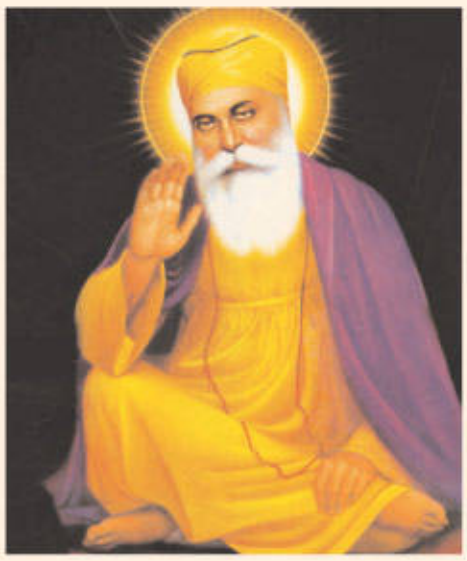

ज्ञान प्रतियोगिता– 340

नाम.....

पता.....

.....पोस्ट .....

जिला.....

राज्य.....

जीतो 1000 रुपए के नकद पुरस्कार

चयनित दस प्रविष्टियों को क- क रुपए (प्रत्येक को सौ रुपए) नकद भेजे जाएंगे।

हमारा पता **बालहंस,** राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, भ-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राजस्थान)

रंग दे

1000 रुपए के पुरस्कार

दोस्तो, इस चित्र में आपको भरने हैं, प्यारे-प्यारे रंग। चटख रंगों को भर कर, चित्र को काटकर (बालहंस कार्यालय, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर) में दिनांक 25 दिसम्बर, 2013 तक भिजवाना है। अगर आपकी उम्र 15 वर्ष या इससे कम है, तभी आप इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। अपना नाम, आयु व पूरा पता साफ-साफ लिखना। सिर्फ डाक से भेजी गई प्रविष्टियां ही स्वीकार की जाएंगी। चयनित दस प्रविष्टियों को 100-100 रुपए (प्रत्येक) नकद भेजे जाएंगे।

नाम.....

पता.....

.....

.....

पोस्ट.....

जिला व राज्य.....

दूंढो तो.....

नीचे दी गई आकृतियों को ऊपर वाले चित्र में दूंढ़ना है। इतना करके चित्र में रंग भी तो भरो, देखो कितना मजा आता है!

ई-मैन - 10

प्रस्तुतिः उन्नी कृष्णन किडनगूर

लेकिन मैं कल तक इंतजार नहीं करूंगा।
EXIT
इतनी जल्दी मत करो, दोस्त।
बसु जॉन का पीछा करता है।

अरे! लगता है, वह आदमी मेरा पीछा कर रहा है।
लगता है, उसे संदेह हो गया है। मैं उससे आगे निकल जाता हूं।
मुझे शार्टकट चलना चाहिए।
मेरी गलतफहमी थी, वह तो अपने रास्ते पर चला गया।
और जॉन तुरंत वापस आया...

अरे! अरे! तुम कौन हो? क्या चाहिए तुम्हें।
कहानियां! अच्छी कहानियां...!
क्या...? कहानियां...?
हा...! हा...! अच्छा तुम पागल हो? चल भाग यहां से!
हां मैं चला जाऊंगा...
लेकिन मुझे कहानियां चाहिए।
अब तुम मुझे हाथ-पांव चलाने के लिए उकसा रहे हो।
(अगले अंक में जारी)

कैसा लगा

मैं बालहंस का पुराना पाठक हूं। यह हम सभी की प्रिय मैगजीन है। मुझे सबसे ज्यादा □वज और कहानियां अच्छी लगती हैं। मेरे दोस्त भी इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। यह हमें ज्ञानवर्द्धक और मनोरंजक जानकारियां देती है। इस अंक मैं मुझे चित्रकथा 'राजकुमार और जादुई घोड़ा' बेहद रोचक लगी। मुझे हर अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है।

– जितेन्द्र कुमार जांगिड़,
खटून्दरा, सीकर (राज.)

बालहंस जब भी आती है,
मजेदार-प्रेरक कहानियां लाती है।
गुदगुदी हो या सैरसपाटा
इसका हर भाग मुझे भाता।
कवर पेज बहुत लुभाए
इसे पढ़कर हम बहुत ज्ञान पाएं।

– दीपिका गौड़, *अलवर (राज.)*

ज्ञान की गंगा बहाती
महीने में दो बार आती।
इसकी हर बात निराली
बच्चों को खूब लुभाती।
प्रतियोगिताएं ज्ञान बढ़ातीं
रंग दे रंगना सिखाती।
गुदगुदी सबको हंसाती
सामान्य ज्ञान कराती।
जेब खर्च नहीं बढ़ाती
कम खर्च में आ जाती।
बालहंस टीम को बधाई
कितनी सुंदर मैगजीन बनाई।

– दिलीप शिवेश, *कानपुर नगर (उ.प्र.)*

– अंकित चौधरी, नवोदय विद्यालय, सहरसा

Balhans is my favourite magazine. I have been reading it last one year. All issues are very interesting and knowledgeable for me and my friends. I like knowledge bank and general knowlege very much. In nutshell this issue was very fantastic.

-Sumit kumar, Godda (Jharkhand)

नव□बर द्वितीय, ख्वप

इनके पत्र भी मिले

- **आरिफ,** मऊ, शिवाला (उ.प्र.)
- **खूबैब,** शिशाबाड़ी (बिहार)
- **स्वाति वर्मा,** वाल्टरगंज (उ.प्र.)
- **कैलाश शर्मा,** अलवर (राज.)
- **जोगेन्द्र सिंह,** बरेली (उ.प्र.)
- **कल्याण सिंह,** बीकानेर (राज.)
- **अरिहंत सेठी,** अजमेर(राज.)
- **राजीव कुमार,** इसलामपुर (बिहार)
- **सुरेश बुंदेल,** टोंक (राज.)
- **खुशाल रामावत,** बालोतरा (राज.)
- **नीरज कुमार,** मुज□फर नगर (उ.प्र.)
- **हिमांश कुमार,** बिन्दुसार, सिवान (बिहार)
- **अमित तिवारी,** अ□बेडकर नगर (उ.प्र.)
- **सकलेन अहमद,** जहानाबाद (बिहार)
- **संजना अनन्य,** कानपुर (उ.प्र.)
- **शिवेश निगम,** कानपुर नगर (उ.प्र.)
- **वायु,** इसलामपुर (बिहार)
- **रूपेश निगम,** कानपुर नगर (उ.प्र.)

सब्सक्रिप्शन फॉर्म

बालहंस

ग्राहक का नाम.....

पता (जिस पते पर बालहंस चाहिए)-

नाम.....पता.....

.....

पोस्ट.....जिला.....राज्य.....

कितने समय के लिए- द्वैवार्षिक (480/-रुपए)..... वार्षिक (240/-रुपए) ..... अर्द्धवार्षिक (120/-रुपए).....

ड्राफ्ट संख्या .....मनीऑर्डर संख्या .....

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं। ड्राफ्ट के साथ इस फॉर्म को भी संलग्न कर भेज सकते हैं।

सब्सक्रिप्शन व वितरण संबंधी पूछताछ के लिए कृपया फोन नं. 0141-3005825 पर संपर्क करें।

राशि इस पते पर भेजें-

बालहंस (पाक्षिक)
वितरण विभाग
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान), पिन- 302 004

.....
ग्राहक का पूरा नाम व हस्ताक्षर

नोटः बालहंस पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। डाक अव्यवस्था के कारण अंक न मिल पाने की सूचना एक माह के भीतर दे देवें। अंक उपलब्ध होने पर ही दुबारा भेजा जाएगा। देर से भेजी गई आपत्तियां अस्वीकार होंगी।

PLANES
Only In Cinemas
SKIPPER
DUSTY
Rochelle
PARLE
पाइए सुनिश्चित इनाम!
विज़िट करें: www.parlefulltoss.com
20
PARLE
FullToss
Masala Munch
जितना बड़ा पैक, उतनी ऊँची उड़ान!
रु.20 और रु.10 के पैकों के पीछे दिए गए रिडेम्पशन कूपनों को काटिए और भेजिए और पाइए सुनिश्चित इनाम.
इकट्ठा करो
रिडेम्पशन कूपन को इकट्ठा करो
रु.10/- (पैक)
रिडेम्पशन कूपन को इकट्ठा करो
रु.20/- (पैक)
10 कूपन 1 सिपर बॉटल 1 लंच बॉक्स
30 कूपन 1 डीवीडी (किड्स मूवी) 1 यूएसबी पेन ड्राइव
50 कूपन 1 एमपी3 प्लेयर 1 स्कूल बैग
*PRIZES SUBJECT TO CHANGE AND AVAILABILITY. SEND THE REDEMPTION COUPONS ALONG WITH YOUR NAME, AGE, ADDRESS & CONTACT NUMBER TO: V.S. KHANDEKAR MARG, VILE PARLE EAST, MUMBAI – 400057
To win assured prizes visit: www.parlefulltoss.com • Incl. of all taxes. Rs. 5/- (NET WT.: 21g), Rs.10/- (NET WT.: 45g) & Rs. 20/- (NET WT.: 95g)
Offer valid till stocks last. • Stocks also available without this offer. • Offer valid for a limited period only. • Terms & conditions apply.

डॉ. हेमन्त बेन्दा
(एक्यूपंक्चर विशेषज्ञ)

ॐ हताश रोगियो के लिये नई आशा...

BENDA®
ACUPUNCTURE

क्या आप बीमारी से थक चुके है ?
क्या आप दवा खाते खाते परेशान है ?
क्या आप जिन्दगी से हताश हो गये ?

चीनी चिकित्सा द्वारा ईलाज

नस दबने से उत्पन्न रोगों में
90% सफल परिणाम।
डॉ. बेन्दा
द्वारा बिना दवा,
बिना ऑपरेशन के प्राकृतिक
ढंग से रोगी स्वस्थ हुये।

कमर दर्द (स्लिप डिस्क), गर्दन दर्द
घुटना दर्द, साईटिका (कमर से पंजे तक दर्द)
आदि का ईलाज सम्भव।

- श्वास रोग (दमा)
- एड़ी व कलाई में दर्द
- लकवा (चेहरे व हाथ पांव का)
- गठिया (जोड़ो में दर्द)
- टेनिस एल्बो • एलर्जिक जुकाम
- ट्राईजेमिनल न्यूरालजिया
- सरदर्द (माईग्रेन)
- कंधे व कुल्हे की जकड़न व दर्द
- नशा मुक्ति
- लिखते समय हाथ कांपना (पार्किन्शन)
- बहरापन (कान में आवाज आना)
- रीढ़ की हड्डी का टेढ़ापन
- गर्दन में जकड़न/चक्कर आना
- पैरो में सुन्नता व दर्द
- मोटापा घटायें, हाईट बढ़ायें

सेरेब्रल पाल्सी से ग्रस्त बच्चा ईलाज के बाद पूर्ण स्वस्थ

घुड़ाराम : उम्र 6 वर्ष
निवासी : सिरगरी, बाड़मेर

– आपका बच्चा –
सेरेब्रल पॉल्सी, डाउन सिंड्रोम, मंगोलिज्म

आदि रोगों से बच्चा ग्रस्त है तो तुरन्त सम्पर्क करें। बच्चे के हाथ पैर व गर्दन पर नियन्त्रण नहीं, मुंह से लार गिरना, शारीरिक मानसिक विकास धीरे धीरे होना, मंद बुद्धि, एड़ी उठाकर चलना। एक हाथ या एक पैर काम नहीं करता, पढ़ाई में कमजोर, तुतलाना अत्यधिक गुस्सा करना, बिस्तर गिला करना आदि का ईलाज।

सेरेब्रल पॉल्सी ऐसी भयावह बीमारी है जिसमें बच्चे को ताउम्र अपाहिज की जिन्दगी बितानी पड़ती है। सही समय पर यदि इस रोग से ग्रसत बच्चे का ईलाज एक्यूपंक्चर पद्धति से करवाया जाए तो इस बीमारी से मुक्ति मिल सकती है एवं बच्चा आसान जिन्दगी जी सकता है। बच्चे की उम्र जितनी कम होगी बच्चे के ठीक होने की उतनी ही ज्यादा संभावना होगी। ऐसे बच्चों का लक्षणों के आधार पर एक्यूपंक्चर पद्धति से लम्बे समय तक ईलाज करवाना पड़ता है। विश्व में एक्यूपंक्चर चिकित्सा वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति है जिसमें सेरेब्रल पॉल्सी, डाउन सिंड्रोम, मंगोलिज्म ठीक हो सकती है। बशर्ते ईलाज पूरा लिया हो। बेन्दा एक्यूपंक्चर सेन्टर में इस बीमारी से ग्रस्त कई बच्चे स्वस्थ होकर अपनी सामान्य जिन्दगी जी रहे है।

वर्षों पुराना विश्वसनीय चिकित्सा केन्द्र

बेन्दा एक्यूपंक्चर & स्लिमिंग सेन्टर

बोम्बे मोटर्स सर्कल, 11वीं चौपासनी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
फोन : 0291-2648757, 9414295270 समय : सुबह 9 से 2 एवं सायं 5 से 7
E-mail : dr.hbenda@gmail.com Website : acupuncture.co.in

Parikrama

स्वत्वाधिकारी राजस्थान पत्रिका प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक व प्रकाशकः रघुनाथ सिंह द्वारा राजस्थान पत्रिका प्रा. लि., केसरगढ़, जे.एल.एन. मार्ग/5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं. 73-74, रीको औद्योगिक क्षेत्र, झोटवाड़ा, जयपुर (राज.) से मुद्रित। आर.एन.आई. नं. 46292/86, सम्पादकः आनन्द प्रकाश जोशी